आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अक्टूबर, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अक्टूबर, 2016 ★ आश्विन, 2073

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

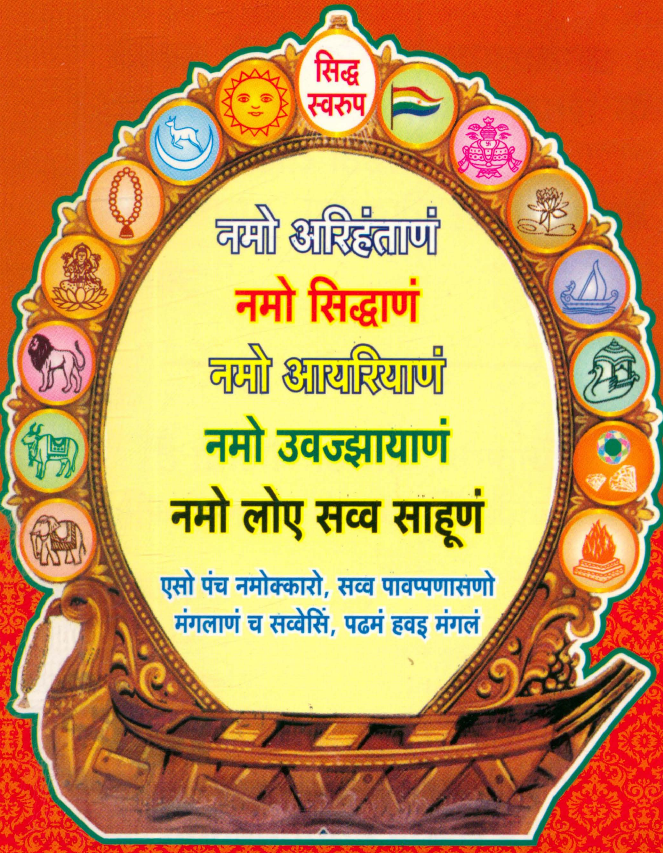

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SRI MAHAVI... ...DRA

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सो देवलोगसरिसे,
अंतेउरवरगओ वरे भोए।
भुंजित्त नमी राया,
बुद्धो भोगे परिच्चयई।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.3

सुरलोकसदृश वर भोगों का,
अन्त:पुर में उपभोग किया।
कर भोग बुद्ध नमिराजा ने,
मन से भोगों का त्याग किया।।

अक्टूबर, 2016
वीर निर्वाण संवत्, 2542
आश्विन, 2073

वर्ष 74 अंक 10

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	अभ्युदय एवं निःश्रेयस	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-सम्पादक	9
विचार-वारिधि-	चारित्र से पूजा	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	गुणियों से सीखें गुण	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	11
	करें आत्म-उत्थान	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	14
	उत्तम क्षमा धर्म का स्वरूप	-श्री उदयमुनिजी महाराज	17
	मानव सेवा	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	58
संगोष्ठी-प्रस्तुति-	सूत्रकृतांग में मानवजीवन का साध्य	-प्रो. सागरमल जैन	19
	सूत्रकृतांग में परमतानुसारी आत्म-स्वरूप की मीमांसा (2)	-प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन	23
	सूत्रकृतांग और वर्तमान युगीन समस्याओं का समाधान	-डॉ. सुषमा सिंघवी	35
अध्यात्म -	भावना योग : आत्म-विशुद्धि का सर्वोत्तम साधन	-श्री दुलीचन्द जैन	51
काव्य -	वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (23)	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	55
युवा-स्तम्भ -	सफलता का सूत्र : समय प्रबन्धन	-प्रो. सुमेरचन्द जैन	59
नारी-स्तम्भ-	नारी स्वतन्त्रता, नारी सम्मान : एक चिन्तन	-श्री अरूण मेहता	63
धारावाहिक-	लग्न की वेला (22)	-आचार्य श्री उमेशमुनिजी 'अणु'	66
अंग्रेजी-स्तम्भ-	**Jainism And It's Teachings**	-*Sh. Lakshay Mandot*	71
बाल-स्तम्भ -	अन्तर क्या?	-श्री ज्ञानमुनिजी म.सा.	73
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	76
कविता/गीत-	दया-करुणा	-ब्रह्मचारिणी चन्द्रप्रभाजी	13
	जीवन बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	16
	आत्मा और कर्म	-श्री कैलाशराज सिंघवी	22
	मन के विचारों को, मैला न कीजिये	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	78
विचार-	प्रवचनों से संकलित शब्दावली	-श्री अनिलकुमार जैन	18
	भोग और योग	-आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी महाराज	50
	चिन्तन की मनोभूमि	-श्री सम्पतराज चौधरी	72
परिणाम-	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड	-संकलित	79
पर्युषण-रिपोर्ट-	स्वाध्याय संघ, जोधपुर	-संकलित	81
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	89
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	115

सम्पादकीय

अभ्युदय एवं निःश्रेयस

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

प्रत्येक मनुष्य अपना अभ्युदय चाहता है। अभ्युदय का तात्पर्य है विकास अथवा उन्नति। अनादि काल से ही मनुष्य में अभ्युदय की इच्छा दृष्टिगोचर होती है। यह मनुष्य की एक स्वाभाविक इच्छा है। मनुष्य चाहता है कि उसका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहे, मानसिक विकास हो एवं बौद्धिक प्रगति हो। वह चाहता है कि उसके पास पर्याप्त धन हो, सुख-सुविधा के साधन हों, समय पर पदोन्नति हो, उद्योग-व्यापार में अभिवृद्धि हो,नौकर-चाकर हों तथा सब ओर उसकी यश-कीर्ति व्याप्त हो। प्रगति की यह निरन्तरता अभ्युदय का एक लौकिक रूप है। एवंविध एक लौकिक अभ्युदय के होने पर दूसरे लौकिक अभ्युदय की कामना उत्पन्न हो जाती है तथा अभ्युदय की निरन्तरता में व्यक्ति सुख का अनुभव करता है।

धर्म को भी अभ्युदय का साधन माना गया है। कणाद के वैशेषिक सूत्र में धर्म का लक्षण देते हुए कहा गया है- **यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः**। अर्थात् जिससे अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि होती है वह धर्म है। निःश्रेयस का तात्पर्य है- जिससे बढ़कर कोई श्रेयस्कर न हो (**नितरां श्रेयसम् निः श्रेयसम्**।) अर्थात् परमकल्याण ही निःश्रेयस है जो मोक्ष या निर्वाण का भी वाचक है। तात्पर्य यह है कि जिससे इहलोक में अभ्युदय होता है तथा अन्त में मोक्ष की प्राप्ति होती है वह धर्म है। यहाँ पर विचारणीय विषय यह है कि मनुष्य निःश्रेयस के प्रति उतना आकृष्ट नहीं है, जितना अभ्युदय के प्रति। वह तात्कालिक उन्नति का पक्षधर है, किन्तु शाश्वत दुःख-मुक्ति के प्रति उसके मन में उतनी रुचि नहीं है।

प्रायः संसार में रहते हुए पद, पैसा, प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ति को अभ्युदय माना जाता है, किन्तु वास्तविक अभ्युदय मनुष्य की दृष्टि का सम्यक् होना है। इस अभ्युदय के पश्चात् वह निःश्रेयस की ओर निश्चित रूप से गमन करता है। वैशेषिक सूत्र की चन्द्रानन्दवृत्ति में अभ्युदय का अर्थ इस प्रकार किया गया है- **अभ्युदय ब्रह्मादिलोकेष्विष्टशरीरप्राप्तिर-नर्थोपरमश्च**। अर्थात् ब्रह्मादिलोक में अभीष्ट शरीर की प्राप्ति होना एवं अनर्थ (पाप) से विराम होना अभ्युदय है। यह परिभाषा स्पष्ट करती है कि मनुष्य का आत्मिक विकास ही अभ्युदय का सूचक है। बाह्य योगक्षेम को अभ्युदय समझना पारमार्थिक दृष्टि से भ्रांति है। व्यावहारिक रूप में उसे अभ्युदय मान लिया जाता है। इस प्रकार अभ्युदय वह है जिससे मनुष्य अपनी दृष्टि को तो निर्मल बनाता ही है, आत्मिक विकारों पर विजय के मार्ग में भी आगे बढ़ता है। इस अभ्युदय को हम जैन शब्दावली में पुण्य का प्रबल उदय कह सकते हैं। पुण्य के

कारण ही एकेन्द्रिय जीव द्वीन्द्रिय बनता है, द्वीन्द्रिय जीव त्रीन्द्रिय बनता है, त्रीन्द्रिय जीव चतुरिन्द्रय बनता है एवं चतुरिन्द्रिय जीव पंचेन्द्रिय बनता है। यह जीव का निरन्तर अभ्युदय है। अभ्युदय के कारण ही मनुष्य शरीर की प्राप्ति होती है, जीव स्वर्ग आदि में गमन करता है, उसे सम्यक् दर्शन की प्राप्ति होती है। मनुष्य का जितना आत्मिक विकास होता है उतना ही उसका अभ्युदय होता जाता है। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक स्वस्थता का होना भी अभ्युदय ही कहा जाएगा। ऐसा अभ्युदय निःश्रेयस में सहायक हो सकता है, किन्तु रूप, बल, पद, वित्त, प्रतिष्ठा आदि लौकिक अभ्युदय में जो आसक्त हो जाता है, मद करने लगता है, उसके निःश्रेयस का पथ अवरुद्ध हो जाता है।

उपनिषद् वाङ्मय में अमृतत्व की प्राप्ति का प्रतिपादन है। यह अमृतत्व मोक्ष का ही सूचक है। क्योंकि उसे प्राप्त होने के पश्चात् जन्म-मरण की परम्परा समाप्त हो जाती है। वहाँ सकाम कर्म की अपेक्षा निष्काम कर्म को महत्त्व दिया गया है। फल की इच्छा से कार्य करना सकाम कर्म है तथा फल की अनासक्ति से कार्य करना निष्काम कर्म है। वेद में यद्यपि सकाम कर्म का भी प्रतिपादन है। उदाहरण के लिए वहाँ परिवार, कृषि, पशु सम्पदा एवं विविध प्रकार की धन-सम्पदा हेतु वेद मंत्रों में प्रार्थना की गई है। ब्राह्मण ग्रंथों में उन वेद मंत्रों की व्याख्या करने के साथ यज्ञ का जो विधान किया गया है वह विभिन्न प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करते हुए आध्यात्मिक उन्नति को भी प्रशस्त करता है। भिन्न-भिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञ हैं, यथा- स्वर्ग की प्राप्ति के लिए अग्निहोत्र यज्ञ, पुत्र की प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ आदि। वेदों एवं ब्राह्मण ग्रंथों से उपनिषदों का प्रतिपाद्य कुछ भिन्न है। उपनिषदों में सकाम कर्म को हीन कोटि में रखा गया है तथा निष्काम कर्मयोग को महत्त्व दिया गया है। जैन एवं बौद्ध परम्परा में भी निष्काम कर्मयोग पर बल है। अर्थात् जो भी कार्य करें, उसे अनासक्त भाव से किया जाना चाहिए।

जैन परम्परा में जो अणुव्रतों एवं महाव्रतों का विधान है, वह अभ्युदय एवं निःश्रेयस का मार्ग है। इनसे कर्म के आस्रव का निरोध होता है तथा संचित कर्मों की निर्जरा होती है। दूसरे शब्दों में साधना का समस्त मार्ग अभ्युदय और निःश्रेयस का मार्ग है। उपनिषद् एवं श्रमण परम्परा के दर्शन इस बिन्दु पर एक मत दिखाई देते हैं कि प्रेय (प्रिय लगने वाले) की अपेक्षा श्रेय (कल्याणकर, हितकर) वरणीय है। कठोपनिषद् (1.2.2) में कहा गया है-

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्मेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते, प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते।।

अर्थात् मनुष्य के समक्ष श्रेय भी आता है एवं प्रेय भी आता है। धीर पुरुष इनमें भलीभांति भेद समझता है तथा प्रेय की अपेक्षा श्रेय का वरण कर लेता है। किन्तु मंद बुद्धि व्यक्ति योगक्षेम के कारण प्रेय का वरण करता है। इसका तात्पर्य है कि योगक्षेम को भी प्रेय के अन्तर्गत स्थान

दिया गया है। अप्राप्त की प्राप्ति योग तथा प्राप्त की संरक्षा क्षेम कहलाता है। जो पद, पैसा, प्रतिष्ठा अथवा भोग योग्य सामग्री प्राप्त नहीं थी, उसका प्राप्त हो जाना योग है एवं उसके प्राप्त होने पर बने रहना क्षेम है। योगक्षेम की चाह प्रत्येक संसारी मनुष्य को होती है, किन्तु निःश्रेयस स्वरूप मुक्ति का वरण करने वाले के लिए योगक्षेम की चाह भी एक अटकाव है। इसलिए भगवद्गीता (2. 45) में भी कहा है-

त्रैगुण्यविषया वेदा, निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्।।

इस श्लोक में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को निर्योगक्षेम एवं आत्मवान् होने की प्रेरणा की गई है। जो योगक्षेम की इच्छा का त्याग कर देता है, वह निर्योगक्षेम कहलाता है तथा ऐसा व्यक्ति ही आत्मवान् हो सकता है। यहाँ पर उपनिषद् और वेद की विषयवस्तु के भेद का भी स्पष्ट प्रतिपादन हुआ है। वेद जहाँ सत्त्व, रज, एवं तमोगुण को विषय करते हैं वहाँ उपनिषद् (गीता) इन गुणों की इच्छा से रहित होने की प्रेरणा करती है- **निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन!** जो त्रिगुणों से युक्त रहेगा एवं उनमें आसक्त रहेगा वह अपने को जड़ प्रकृति से पृथक् अनुभव नहीं कर सकेगा। इसलिए आत्मवान् बनना ही श्रेयस्कर है। आत्मवान् ही श्रेय का वरण करता है। जो श्रेय का वरण करता है उसका कल्याण होता है।

अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः तयोः श्रेय आददानस्य साधु, भवति हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते।। -कठोपनिषद् 1.2.1

अर्थात् श्रेय एवं प्रेय का भेद जानना आवश्यक है। ये दोनों पुरुष को आकृष्ट करते हैं, किन्तु जो श्रेय को ग्रहण करता है उसका भला होता है तथा जो प्रेय का वरण करता है उसकी हानि होती है।

जैनागम उत्तराध्ययन सूत्र में प्रेय पदार्थों एवं लौकिक अभ्युदय की वांछा से दूर करते हुए उत्तराध्ययनसूत्र (14.39) में कहा गया है-

सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वावि धणं भवे।
सव्वं पि ते अपज्जतं नेव ताणाय तं तव।।

यदि सारा जग भी तुम्हारा हो जाए अथवा सारा धन भी तुम्हारा हो जाय, तो भी वह सारा तुम्हारे लिए अपर्याप्त है, वह तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता। आज व्यक्ति समस्त संसार के धन-धान्य का स्वामी बनना चाहता है जो उत्तराध्ययन की दृष्टि में तृप्ति का साधन नहीं है। जैनागम में इस प्रकार के वाक्य अनेकत्र बिखरे पड़े है। बौद्धदर्शन में भी तृष्णा के क्षय से निर्वाण की प्राप्ति स्वीकार की गई है। वहाँ इन समस्त भोगों को अनित्य, अनात्म एवं दुःख रूप प्रतिपादित किया गया है। योगसूत्र में भी भोगों की ओर उन्मुख क्लिष्ट चित्तवृत्तियों के निरोध का प्रतिपादन है। कठोपनिषद् में नचिकता के मुख से पुत्र-पौत्र, धन्य-धान्य, हाथी-घोड़े को

श्वोभाव (नश्वर) कहकर उपेक्षित किया गया है (कठोपनिषद् 1.1.26)

संसार में कितना भी जी लिया जाए, वह अल्प ही प्रतीत होता है। इसी प्रकार संसार में कितना भी धन जुटा लिया जाए, वह सन्तुष्ट नहीं कर पाता। इसलिए उत्तराध्ययन सूत्र (4.5) में कहा गया है-**'न वित्तेण ताणं लभे पमत्ते।'** कठोपनिषद् (1.1.27) भी कहता है- **''न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः''**। अर्थात् प्रमत्त व्यक्ति धन से त्राण को प्राप्त नहीं कर सकता और धन से कभी मनुष्य को संतुष्ट नहीं किया जा सकता। बृहदारण्यकोपनिषद् में भी याज्ञवल्क्य एवं मैत्रेयी में संवाद इस दृष्टि से रोचक है। वहाँ याज्ञवल्क्य अपनी पत्नी कात्यायनी एवं मैत्रेयी को सम्पत्ति का बंटवारा करना चाहते हैं। तब मैत्रेयी कहती है- भगवन्! यदि यह सारी पृथ्वी धन से परिपूर्ण हो जाए तो क्या मैं अमर हो जाऊँगी? इस पर याज्ञवल्क्य कहते हैं- नहीं, भोग सामग्रियों अथवा उपकरणों से सम्पन्न व्यक्तियों का जैसा जीवन रहता है वैसा ही तुम्हारा हो जाएगा। धन से अमृतत्व की आशा नहीं की जा सकती। उत्तराध्ययन (4.6) में भी कहा गया है-

थावरं जंगमं चेव, धणं धण्णं उवक्खरं।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं, नालं दुक्खाउ मोयणे।।

अर्थात् कर्मों के कारण पीड़ित प्राणी को स्थावर-त्रस प्राणी, धन्य, धान्य एवं गृहोपकरण दुःख से मुक्त नहीं कर सकते।

अतः मनुष्य को निरन्तर अशुभ से शुभ की ओर, असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, हिंसा से अहिंसा की ओर बढ़ते रहना चाहिए। लौकिक अभ्युदय का अपना महत्त्व है, किन्तु उससे अधिक महत्त्व पारमार्थिक अभ्युदय का है, क्योंकि वह परम कल्याण की ओर ले जाता है। आज समाज के अभ्युदय की बात हो अथवा राष्ट्र के अभ्युदय की, सर्वत्र लौकिक अभ्युदय ही लक्ष्य में रहता है। कई बार तो पतन के मार्ग को ही अभ्युदय समझ लिया जाता है। उदाहरण के लिए श्रमशीलता जहाँ लौकिक अभ्युदय का साधन है वहाँ लोग श्रमरहित होने को अपना अभ्युदय मानते हैं। राष्ट्र के स्तर पर लोगों की योग्यता का विकास न कर बिना श्रम के वस्तुओं एवं धन का वितरण निरन्तर किया जाना श्रेयकारी नहीं हो सकता। उससे लोगों का अभ्युदय होने की अपेक्षा पतन ही अधिक सम्भव है। लोग अकर्मण्य हों, परमुखापेक्षी हों, पराधीन हों तो ऐसी योजनाएँ अभ्युदयकारी नहीं कही जा सकतीं।

मनुष्य की चेतना शक्ति, निर्णय क्षमता, शुभ संकल्प शक्ति एवं शारीरिक स्वास्थ्य का विकास करने वाली योजनाएँ तो अभ्युदयकारी हो सकती हैं, किन्तु इन्हें कुंठित करने वाली, किन्तु बाहर से प्रिय लगने वाली योजनाएँ पतन की ओर ले जाने वाली होती हैं। उनसे किसी का अभ्युदय सम्भव नहीं है। मनुष्य का अभ्युदय उसकी योग्यता के विकास एवं सही सोच से होता है। ऐसा होने पर व्यक्ति संग्रह की अपेक्षा वितरण को, संकीर्णता की अपेक्षा उदारता को, नकारात्मक सोच की अपेक्षा सकारात्मक सोच को, अभाव की अपेक्षा अनासक्ति को महत्त्व देता है। ❖

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

गंथं विहाय इह सिक्खमाणो, उट्ठाय सुबंभचेरं वसेज्जा।
ओवायकारी विणयं सुसिक्खे, जं छेए विप्पमादं न कुज्जा।।

-सूत्रकृतांग सूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, अध्ययन 14, गाथा 1

अर्थ- ग्रन्थ (भीतरी गाँठ) का त्याग कर शिक्षा ग्रहण करता हुआ साधक तत्पर होकर भली प्रकार ब्रह्मचर्य में निवास करे। (मोक्ष) उपाय करने वाला शिष्य विनय का प्रशिक्षण ले। (अथवा नम्र व्यवहार करने वाला साधक आचार की शिक्षा ग्रहण करे।) इस प्रकार जो साधक कुशल हो जाता है वह प्रमाद न करे।

विवेचन- सूत्रकृतांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध के चौदहवें अध्ययन का नाम 'ग्रन्थ' है। ग्रन्थ का अर्थ है गाँठ अथवा परिग्रह। साधक जब प्रव्रज्या अंगीकार करता है तब वह बाह्य एवं आभ्यन्तर परिग्रह रूप ग्रन्थि का त्याग करता है। बाह्य परिग्रह का त्याग उसी समय हो जाता है, किन्तु आभ्यन्तर परिग्रह का त्याग करने के लिए उसकी मानसिक तैयारी होती है। भीतर की गाँठ या ग्रन्थि को छोड़ने का एक अभिप्राय यह है कि वह सरल चित्त हो जाता है। सरल चित्त होने पर ही धर्म ठहरता है। ऐसा व्यक्ति निरन्तर गुरु, आचार्य आदि से कुछ न कुछ सीखता रहता है। वह माया से रहित होकर विनम्रता को जीवन में अपनाकर तथा गुणग्राहक दृष्टि रखकर निरन्तर सीखने की भावना एवं प्रक्रिया से गुजरता है। वह तत्पर होकर सम्यक् प्रकार से ब्रह्मचर्य में रहता है। यहाँ ब्रह्मचर्य शब्द का अभिप्राय उस संयमी जीवन से है, जो साधु के द्वारा अंगीकार किया जाता है। वह साधक विनम्रतापूर्वक आचरण की भली भाँति शिक्षा ग्रहण करता है। धीरे-धीरे वह गुरु के समीप रहता हुआ ज्ञान एवं आचरण में निष्णात हो जाता है। आगम की गाथा कह रही है कि ऐसा साधक जीवन में प्रमाद का सेवन न करे, क्योंकि प्रमाद पतनकारी है।

इस गाथा में नवदीक्षित साधु के जीवन के विकास की एक रूपरेखा दी गई है। सर्वप्रथम दीक्षार्थी साधक अपनी भीतरी ग्रंथि का त्याग करता है एवं चित्त को सरल बनाता है, उसके अनन्तर वह गुरु के समीप रहता हुआ सूत्र आदि की शिक्षा प्राप्त करता है। वह तत्पर होकर ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ संयमी जीवन जीता है। इसके अनन्तर वह मोक्ष के उपाय रूप में विनम्रतापूर्वक सम्यक् आचरण की शिक्षा ग्रहण करता है। अर्थात् आचरण को शास्त्र आदि के बल पर सुदृढ़ बनाता है। जब वह ज्ञान एवं आचरण दोनों में निष्णात हो जाता है तो उसके लिए हर क्षण मूल्यवान हो जाता है। साधना को आगे बढ़ाता हुआ वह प्रमाद का भी परित्याग कर देता है।

विचार-वारिधि

चारित्र से पूजा

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- भगवान महावीर ने कहा कि देखो मानव! यदि तुमको मुक्ति का रास्ता तय करना है तो ज्ञान के साथ क्रिया भी करो। क्रिया किये बिना मुक्ति नहीं होगी, लेकिन क्रिया करो ज्ञान के साथ, अर्थात् समझकर करो।
- स्वाध्याय आपको अंधेरे में से लाकर प्रकाश में खड़ा कर देगा, लेकिन प्रकाश में मार्ग तय किया जाएगा स्वयं आपके द्वारा। आगे बढ़ने का वह काम केवल स्वाध्याय से नहीं होगा। उस काम के लिए चारित्र का पालन करना होगा। इसीलिए श्रुतधर्म के पश्चात् चारित्रधर्म बताया गया है।
- भूलना नहीं चाहिये कि जीवन एक अभिन्न-अविच्छेद्य इकाई है, जिसे धार्मिक और लौकिक अथवा पारमार्थिक और व्यावहारिक खण्डों में सर्वथा विभक्त नहीं किया जा सकता। ज्ञानी का व्यवहार परमार्थ के प्रतिकूल नहीं होता और परमार्थ भी व्यवहार का उच्छेदक नहीं होता। अतएव साधक को, चाहे वह गृहत्यागी हो या गृहस्थ हो, अपने जीवन को अखण्ड तत्त्व मानकर ही जीवन के पहलुओं के उत्कर्ष में तत्पर रहना चाहिये। जैन आचार-विधान का यही निचोड़ है।
- जब तक जीवन में चारित्र नहीं है, जब तक जीवन में संयम नहीं है, जब तक जीवन में आचरण नहीं है, तब तक यह कहना चाहिए कि हमारा वह ज्ञान, हमारी समझ और हमारे भीतर की विशेष प्रकार की जो कला है, वह कला हमारे लिए भारभूत है, बोझ रूप है।
- हमेशा याद रखिए कि आदमी की पूजा ज्ञान से नहीं हुई है, आदमी की पूजा अधिकार और स्थिति से नहीं हुई है, उसकी पूजा उसके रूप और वैभव से नहीं हुई है। उसकी पूजा यदि हुई है तो उसके चारित्र से हुई है। रावण के पास ज्ञान था, ऋद्धि थी, सम्पदा थी, लेकिन उसमें चारित्र नहीं था, इसलिए आज कोई उसका नाम रखने को तैयार नहीं है।
- प्राणी सदा कुछ न कुछ करता रहता है, कभी निष्क्रिय नहीं रहता। किन्तु उसको यह ज्ञान नहीं होता कि कौनसा कर्म करणीय है और कौनसा अकरणीय। बहुत बार वह ऐसे कर्म करता है कि अपने आपको उलझा लेता, फंसा लेता है। अतः ज्ञानियों ने कहा- विवेक करो, कुकर्म से अपना सुकर्म की ओर मोड़ बदलो।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

गुणियों से सीखें गुण

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा निमाज चातुर्मास में गुणी-अभिनन्दन समारोह के पूर्व 17 सितम्बर, 2016 को फरमाए गए प्रस्तुत प्रवचन का संकलन श्री जगदीश जी जैन द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय अनमोल वाणी में संगठन का, एकता का,समूह का भी बहुत बड़ा महत्त्व है। एक तिनका आंगन का कचरा नहीं निकाल सकता, एक डोरे (सूत) से हाथी नहीं बांधा जा सकता, एक दाने से भोजन नहीं बनाया जा सकता या यो कहें एक दाने से भूख नहीं मिटाई जा सकती, एक गांठिये से व्यापार नहीं किया जा सकता, संघे शक्तिः कलौ युगेः। वर्तमानकाल में तो संगठन में ही शक्ति बताई है। संगठन हर क्षेत्र में है- कर्मचारियों, व्यापारियों, मजदूरों, डॉक्टरों, शिक्षकों आदि का संगठन है। वैसे हर एक व्यक्ति शक्तिमान है, पर व्यक्तियों का संगठन बन जाने पर वह अधिक शक्तिशाली हो जाता है। यदि सदाचारी शीलवान, सत्यप्रेमी, गुणियों का संगठन होगा तो अमन चैन का वातावरण रहेगा। यदि संगठन का नेतृत्व असामाजिक तत्त्वों के हाथों में चला गया तो अशांति का वातावरण बन जायेगा। न वे खुद चैन से रहेंगे न ही दूसरों को चैन की सांस लेने देंगे। दीपचंद गार्डी रोजाना एक करोड़ का दान देते। क्या वे प्रारम्भ से ही इतना दान दिया करते थे? पहले उन्होंने अपनी आमदनी के अनुसार दान देना प्रारम्भ किया होगा। शुरुआत में यह आंकडा एक अंक वाला होगा फिर ज्यों-ज्यों पूंजी बढ़ती गई, दान का दायरा भी दो अंकों में, तीन अंकों में, चार अंकों में होते होते करोड़ तक पहुँचा। जैसे गार्डी जी ने दान देने के गुण को अर्जन के साथ-साथ विकसित किया, इसी तरह एक-एक गुण को देखकर उसकी महिमा को समझते हुए गुण को अंगीकार करने की मानसिकता बनायें। अहिंसक, अपरिग्रही संतों को देखा ही नहीं, तो गुणों का वर्णन कैसे कर सकोगे? संतों का संयमी जीवन देखकर आप प्रशंसा करते नहीं अघाते, पर मैं पूछता हूँ कि आपमें से कितने ऐसे हैं जो महाव्रतियों के संसर्ग से अणुव्रती, देशव्रती, बारहव्रती बने हैं? गुणियों को देखकर कितना आगे बढ़े हैं?

जिसकी जैसी चाहना होती है, वह उसी तरह के लोगों की प्रशंसा करता है। गरीब, अमीर बनना चाहता है, वह अमीर की प्रशंसा करेगा। मूर्ख ज्ञानी बनना चाहता है, वह ज्ञानियों की प्रशंसा करेगा। गुण ग्रहण की भावना वाला 'गुणिषु प्रमोदम्' की अनुपालना में

गुणियों की प्रशंसा करेगा। क्योंकि आपको उनको पाने की इच्छा नहीं हुई है। मिथ्यात्वी तो भगवान को भी देखता है तो वहाँ भी अवगुण निकालता है। माँ को अपना अंगजात प्रिय लगता है, चाहे वह वर्ण, शक्ल से कैसा भी हो। एक माँ को दूसरे का गोरा बेटा दिखाते हुए पूछा- यह कैसा है? माँ ने कहा- इसके पीलिया हो रहा है। फिर उसके काले वर्ण वाले बच्चे के बारे में पूछने पर शान से बताया- यह तो किशन (कृष्ण) है। वासुदेव श्री कृष्ण ने दुर्योधन व युधिष्ठिर को बुलाकर कहा- ये दो पन्ने लीजिये- द्वारका में रहने वाले अवगुणी-गुणियों की सूची बनाकर लाइये। दुर्योधन को गुणियों की व युधिष्ठिर को अवगुणियों की सूची बनानी थी। द्वारिका के चारों तरफ चक्कर लगाकर दोनों आ गये। दोनों ने अपने-अपने खाली पन्ने श्री कृष्ण की सेवा में रख दिये। श्री कृष्ण ने कोई भी नाम न होने से विस्मय से पूछ लिया- क्या मेरी द्वारिका नगरी खाली है? पर वास्तविकता यह है- जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि। युधिष्ठिर की दृष्टि गुणदृष्टि थी। जिसे भी वे देखते उसमें कोई न कोई गुण रहा हुआ था। उनकी दृष्टि में कोई भी व्यक्ति गुणविहीन नहीं था, इस कारण उनका पृष्ठ खाली था। जबकि दुर्योधन की दृष्टि में दोषदृष्टि थी, जिसे भी वे देखते, उसमें कोई न कोई अवगुण नज़र आता। उनकी दृष्टि में हर व्यक्ति दुर्गुणी था। इस कारण (दोष दृष्टि) गुणियों से रहित नगरी होने से उनका पृष्ठ भी खाली था। गरीब व्यक्ति यदि मिठाई खाता हुआ दिखाई पड़े तो कहने वाले मिल जायेंगे- कहीं से मांग कर लाया होगा। और यदि सेठजी भूंगडे खा रहे हों तो कहेंगे शौक से खा रहे हैं। क्योंकि गरीब और अमीर को देख वैसी ही दृष्टि (सोच) बनी हुई है।

गुण भी निर्गुणी में जाकर अवगुण बन जाता है। नदी का बहता पानी मीठा (गुण) था, पर वही पानी जब समुद्र में मिल जाता है तो संगति से पहचान नष्ट हो जाती है और मीठा रहा पानी खारा लगने लगता है। जन्म से अच्छाई किसी में नहीं होती, शनैःशनैः गुण ग्रहण कर विकसित किये जाते हैं।

''अवगुण छोड़ो, गुणों का अब ज्ञान कर लो।
धीरे-धीरे अपने को गुणवान कर लो।।''

बालक जन्म लेते ही चलना नहीं सीखता, ज्ञान नहीं सीखता। जैसे नदी पर्वत से एक धारा के रूप में निकलती है, पर ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती जाती है, अनेक स्रोतों का आगमन होता रहता है, अनेकानेक धाराओं के सम्मिलन से नदी का आकार विस्तृत हो जाता है। इसी तरह की वृत्ति यदि बालक की होगी तो सुविज्ञ, गुणज्ञ बनते देर नहीं लगेगी। ज्ञान हर जगह उपलब्ध है, जिसमें ग्रहण करने की जैसी क्षमता है, वह ग्रहण कर आगे बढ़ा ही है, वहाँ यह बात आड़े नहीं आती कि यहाँ संत अच्छे नहीं कम ज्ञान वाले हैं। दो परिवारों में

शादी पर एक ने मण भर मोती दिये, दूसरे ने मण भर मूंग दिये। पर दिये दोनों ने हैं। अपनी-अपनी हैसियत अनुसार देने से प्रसन्न हैं। आपको ज्ञान अच्छा लगता है, तो एक गाथा रोजाना याद कर ज्ञानी बन सकते हैं। 'मा रुष-मा तुष'- इन शब्दों को जीवन में आचरित कर आप जिन के गुणों का वर्णन कर रहे हो, उन जैसे बन सकते हो। आपकी भावना क्या है- सेवा करने वालों से भी आप कुछ सीख सकते हैं। सम्मान करते-करते भाव आये कि मेरा जीवन भी इन जैसा ही बने। मानव का सबसे पहला धर्म देना है। चाहे वह एक पैसे का दानी हो या एक करोड़ का, दोनों दानी ही कहलायेंगे। आपके पास एक रोटी है तो पाव रोटी ही दो। दुर्भागी को देखकर मुख मत मोड़ना। मांगने वाला शिक्षा देने आया है कि मैंने पहले होते हुए भी नहीं दिया, इस कारण इस भव में मांगना पड़ रहा है। यदि आप होते हुए नहीं दोगे तो आपको भी मेरी तरह मांगना पड़ेगा। देने वाला शालिभद्र बनता है। आप सौ रुपये कमाते हो तो एक रुपया ही दान दो, पर देओ जरूर।

पूनिया श्रावक की आय सीमित है फिर भी दोनों पति-पत्नी बारी-बारी से एकांतर एक आगत को भोजन करवाने की भावना भाते हैं। आप भी ऐसी भावना रखिये। आप नहीं कर सकते तो दूसरों को आगे बढ़ाइये। आज राजकंवरजी भण्डारी को याद कर रहा हूँ। माँ ने अपने बेटे अरूण से कहा- गुरुदेव अहमदाबाद में पधारे हैं, प्रतिक्रमण सीख एवं कुछ तो त्याग कर और अरुणजी ने मासक्षपण करके भक्ति की। वह भक्ति हर वर्ष गतिमान रही। इस वर्ष आप 72 दिवसीय उग्र तपस्या में पुरुषार्थ कर रहे हैं। आपको भी जो गुण अच्छा लगता है- वही ग्रहण करें। इस जीव ने गुरु को, भगवान को, गुणियों को देखा पर ग्रहण नहीं किया। अतः शून्य ही रह गये, कोरे रह गये। अब तो संभलना है, आपको जो गुण अच्छा लगता है, वही धारण करें। ज्ञानी, शीलवान, सत्यवादी पहले दिन से उच्च कुल में जन्म लेने से बने हैं। लेकिन इस पथ पर शक्ति के अनुसार आगे चरण बढ़ाने से ही गुणी के विरुद से विभूषित होंगे, ऐसी मंगल भावना है।

दया-करुणा

ब्रह्मचारिणी चन्द्रप्रभाजी

बड़े-बड़े ऋषिराज जो, जग में हुए प्रसिद्ध।
जीव जगत पर कर दया, बने जगत में सिद्ध।।
दया होवे ऐसी सदा, करुणा उर प्रगटाय।
पूर्ण करो दायित्व निज, निज में ही रम जाय।।
भूल-चूक को माफ कर, बढ़ो लक्ष्य की ओर।
मंजिल चरणा चूम ले, पाओ भव का छोर।।

-जयपुर (राज.)

प्रवचन

करें आत्म-उत्थान

संकलन : श्री जगदीश जैन

निमाज में फरमाए गए आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं सन्तप्रवरों के प्रवचनों से श्री जगदीशजी जैन द्वारा संकलित वाक्य।-सम्पादक

- मन दृढ़ होने पर ही मानव नियम पालन में आगे बढ़ता है। हिंसा न करने का संकल्प शुभ संकल्प है। जहाँ हिंसा होती है, विराधना होती है, असाता पहुँचती है वह अशुभ संकल्प है। अशुभ संकल्पों से रावण का सब कुछ नष्ट हो गया। अतः शुभ संकल्पों का ही चिंतन करें। श्रद्धा का दीप जिसके अंतर में प्रदीप्त हो जाता है वह संसार में अर्द्धपरावर्तन काल से अधिक नहीं भटकता। संसारी जीव मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय एवं अशुभ योग- इन पाँच कारणों से विभाव में आकर भटकता है। जन्म-जन्म तक भटकाने वाला मिथ्यात्व है। मिथ्यात्व का द्वार अपने को पराया मानना और पराये को अपना मानना है।
- चारित्र की ओर चरण बढ़ाने वाला ही मुक्ति का वरण करता है। नारकी का जीव दुःखों से दीन है, देव सुखों में लीन हैं, तिर्यंच का जीव विवेकहीन है मात्र मानव का जीव ही प्रवीण है। **'समयाए समणो होइ'** समता से ही श्रमण होता है। संत का वेश सादा है पर पावरफुल है। साधु जीवन (चारित्र) की क्रिया में निर्जरा है। आत्मगुणों का प्रकटीकरण कर चारित्र में चरण बढ़ा, इसे चारु बनायें। करुणा, दया, नीति ये सब धर्म के रूप हैं।
- आध्यात्मिक क्षेत्र में क्रोध-मान-माया-लोभ-दोष आदि अनेक रोग हैं तो अनशन-ऊनोदरी-कायक्लेश-रसपरित्याग-प्रतिसंलीनता जैसी उपचार की विधियाँ भी हैं। प्रज्ञापुरुष भगवान ने कर्मों की निर्जरा के उपचार की जो विधि बताई वह तप है। देह से ममता घटे, तप में श्रद्धा जगे, संकल्पबल मजबूत हो तब ही तप हो सकता है। **'तवे सूराअणगारा'** अणगार बारह प्रकार के तपों में से किसी न किसी तप में हमेशा रत रहता है, पुरुषार्थ करता रहता है। इसलिये उसे तप मार्ग में शूरवीर की उपमा से उपमित किया गया है। सभी 24 तीर्थंकर भी तपस्वी हुए हैं। 13 बोलों के अभिग्रह वाले भगवान महावीर को पाँच माह पच्चीस दिन बाद पारणे में तीन दिन के सूखे उड़द के बाकले मिले। शरीरधारी के लिये खाना प्रकृति है, विपरीत खाना या अधिक खाना विकृति है।

समय पर सात्त्विक खाना संस्कृति है।

- संग्रह करने वालों को नाम से पहचाना जाता है, पर दान देने वालों को आदर से चाहा जाता है। अभयदान को दानों में श्रेष्ठ बताया गया है। दान देने की भावना अंतर से उमड़ती है। यदि नोटों पर एक्सपायर डेट होती तो दान देने वाले को कहने की जरूरत ही नहीं पड़ती। ''पाया है तो दे दे प्यारे, पाय पाय फिर खोना क्या'' संग्रह किया है तो वितरण करना सीख जाओ। इस धन की गति तीन- दान, भोग और नाश। इस हार्द को समझकर दान की प्रवृत्ति अपनाइये। मोक्ष का सरलतम मार्ग 'दान' है। धन एवं वस्तु पर से अपना स्वामित्व छोड़कर दिया जाना 'दान' है। मेरे पड़ौसी, आत्मीयजन, परिवार वाले का दुःख दूर करने की भावना से देना दान है। दीन-दुःखी आपके द्वार पर आयें तो यह भावना भायें कि अन्न पुण्य से बढ़कर दूसरा कोई पुण्य नहीं है। पाये हुए व्यक्ति का फर्ज है कि वे आने वाले का दुःख दूर करने में सहायक बनें। दान, शील, तप भावना में दान एक ऐसी प्रवृत्ति है जो सहज पाली जा सकती है। दान के कई रूप हैं- अभयदान, ज्ञानदान, सुपात्रदान, अनुकम्पादान। इनमें से जहाँ आप दे सकते हैं, देने के भाव रखें।
- **'संयमः खलु जीवनं।'** संयम ही जीवन है। पूर्ण संयमी बनें या संयमासंयमी बनें, संयम में शान्ति है। संयम 17 प्रकार का बताया है। पुरखों ने अपनी आन, बान, शान को संयम से सुरक्षित रखा, इसी कारण जिनशासन जयवंत है। एक बार संयम की आराधना से 22 दण्डकों के ताले लग जाते हैं। जहाँ संयम है, वहाँ शाश्वत सुख है। संयम इस लोक में हितकारी व परलोक में गति सुधारने वाला है। 'संयम बिन जीवन की महिमा नहीं, शुद्ध भाव से करो संयम की कमाई।'' दुनियाँ की जितनी समस्याएँ हैं, पीड़ाएँ हैं, दुःख हैं तो उनका समाधान के शब्द में उत्तर है- संयम। नियंत्रण चाहे बुराइयों का हो, कषायों का हो, वह नियंत्रण भी संयम का ही रूप है। शरीर में समस्त अंग हैं, पर जीवन में नियम नहीं है, मर्यादा नहीं है तो खतरा है, यह समस्या पैदा करने वाला है। देवाणुप्पिया का विरुद भी संयम के कारण ही है। मर्यादा का पालन करने वाला सुखी है। पाप किया है तो कोई बचाने वाला नहीं। यह धर्म ही, यह मर्यादा ही, यह संयम ही बचाने वाला है। सुनने के साथ आचरण में ला शांति के अधिकारी बनें।
- जो आत्मा में सुख खोजता है वह सम्यग्दृष्टि है। जो संसार में सुख खोजता है वह मिथ्यादृष्टि है। आज का पर्व तन शुद्धि का नहीं आत्मशुद्धि का है। जड़ता के प्रभाव से यह मन निर्मल बने, इसी की तैयारी का दिन है। गर्हा, आलोचना द्वारा आत्मशुद्धि करें। जब मकान के दरवाजे खुले होते हैं तब चोर ही नहीं, कुत्ते, बिल्ली के साथ धूल आदि

कचरा आ जाता है। इसी तरह साधक के साधना करते समय दोष लगना स्वाभाविक है। यदा-कदा आत्म-स्वभाव से बाहर चले गये तो आलोचना कर प्रायश्चित ग्रहण कर यानी प्रतिक्रमण द्वारा वापस शुद्धि कर स्थित हो जायेंगे। तौबा, सॉरी आदि भूल सुधारने के लिये ही तो कहे जाने वाले शब्द हैं। जानबूझकर की जाने वाली भूल को प्रायश्चित्त द्वारा शुद्ध किये जाने का विधान है। "जरा कर्म देखकर करिये, इन कर्मों की बहुत बड़ी मार है, नहीं बचा सकेगा परमात्मा, तो औरों का क्या ऐतबार है।" बांधा हुआ कर्म भोगना पड़ता है, आलोचना नहीं करने पर ब्याज सहित चुकाना पड़ता है। अतः अपने आपकी आलोचना करना ही आत्मशुद्धि है।

- 'क्षमा का दिन आया है, प्रेरणा यह लाया है, प्रेम बढ़ाओ रे, खमत खमाओ रे।' दश धर्मों में पहला धर्म क्षमा है। हर जीवात्मा के साथ मैत्री हो। राग आत्मा को मलिन करता है, अतः राग नेगेटिव है, प्रेम पॉजीटिव है, प्रेम एवं आत्मीयता से ही क्षमा के भाव जगेंगे। लोकोत्तर पर्व निर्जरा का हेतु है। संवत्सरी भी लोकोत्तर पर्व है। आज कषायों का, आस्रवों का रेस्ट है, इसी कारण यह पर्व श्रेष्ठ, ज्येष्ठ व बेस्ट है। जो क्रोध विजय कर क्षमा करता है, उसकी आराधना सफल होती है। श्रमणों के लिये केश लुंचन, चौविहार उपवास, आलोचना, प्रतिक्रमण, क्षमापना ये पाँच कार्य करना संवत्सरी के दिन आवश्यक है। धर्म के मर्म को समझोगे तो प्रतिदिन ही संवत्सरी है। संवत्सरी से संवत्सरी तक हुए दोषों की यदि शुद्धि कर लोगे तो क्षमा पर्व मनाना सार्थक है। यह दिन अभयदाता है, पाप छोड़ने का दिन है। हर साल कोई न कोई पाप छोड़ने का संकल्प कीजिए। वीतराग वाणी आपको चलने के सारे रास्ते बता देगी, पर चलना तो आपको ही पड़ेगा। सच्चे मन से श्रवण कर पाप छोड़ने को उद्यत हों यही संवत्सरी मनाने का सार है।

जीवन बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

ज्ञानी-अज्ञानी

जो आत्मा को नहीं भूले वह ज्ञानी।
जो संसार को नहीं भूले वह अज्ञानी।।

भोग

मत कर भोगों की चाह।
यह है दुःखों की राह।।

अरमान

यही अन्तरमन का अरमान।
दृढ़ता से पालन करूँ वीर का फरमान।।

ज़हर

जड़ से जुड़कर जीवन में ज़हर मत घोल।
अब तो राग-द्वेष के बन्धन खोल।।

-संकलित

उत्तम क्षमा धर्म का स्वरूप

श्री उदयमुनिजी महाराज

क्षमावणी दिवस पर परस्पर क्षमा मांगे जाने की परम्परा है। क्षमा मांगों और क्षमा दे दो। खमत खामणा में भी यही अर्थ है। अब एक नई परम्परा चली- मिच्छामि दुक्कडं। उसका अर्थ है- मैंने जो दृष्कृत्य किया है, वह मिथ्या हो। सामायिक और प्रतिक्रमण आवश्यक के अन्तर्गत 18 पाप-प्रवृत्तियों में, व्रतों या महाव्रतों, समितियों, गुप्तियों में, ज्ञान, दर्शन, चारित्र के पालन में जो पाप-दोष, अतिचार लगे हों वे निष्फल हों। ऐसे शब्दोच्चार से तो वे निष्फल नहीं होते। यदि अन्तःकरण से, शब्द से, शब्दातीत भावों से धिक्कार हुआ हो और पुनः वैसा नहीं करूँगा ऐसा दृढ़ संकल्प (प्रत्याख्यान) करे तब वे दुष्कर्म निष्फल होते हैं, पाप, अतिचार, दोष धुल जाते हैं, आत्मा शुद्ध होती है। अतः क्षमावणी में प्रचलित हो गया- मिच्छामि दुक्कडं, जो क्षमा दो-क्षमा मांगों वाला अर्थ नहीं देता।

वस्तुतः उत्तम क्षमा दस यति धर्म में आता है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र का आराधक जो अपने आपका (आत्मा का) शुद्ध स्वभाव प्रकट करता है, उसे ही परमार्थतः धर्म कहा है। इससे स्पष्ट है कि क्षमा मांगो, क्षमा दो। यह व्यवहार में किसी को मन-वचन-काया से कटु वचन कहा, व्यवहार किया उसकी क्षमा मांगी जाती है, देने वाला उसे क्षमा दे, न दे तब भी अन्तःकरण से मांगने वाले की तो शुद्धि हो जाती है। वैर आदि का शमन हो जाता है। व्यवहार में देखा जाता है कि जिससे कभी वर्ष भर में मिले भी न हों, कोई व्यवहार भी न हुआ हो, उससे तो क्षमा मांगी जाती है परन्तु जिसके साथ वैर बांधा हुआ है, उससे क्षमा मांगते ही नहीं हैं। यह कैसा क्षमावणी पर्व मनाया?

अब थोड़ा क्षमा का पारमार्थिक, वास्तविक स्वरूप भी समझें। जिस समय ग्वाले ने महामुनि महावीर के कान में कीलें ठोकी, जिस समय प्रचण्ड क्रोधी चण्डकौशिक सर्प नें उनके पैर पर डंक लगाए, हम कहते-सुनते आए हैं कि क्षमा के सागर, करुणावतार महामुनि महावीर ने उस-उस उपसर्गदाता को क्षमा कर दिया। वस्तुतः वे महामुनि तो अपने आपके समक्ष अपने आपको अपराधी के रूप में खड़ा देखते हैं। अहो! मैंने इसे या अन्य कई, असंख्य जीवों के प्रति अपराध किया। उन्हें मारा-पीटा, दुःखी किया, मार ही डाला, शोषण किया, उसे दास बनाया, आज्ञा में रखा, अधीन बनाया आदि, उसका मुझे धिक्कार

है, धिक्कार है, पश्चात्ताप करता हूँ। यहाँ तक तो अपेक्षा से छठा प्रमत्त गुणस्थान मानें। वस्तुतः वे तो स्वयं में लीन हो गये, अप्रमत्त-आत्मस्थ एवं स्वस्थ हो गए, मात्र अपने आपके लायक हो गए, उन्हें तो वह कष्ट या उपसर्ग दाता ध्यान में ही नहीं आया। वे तो स्व के ज्ञाता, स्व के द्रष्टा, स्व में रमणता करते रहे। यही उत्तम क्षमा धर्म है। व्यवहार में दिखा वे क्षमा कर रहे हैं। ऐसी ही क्षमा सभी महामुनियों-अर्जुनमाली अणगार, गजसुकुमाल अणगार, खन्दक ऋषि, मेतार्यमुनि, स्कंधक महामुनि के एक-कम पाँच सौ शिष्यों की मानना। उपसर्ग दाताओं के उपसर्ग से दी जाने वाली तीव्र से तीव्रतम वेदना के स्थान पर स्व-संवेदन, स्वयं के ही ज्ञान गुण से स्वयं ही जानते, स्वयं के ही दर्शन गुण से स्वयं को ही देखते, स्वयं के ही सुख गुण में रमणता करते-करते कैवल्य प्रकट होते ही, सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गए। क्षमा मांगना-देना एक क्रिया है, इसका भावात्मक परिणाम कषायमुक्त बनाता है।

-अशोक विहार, दिल्ली

प्रवचनों से संकलित शब्दावली

संकलनकर्ता- श्री अनिलकुमार जैन

1. **दर्पण**– जो दर्प को बढ़ाता है।
2. **कमल**– जो कम मल में रहता है।
3. **सिद्धान्त**– जो अन्त समय तक सिद्ध होता रहे।
4. **सिद्धार्थ**– जिनके सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं।
5. **प्रवचन**– जिसमें प्रगति के वचन सुनने को मिलते हैं।
6. **मोह**– जो मोक्ष का हरण करे।
7. **मोक्ष**– जो मोह का क्षय होने पर प्राप्त हो।
8. **प्रमुख**– जिसका मुख प्रगति की ओर हो।
9. **पुरुषार्थ**– जो पुरुष को पूर्ण या प्रखर बनाता है।
10. **उदाहरण**– जो उदर में उतर जाये।
11. **राग**– पदार्थ के प्रति प्रेम।
12. **भक्ति**– परमात्मा के प्रति प्रेम।
13. **सन्तान**– जिसके अन्दर सन्त बनने की चाह हो।
14. **समझदार**– जो संकेत से समझ जाता है।
15. **दुश्मन**– जिसका मन दूषित हो।

-कोटा (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

सूत्रकृतांग में मानवजीवन का साध्य*

प्रो. सागरमल जैन

प्रत्येक साधना पद्धति लक्ष्य पूर्ण या साध्य युक्त होती है। जहाँ तक जैनदर्शन में साध्य, साधक और साधनामार्ग का प्रश्न है, उसमें आत्मा की स्व स्वभाव में परिणिति या शुद्ध स्वरूप में अवस्थिति ही साध्य है, आत्मा अपनी वर्तमान बंधन की अवस्था में साधक है, और जिससे आत्मा की अपने स्वशुद्ध स्वरूप में अवस्थिति हो, वही साधना मार्ग है। संक्षेप में कहें तो आत्मा ही साध्य है, वही साधक है और वही साधना मार्ग है। साध्य, साधक और साधना मार्ग तीनों एक-दूसरे से पृथक् नहीं है। बंधन से युक्त आत्मा साधक है और बन्धनमुक्त आत्मा ही साध्य है और बन्धन से मुक्ति का उपाय ही साधना मार्ग है। सूत्रकृतांगसूत्र के प्रारम्भ में ही कहा गया है कि-

बुज्जिज्ज तिउट्टेज्जा, बंधणं परिजाणिया।
किमाह बंधणं वीरे, किं वा जाण तिउट्टई।।

-सूत्रकृतांग, 1.1.1.1

अर्थात् बोध को प्राप्तकर आत्मा के बंधन को तोड़ो। बन्धन को जानकर ही तोड़ा जा सकता है, अतः प्रश्न किया गया कि भगवान महावीर ने बंधन किसे कहा है, और उसे किस प्रकार जानकर तोड़ा जा सकता है। यहाँ सूत्रकृतांगकार ने कहा है कि बंधन के स्वरूप को जानकर ही उसे तोड़ा जा सकता है। उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सूत्रकृतांगकार के अनुसार साध्य अर्थात् बंधन से मुक्ति प्राप्त करने के लिए बंधन क्या है, और किस कारण से है यह जानना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में बंधन से मुक्तिरूपी साध्य की प्राप्ति हेतु 'ज्ञान' आवश्यक है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि जहाँ आचारांग साध्य अर्थात् कर्म बन्धन से मुक्ति के लिए आचारमार्ग पर बल देता है, वहाँ सूत्रकृतांग ज्ञान मार्ग पर बल देता है। वह कहता है कि बंधन को जानकर अर्थात् ज्ञानपूर्वक ही तोड़ा जा सकता है। यही कारण है कि सूत्रकृतांगकार प्रथम श्रुतस्कन्ध के प्रथम अध्ययन में स्पष्ट रूप से कहता है-

संखाए जीवियं चेव कम्मणा उ तिउट्टति।-सूत्रकृतांग, 1.1.1.5

अर्थात् विवेकपूर्वक या ज्ञानपूर्वक जानकर ही उस बन्धन को तोड़ा जा सकता है और

*बैंगलोर में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की सन्निधि में 19-20 जुलाई, 2014 को आयोज्य स्वाध्याय-संगोष्ठी हेतु प्रेषित सारांश।

निर्वाण को प्राप्त किया जा सकता है। फिर भी साध्य की प्राप्ति हेतु सूत्रकृतांग का दृष्टिकोण एकांगी नहीं है, क्योंकि आगे चलकर वह 'विज्जाचरण पमोक्खो' की बात भी कहता है। अतः बंधन से मुक्ति रूपी साध्य या प्रमोक्ष क्या है? यह जानना आवश्यक है। प्रमोक्ष का अर्थ है- बन्धन से पूर्णमुक्ति। किन्तु सूत्रकृतांगकार यहाँ उस प्रमोक्ष के स्वरूप की चर्चा न कर बंधन के स्वरूप और कारण को जानने की बात कहता है। उसका बल इस बात पर है कि बंधन क्या है और क्यों है? यह जानना आवश्यक है। सूत्रकृतांगकार की दृष्टि में प्रमोक्ष अर्थात् आत्मा की अपने शुद्ध स्वरूप में अवस्थिति हमारा साध्य तो है, किन्तु जबतक बन्धन के स्वरूप और कारण का बोध नहीं होगा, हमारी मुक्ति की दिशा में आत्मिक प्रगति नहीं होगी और स्वरूपानुभूति अर्थात् स्वरूप में निमग्नता भी प्राप्त नहीं होगी। आत्मा अपने शुद्धरूप अर्थात् ज्ञाता-द्रष्टाभाव में रहे यही हमारा साध्य है- किन्तु हम रागादि भावों के कारण 'पर' में निमग्न हैं, पर से जुडे हुए हैं, जो अपना नहीं है उसे अपना मान बैठे हैं। 'मैं' और 'मेरे' का घेरा इतना व्यापक हो गया है, स्वयं ही उसके कारण बंधन में आ गये हैं। हमें किसी ने बांधा नहीं है, किन्तु अपने रागादिजन्य काषायिक भावों के कारण स्वयं ही बंधन में आ गये हैं। संसार ने या कर्मों ने हमें नहीं पकड़ा है, किन्तु हम ही संसार को या कर्मों को पकड़ बैठे हैं। अतः साधक को बंधन क्यों और कैसे है? यह बोध आवश्यक है। सूत्रकृतांगकार का जोर इसी पर है- बन्धन को जानो और जानकर उसे तोड़ो अथवा जानकर उसे कैसे तोड़ा जा सकता है, यह प्रयास करो। अतः सूत्रकृतांग के अनुसार मानव जीवन का साध्य बन्धन को जानकर तोड़ना है। बंधन को ज्ञानपूर्वक तोड़ने की यह बात यही सिद्ध करती है कि बन्धन को तोड़ने का उपाय प्रारम्भिक रूप में ज्ञान ही है। अतः यदि हमारा अपना साध्य बंधन को तोड़ना है, तो सर्वप्रथम यह जानें कि बंधन क्या और क्यों है? सूत्रकृतांगकार इस बात का उत्तर भी अत्यन्त सरल शब्दों में सूत्रकृतांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध के प्रथम अध्ययन की दूसरी गाथा में दे दिया है। वे लिखते हैं कि-

चित्तमंतमचित्तं वा परिगिज्झ किसामवि।
अन्नं वा अणुजाणाति एवं दुक्खा ण मुच्चई।।

सूत्रकृतांग, 1.1.1.2

इस गाथा का तात्पर्य है कि जिसमें चेतन अथवा अचेतन पदार्थों में अर्थात् व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति जो रंच मात्र भी आसक्ति या ममत्व की वृत्ति है, वह व्यक्ति दुःखों से मुक्त नहीं हो सकता है। दूसरे शब्दों में, हमारे बंधन और तज्जनित दुःख का मूल कारण आसक्ति या व्यक्ति और वस्तु के प्रति ममत्व का भाव है। आसक्ति या ममत्ववृत्ति ही रागभाव है अर्थात् पर को स्व मानने या अपना मानने की जो बुद्धि है, यही अज्ञान है और यही मिथ्यात्व है। 'पर' पर 'स्व' का अर्थात् अपनेपन का आरोपण ही बंधन है। दूसरे शब्दों

में 'पर' के प्रति रागभाव, आसक्ति या गृद्धता का भाव होना ही बन्धन है, यही दुःख का मूल कारण है। अतः मानव जीवन का साध्य या उद्देश्य इसी रागभाव या आसक्ति से मुक्ति है। इसे हम जैन दर्शन की दृष्टि से वीतराग दशा की प्राप्ति भी कह सकते हैं। सूत्रकृतांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध के अष्टम वीर्य नामक अध्ययन में कहा गया है-

झाणजोगं समाहट्टु कायं विउसेज्ज सव्वसो।
तितिक्खं परमं णच्चा आमोक्खाए परिव्वएज्जासि।।

-सूत्रकृतांग, 1.8.26

अर्थात् साधक ध्यानयोग में आरूढ़ होकर शरीर के प्रति भी ममत्वभाव का पूर्णतया विसर्जन कर दे। दूसरे शब्दों में, ममत्ववृत्ति या रागभाव का त्याग ही जीवन का परम साध्य है। इसे ही जैन साधना के क्षेत्र में कायोत्सर्ग कहा गया है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि जैनदर्शन शरीर छोड़ने की बात नहीं कहता, अपितु शरीर के प्रति जो ममत्वभाव, रागभाव अर्थात् आसक्ति की वृत्ति या गृद्धता का भाव है, उसे छोड़ने की बात कहता है। दूसरे शब्दों में वह शरीर छोड़ने की बात न कहकर यह कहता है कि शरीर के प्रति भी ममत्ववृत्ति नहीं रहे। क्योंकि यही ममत्ववृत्ति या रागभाव संसार-परिभ्रमण या दुःख का मूल कारण है। सूत्रकृतांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध के बारहवें अध्ययन के अंत में भी यही कहा गया है-

सद्देसु रूवेसु असज्जमाणे, गंधेसु रसेसु अदुस्समाणे।
णो जीवियं णो मरणाभिकंखी, आदाणगुत्ते वलया विमुक्के।।

इसका सारांश यही है, जो ऐन्द्रियक विषयों में गृद्ध नहीं होता है, वही वलय अर्थात् संसार से मुक्त होता है।

जैनदर्शन में बन्धन के चार प्रकार माने गये हैं- 1. प्रकृतिबंध, 2. प्रदेशबंध, 3. स्थितिबंध और 4. अनुभागबंध। बंध के पाँच कारण भी माने गये हैं- 1. मिथ्यात्व, 2. अविरति, 3. प्रमाद, 4. कषाय और 5. योग। इनमें भी मिथ्यात्व, अविरति और प्रमाद- ये तीन कारण कषायजन्य हैं। अतः मूल कारण दो ही हैं- 1. कषाय और योग। इन दोनों में भी प्रकृतिबंध और प्रदेशबंध योग के कारण होते हैं, और स्थिति और अनुभाग (तीव्रता) का बंध कषाय के कारण है अतः कषायों से मुक्त होना कर्मों के बंधन से मुक्त होना है और यही सूत्रकृतांग की साधना का चरम लक्ष्य है। वीरत्थुई नामक इसके छठे अध्याय में कहा गया है-

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा।
एताणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वति पावं ण कारवेइ।।

-सूत्रकृतांग, 1.6.26

अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ रूप चार कषाय ही आध्यात्मिक दोष हैं। इस प्रकार सूत्रकृतांगकार का साध्य कर्मबंधन से विमुक्ति है। वह विमुक्ति होती है, कषाय

मुक्ति से। आचार्य हरिभद्र ने भी कहा है- '**कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव**'। चूंकि ये कषाय राग-द्वेष जन्य हैं और द्वेष भी राग जन्य है अतः कषायमुक्ति के लिये राग से या आसक्ति से, दूसरे शब्दों में गृद्धता से मुक्ति आवश्यक है, और यही सूत्रकृतांग का परम साध्य है।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (मध्यप्रदेश)

आत्मा और कर्म

श्री कैलाशराज सिंघवी

मेरी आत्मा के दरबार में, सब कर्मों का खाता।
जो जैसी करणी करता, वैसा ही फल पाता।।
मेरी आत्मा के.......।।1।।

अशुभ कर्म जब उदय में आते, विचलित वो हो जाता।
शुभ कर्मों के उदय से, मानव धर्म भूल जाता।।
मेरी आत्मा के.......।।2।।

क्रोध मान माया लोभ से, कर्मों को प्रगाढ़ बनाता।
संवर निर्जरा से कर्मों का क्षय कर पाता।।
मेरी आत्मा के.......।।3।।

ज्यों-ज्यों क्षय कर कर्मों का, गुण श्रेणी चढ़ जाता।
ज्ञान तपस्याओं के माध्यम से, कर्मों को खपाता।।
मेरी आत्मा के.......।।4।।

योग से मुक्ति पाकर, वो अयोगी बन जाता।
अयोगी वो बन जाये तो, सिद्ध गति को पाता।।
मेरी आत्मा के.......।।5।।

जिनवाणी को आत्मसात् कर वीतराग बन जाता।
शरीर-आत्मा को भिन्न मानकर ध्यान में लीन हो जाता।।
मेरी आत्मा के.......।।6।।

अस्पृश्य गति से सिद्ध क्षेत्र में वो जाता।
लोक के अग्र भाग में शीश लगाकर,
जन्म-मरण से (परिणमन से) मुक्त आत्मा हो जाता।।
मेरी आत्मा के.......।।7।।

-जोधपुर (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

सूत्रकृतांग में परमतानुसारी आत्म-स्वरूप की मीमांसा* (2)

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

आत्मा के अकर्तृत्व सम्बन्धी मत एवं उसका खण्डन

आत्मा को अकर्ता स्वीकार करने वाला यह सिद्धान्त अकारकवाद अथवा अकर्तृत्ववाद के नाम से कहा गया है। कपिल द्वारा प्रणीत सांख्यदर्शन में आत्मा किं वा पुरुष को चेतन मानकर भी अकर्ता कहा गया है। षड्दर्शनसमुच्चय टीका में सांख्यदर्शन के सम्बन्ध में उल्लेख आता है-

अमूर्तश्चेतनो भोगी नित्यः सर्वगतोऽक्रियः।
अकर्ता निर्गुणः सूक्ष्म आत्मा कापिलदर्शने।।[31]

कापिल अर्थात् सांख्य दर्शन में आत्मा को अमूर्त, चेतन, भोक्ता, नित्य, व्यापक, निष्क्रिय, अकर्ता, निर्गुण (सत्त्व, रज एवं तमो गुण से रहित) और सूक्ष्म स्वीकार किया गया है। सूत्रकृतांग में इस मत का उल्लेख निम्नांकित गाथा में किया गया है-

कुव्वं च कारवं चेव, सव्वं कुव्वं ण विज्जति।
एवं अकारओ अप्पा, एवं ते उ पगब्भिया।।[32]

आत्मा स्वयं कोई क्रिया नहीं करता, न दूसरों से करवाता है तथा वह सभी प्रकार की क्रियाओं से रहित है। इस प्रकार आत्मा अकारक है। यह परमतावलम्बी (सांख्य दर्शन) का धृष्टतापूर्वक किया गया कथन है।

सांख्यदर्शन के अनुसार प्रकृति एवं पुरुष दो प्रमुख तत्त्व हैं। इनमें से प्रकृति में सांख्य दार्शनिक कर्तृत्व स्वीकार करते हैं तथा पुरुष को भोक्ता मानकर भी कर्ता नहीं मानते हैं। इस अकारकवाद सिद्धान्त में अन्तर्विरोध है, क्योंकि आत्मा या पुरुष चेतन है अतः वह निष्क्रिय तथा अकर्ता नहीं हो सकता। दूसरी बात यह है कि जो कर्ता नहीं होता वह फल का भोक्ता कैसे हो सकता है? सांख्य दर्शन में पुरुष को अकर्ता मानकर भी भोक्ता स्वीकार किया गया है। यह उसकी मान्यता का पारस्परिक विरोध है।

---

*बैंगलोर चातुर्मास में 19-20 जुलाई 2014 को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित स्वाध्याय-संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

खण्डन:- इस अकारकवाद के निराकरण में निर्युक्तिकार भद्रबाहु का तर्क है कि जब आत्मा को अकर्ता स्वीकार किया गया है तो उसके अकृत का वेदन कौन करता है।[33] आचार्य शीलांक ने व्याख्या करते हुए कहा है कि आत्मा के निष्क्रिय होने से उसमें वेदन क्रिया भी घटित नहीं हो सकती। यदि अकृत का भी अनुभव हो सकता है तो फिर अकृत के आगमन और कृत के नाश की आपत्ति आती है। दूसरी बात यह है कि पुरुष के व्यापक एवं नित्य होने के कारण उसमें पांच प्रकार की गति नहीं हो सकती। पांच प्रकार की गतियाँ हैं- नरक, तिर्यक्, मनुष्य, देव और मोक्ष। अकर्ता पुरुष इनमें से किसी भी गति में नहीं जा सकता है। फिर पुरुष के अकर्ता होने के कारण उसे काषाय वस्त्र धारण करने की क्या आवश्यकता है? सिर का मुण्डन करने की, दण्ड धारण करने की और भिक्षा मांगकर भोजन करने की भी क्या आवश्यकता है? पंचरात्र के नियम के अनुसार यम-नियम के अनुष्ठान की भी क्या आवश्यकता है? फिर तो सांख्यदार्शनिकों का निम्नांकित कथन व्यर्थ सिद्ध होता है- 'पंचविंशतितत्त्वज्ञो, यत्र तत्राश्रमे रत:। जटी मुण्डी शिखी वापि, मुच्यते नात्र संशय:।'[34] (सांख्य के 25 तत्त्वों को जानने वाला व्यक्ति, किसी भी आश्रम में रहने वाला हो, जटाधारी हो, अथवा मुण्डन किया हुआ, अथवा शिखा धारण करने वाला हो, वह मुक्त हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है।) आत्मा को सर्वव्यापक एवं नित्य मानने से विस्मरण का भी अभाव होता है। अत: जातिस्मरण ज्ञान आदि की क्रिया भी नहीं हो सकती। जब पुरुष को नित्य एवं निष्क्रिय स्वीकार किया गया है तो उसमें भोक्ता होने की क्रिया भी संभव नहीं है, क्योंकि वह भी एक क्रिया है।[35]

यदि पुरुष की निष्क्रियता का अभिप्राय सांख्यदर्शन में पूर्ण निष्क्रियता नहीं है, किन्तु सक्रियता की अल्पता के कारण उसे निष्क्रिय कहा गया है तो उत्तर में शीलांकाचार्य कहते हैं कि यदि किसी वृक्ष के फल नहीं है तो उससे द्रुम के अभाव की सिद्धि नहीं होती। फलवान होने पर ही किसी वृक्ष को द्रुम कहा जाए, अन्यथा अद्रुम कहा जाए, तो यह उचित नहीं है। सुप्त आदि अवस्था में आत्मा की कथञ्चित् निष्क्रियता हमें भी स्वीकार है, किन्तु इससे आत्मा को निष्क्रिय कहना उचित नहीं है। थोड़े फल वाला होने पर वृक्ष का अभाव सिद्ध करना उचित नहीं है। क्योंकि थोड़े फल वाले पनस आदि वृक्ष भी 'वृक्ष' कहे जाते हैं। इसी प्रकार आत्मा भी स्वल्प क्रिया वाला होने पर भी क्रियावान् ही कहलाता है। यदि सांख्य दार्शनिक यह मानता हो कि जिस प्रकार थोड़े धन वाला धनी नहीं कहलाता, उसी प्रकार थोड़ी क्रिया वाला भी क्रियावान् नहीं कहा जाता, तो ऐसा मानना उचित नहीं है। अल्प धन वाले पुरुष को भी जीर्ण वस्त्र वाले व्यक्ति की अपेक्षा धनी समझा जाता है।[36]

आत्मषष्ठवाद मत एवं उसका खण्डन

कुछ दार्शनिक पृथ्वी आदि पांच महाभूतों को स्वीकार करने के साथ आत्मा को छठा पदार्थ मानते हैं। ये आत्मा को शाश्वत मानते हैं। जिस प्रकार आकाश सर्वव्यापी और अमूर्त होने से शाश्वत है उसी प्रकार आत्मा भी सर्वव्यापी तथा अमूर्त होने से शाश्वत है। इनके मत का उल्लेख करते हुए सूत्रकृतांग में कहा गया है-

संति पंच महब्भूया, इहमेगेसिं आहिया।

आयछट्ठो पुणो आहु, आया लोगे य सासए।।[37]

पाँच महाभूत हैं। किन्हीं के द्वारा आत्मा को छठा पदार्थ कहा गया है। इनमें आत्मा एवं लोक (पंच महाभूत) शाश्वत हैं।

इस मत में आत्मा को पंच महाभूतों से स्वतन्त्र स्वीकार किया गया है तथा पंच महाभूतात्मक, लोक एवं आत्मा को शाश्वत अंगीकार किया गया है। आत्मा भी शाश्वत है एवं लोक भी शाश्वत है। पंच भूतों से चैतन्य की उत्पत्ति मानने वाले चार्वाक के मत में जहाँ पंचभूत एवं उनसे उत्पन्न चैतन्य अनित्य है वहाँ आत्मषष्ठवाद मत में पांचों भूतों एवं आत्मा को नित्य स्वीकार किया गया है।

मात्र पंचभूतों एवं आत्मा इन छह द्रव्यों या पदार्थों को मानने वाला वर्तमान में कोई दर्शन प्रचलित नहीं है। हाँ, वैशेषिक दर्शन में मान्य नौ द्रव्यों के अन्तर्गत इन छहों का समावेश हो जाता है। वैशेषिक दर्शन में नौ द्रव्य अंगीकृत हैं- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। इनमें पूर्वोक्त छहों द्रव्य समाविष्ट हैं। किन्तु वैशेषिक दर्शन में आत्मा एवं आकाश को पूर्णत: नित्य स्वीकार किया गया है, जबकि पृथ्वी, जल, अग्नि एवं वायु के परमाणुओं को नित्य तथा कार्यरूप पृथ्वी आदि को अनित्य माना गया है। सांख्य दर्शन के पच्चीस तत्त्वों में भी पंचभूतों का प्रकृति में तथा आत्मा का पुरुष तत्त्व में समावेश होता है। सांख्य दर्शन में पुरुष नित्य है, जबकि पृथ्वी आदि पंचभूत कार्य अथवा विकृति रूप होने से अनित्य हैं। मीमांसा दर्शन में भी पंचभूत एवं आत्मा को स्वीकृत किया गया है, किन्तु इनके अतिरिक्त भी पदार्थ स्वीकार किए गए हैं। अत: यह आत्मषष्ठवाद कोई प्राचीन मत रहा है, जिसका अभी स्वतन्त्र अस्तित्व दृग्गोचर नहीं होता है।

सूत्रकृतांग में आत्मषष्ठवाद की अन्य विशेषताओं को निम्नांकित गाथा में प्रस्तुत किया गया है-

दुहओ ते ण विणस्संति, नो य उप्पज्जए असं।

सव्वे वि सव्वहा भावा, नियतिभावमागता।।[38]

ये पांच महाभूत और आत्मा दोनों प्रकार (निर्हेतुक एवं सहेतुक) से नष्ट नहीं होते हैं। असत् पदार्थ उत्पन्न नहीं होता है। ये सभी पदार्थ सर्वथा नियतिभाव अर्थात् नित्यत्व को प्राप्त होते हैं।

इन छह पदार्थों का न निर्हेतुक विनाश होता है और न सहेतुक। बौद्ध परम्परा क्षणिकवादी है। उसमें प्रत्येक वस्तु का निर्हेतुक अर्थात् बिना कारण के विनाश स्वीकार किया जाता है। जो भी वस्तु उत्पन्न होती है वह नई वस्तु को जन्म देकर स्वत: नष्ट हो जाती है। उसके नाश में कोई अन्य हेतु नहीं होता है इसलिए इसे निर्हेतुक विनाश कहा जाता है। दूसरा विनाश सहेतुक होता है जैसे लकड़ी, डण्डे, हथौड़े या किसी अस्त्र-शस्त्र से जो विनाश किया जाता है, उसे सहेतुक विनाश कहते हैं। इस प्रकार का विनाश वस्तुवादी न्याय-वैशेषिक दर्शन स्वीकार करते हैं। आत्मषष्ठवादी के मत में इन दोनों प्रकार का विनाश नहीं होता। इनका मानना है कि जो सत् है उसका विनाश नहीं होता और जो असत् है उसे उत्पन्न नहीं किया जा सकता।[39]

बौद्धों की मान्यता है कि जो वस्तु उत्पन्न होती है वह नष्ट हो जाती है। उसकी उत्पत्ति ही उसके विनाश का हेतु होती है। अन्य कोई उसका हेतु नहीं होता है।[40]

खण्डन:- जैन दर्शन के अनुसार सभी पदार्थ नित्यानित्यात्मक हैं। द्रव्यार्थिक नय की दृष्टि से उन्हें नित्य और पर्यायार्थिक नय की दृष्टि से अनित्य प्रतिपादित किया गया है। मात्र नित्यपदार्थों को स्वीकार करने पर जगत् का व्यवहार नहीं चल सकता। आत्मा को नित्य मानने पर उसमें कर्तृत्व घटित नहीं हो सकता। जब आत्मा में कर्तृत्व ही नहीं होगा तो कर्मबन्धन का अभाव हो जायेगा तथा कर्मफल की प्राप्ति भी नहीं हो सकेगी। कोई सुखी है तो वह सुखी ही बना रहेगा और कोई दु:खी है तो वह दु:खी ही बना रहेगा। प्राणियों का जन्म-मरण भी सम्भव नहीं होगा। नरकादि चार प्रकार की गतियों की अवधारणा व्यर्थ हो जायेगी तथा मोक्ष भी सम्भव नहीं हो सकेगा। जैनदर्शन द्वारा मान्य कथंचित् नित्यता और कथंचित् अनित्यता में जन्म-मरण, पुण्य-पाप, बन्ध-मोक्ष आदि सभी पर्यायें घटित हो सकती हैं। इसी प्रकार पृथ्वी आदि पंचभूतों की नित्यता स्वीकार करने पर उनसे घट आदि वस्तुओं का निर्माण नहीं हो सकेगा। जल एवं वायु एक स्थान से दूसरे स्थान पर गति नहीं कर सकेंगे। अग्नि की लपटें ऊर्ध्व गमन नहीं कर सकेंगी तथा चारों ओर भी नहीं फैल सकेंगी।

अनात्मवाद एवं उसका खण्डन

बौद्ध दार्शनिक आत्मा का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं मानते। वे इसे पंचस्कन्धों से जन्य

स्वीकार करते हैं। वहां चेतना को प्रवाही विज्ञान के रूप में स्वीकार किया गया है। बौद्ध मत क्षणिकवादी भी है। इस मत को सूत्रकृतांग की निम्न गाथा में प्रस्तुत किया गया है-

पंच खंधे वयंतेगे, बाला उ खणजोइणो।

अन्नो अणन्नो णेवाऽऽहु, हेउयं च अहेउयं।।[41]

वस्तु को क्षणिक मानने वाले कुछ अज्ञानी पांच स्कन्ध का प्रतिपादन करते हैं। वे आत्मा को पांच स्कन्धों से न भिन्न मानते हैं और न अभिन्न। वे इसे सहेतुक अर्थात् स्कन्धों से उत्पन्न अथवा निर्हेतुक अर्थात् अनादि अनन्त भी नहीं मानते हैं।

बौद्ध मत में पांच स्कन्ध प्रतिपादित हैं- रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार। इन पांच स्कन्धों से सर्वथा भिन्न आत्मा नाम का कोई पदार्थ नहीं है। इनमें से पृथ्वी और पार्थिव रूप वस्तुएँ 'रूप-स्कन्ध' के अन्तर्गत समाविष्ट होती हैं। सुख-दुःख और उनके अभाव का अनुभव 'वेदना-स्कन्ध' के अन्तर्गत आता है। रूपज्ञान, रसज्ञान आदि का ज्ञान 'विज्ञान-स्कन्ध' के अन्तर्गत समाविष्ट होता है। घट, पट आदि संज्ञाओं का ज्ञान 'संज्ञा-स्कन्ध' से होता है। पुण्य-पाप आदि वासनाओं का समुदाय 'संस्कार-स्कन्ध' है। आत्मा यानी चेतना इन पंच स्कन्धों का समुदाय रूप ही होता है। इनसे भिन्न आत्मा नामक पदार्थ मानने में प्रमाण का अभाव है। प्रत्यक्ष एवं अनुमान दोनों प्रमाणों से आत्मा की पृथक् सिद्धि नहीं होती। चक्षु आदि इन्द्रियों से आत्मा का प्रत्यक्ष नहीं किया जा सकता तथा अनुमान प्रमाण से उसका ज्ञान करने के लिए कोई निर्दोष हेतु उपलब्ध नहीं है। बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष एवं अनुमान के अतिरिक्त कोई प्रमाण नहीं माना गया है, जिससे साध्य की सिद्धि की जा सके।[42]

यहां पर यह ध्यातव्य है कि बौद्ध दर्शन चैतन्य को स्वीकार तो करता है, किन्तु वैशेषिक आदि दर्शनों की भांति उसे नित्य नहीं मानता। यही कारण है कि बौद्ध दर्शन में निर्वाण की अवस्था में चेतना या आत्मा का प्रवाह रुक जाता है तथा वह कहीं अन्यत्र गमन नहीं करता। जिस प्रकार दीपक का निर्वाण होने पर उसकी लौ वहीं समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार निर्वाण की अवस्था में चेतना का प्रवाह वहीं समाप्त हो जाता है।[43]

एक बार निर्वाण होने के पश्चात् वह सदा के लिए हो जाता है। निर्वाण को बौद्ध परम्परा में परम सुख स्वरूप स्वीकार किया गया है- **'निब्बाणं परमं सुखं।'**[44] निर्वाण के बौद्ध दर्शन में दो प्रकार निरूपित हैं- सोपधिशेष निर्वाण और निरुपधिशेष निर्वाण। जब शरीर रहते हुए निर्वाण की प्राप्ति होती है तो उसे सोपधिशेष निर्वाण कहा गया है तथा शरीर के छूटने पर जो निर्वाण प्राप्त होता है उसे निरुपधिशेष निर्वाण कहा गया है। जैन दर्शन में

अरिहन्त की जो अवस्था है उसे सोपधिशेष निर्वाण के समान तथा सिद्ध की अवस्था को निरुपधिशेष निर्वाण की अवस्था के समकक्ष माना जा सकता है। वेदान्त दर्शन में इसे जीवन्मुक्त और विदेहमुक्त अवस्था के रूप में प्रतिपादित किया गया है। किन्तु जैन दर्शन में सिद्ध जीवों में अनन्तज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख आदि आठ गुण स्वीकार किए गए हैं, जिनका बौद्ध दर्शन में मान्य परिपूर्ण निर्वाण की अवस्था में चेतना का प्रवाह रुक जाने से अभाव हो जाता है।

बौद्धों को क्षणयोगी अर्थात् क्षणिकवादी कहा गया है। इनके अनुसार जो भी सत् है वह क्षणिक है। आकाश एवं निर्वाण को छोड़कर बौद्ध दर्शन में सभी वस्तुएँ क्षणिक अंगीकार की गई हैं। प्रत्येक वस्तु अपने समान वस्तुओं को जन्म देकर स्वयं समाप्त हो जाती है।

खण्डन:- प्राय: बौद्धों को अनात्मवादी कहा जाता है, क्योंकि वे नित्य आत्मा का अस्तित्व नहीं मानते। किन्तु आत्मा की कथंचित् नित्यता स्वीकार न की जाए तो कर्ता एवं भोक्ता की व्यवस्था गड़बड़ा जाएगी। तब कर्तृत्व किसी अन्य का होगा तथा फलभोग कोई अन्य करेगा। एकान्त क्षणिकवाद में सुख-दु:ख, पुण्य-पाप, बन्ध-मोक्ष आदि की व्यवस्था घटित नहीं हो सकती। यदि पंचस्कन्धों से भिन्न आत्मा का अस्तित्व नहीं है तो बन्धन और मोक्ष किसका होगा? कर्तृत्व और भोक्तृत्व किसमें घटित होगा? पूर्णत: चेतना या आत्मा का अस्तित्व न मानने पर पुनर्जन्म की व्यवस्था भी नहीं बन सकेगी। जबकि बौद्ध परम्परा में बुद्ध के अनेक भवों का वर्णन जातक कथाओं में प्राप्त होता है। इसलिए ऐसा कहना उचित नहीं होगा कि बौद्ध दर्शन में आत्मा या चेतना को बिल्कुल स्वीकार नहीं किया गया है। वे विज्ञानस्कन्ध को आत्मा के रूप में स्वीकार करते हैं।

पूज्य घासीलाल जी महाराज ने बौद्धों के पक्ष को प्रस्तुत करते हुए कहा है- "ननु को ब्रूते आत्मा नास्ति, अस्त्येव तु विज्ञानस्कन्धरूप आत्मा- यद्यपि आत्मापि विज्ञानरूप एव, तथापि तस्मिन्नेव विज्ञानात्मनि ज्ञानसुखादयो विद्यन्ते। ज्ञानसुखादयश्च तादृशविज्ञानात्मन एवाकार-विशेषा: ते तदात्मनि समवेता:, तत: सुखदु:खादि-फलानामुपभोगो जन्ममरणादिका सर्वाऽपि व्यवस्था च समाहिता भवति।"[45] अर्थात् बौद्ध मत में आत्मा विज्ञानरूप है। उस विज्ञान आत्मा में ज्ञान, सुख आदि रहते हैं। उस विज्ञान आत्मा में समवेत सुख दु:खादि फलों का भोग तथा जन्म-मरण आदि की व्यवस्था सम्भव होती है। किन्तु जैन दार्शनिकों ने क्षणिकवाद के आधार पर इसका खण्डन किया है। पूज्य घासीलाल जी ने खण्डन में कहा है कि जिस प्रकार घट आदि पदार्थ क्षणिक हैं उसी प्रकार बौद्धमत में आत्मा भी क्षणिक ही है। क्षणिक होने से उत्पन्न होकर वह नष्ट हो जाती है। उस विनष्ट आत्मा के द्वारा कालान्तरभावी स्वर्गादि फलों का भोग नहीं किया जा सकता।

क्योंकि अन्य क्षण में की गई क्रिया का अन्य क्षण में मिलने वाले फल के साथ अनित्य पक्ष में सम्बन्ध नहीं हो सकता। दूसरी बात यह है कि क्षणिकवाद में कृतकर्म के फल के नाश एवं अकृत कर्म के फल की प्राप्ति का प्रसंग उपस्थित होता है।[46]

चातुर्धातुकवाद एवं नियतिवाद में आत्म-चर्चा

बौद्ध दर्शन की एक मान्यता के अनुसार पृथ्वी, जल, अग्नि एवं वायु इन चार धातुओं से यह शरीर निर्मित होता है, जिसे जीव कहा जाता है।[47] बौद्धदर्शन में जीव को पुद्गल शब्द से भी अभिहित किया गया है। चार्वाक दर्शन में जहाँ इन चारों को भूत कहा गया है, वहाँ बौद्ध दर्शन में इन्हें धारण-पोषण के कारण धातु कहा गया है। बौद्धों की इस अवधारणा का खण्डन निर्युक्ति गाथा 'को वेएइ' के आधार पर करते हुए शीलांकाचार्य कहते हैं कि जिस प्रकार पाँच स्कन्धों से पृथक् आत्मा को स्वीकार न करने पर यह समस्या उत्पन्न होती है कि सुख-दुःख आदि कर्मफल का अनुभव कौन करता है, वही समस्या इस चातुर्धातुकवाद में भी उत्पन्न होती है।[48]

नियतिवाद की मान्यता है कि दुःख-सुख स्वयंकृत नहीं हैं और न अन्यकृत हैं, इनकी प्राप्ति सांगतिक है अर्थात् नियति से होती है।[49] नियतिवाद में नियति ही एक मात्र कारण है। मंखलि गोशालक के इस मत में आत्मा का स्वातन्त्र्य समाप्त हो जाता है तथा कर्म-सिद्धान्त की व्यवस्था भी ढह जाती है। इस व्यवस्था में पुरुषार्थपूर्वक दुःखों से मुक्ति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है, अतः आत्मा को ही अपने सुख-दुःख तथा बन्धन एवं मोक्ष के लिए उत्तरदायी मानना चाहिए।

उपसंहार

जैनदर्शन के अनुसार आत्मा में ज्ञान एवं दर्शन ये दो गुण प्रमुख हैं, क्योंकि इनसे ही चेतना का बोधरूप व्यापार 'उपयोग' संभव होता है। इसलिए **'उपयोगो लक्षणम्'** (तत्त्वार्थसूत्र 2.8) सूत्र के द्वारा आत्मा का लक्षण उपयोग स्वीकार किया गया है। जैन दर्शन में आत्मा को शरीर, इन्द्रिय, मन एवं बुद्धि से पृथक् प्रतिपादित किया गया है। यद्यपि आत्मा के साथ इनका कर्म के कारण घनिष्ठ सम्बन्ध है, तथापि आध्यात्मिक दृष्टि से इनसे आत्मा के शुद्ध स्वरूप को पृथक् अंगीकार किया गया है। शरीर आदि में चेतना का अनुभव हमें आत्मा के संयोग से ही होता है। इसलिए भ्रमवश कुछ दार्शनिक शरीर को ही आत्मा मान लेते हैं। यह उनका अधूरा एवं स्थूल ज्ञान है। जैनदर्शन में आत्मा की विशेषताओं को अग्रांकित गाथा में व्यक्त किया जा सकता है-

जीवो उवओगमओ, अमुत्ती कत्ता सदेहपरिमाणो।

भोत्ता संसारत्थो सिद्धो, सो विस्ससोड्ढगई।।[50]

जीव उपयोगमय है, अमूर्तिक है, कर्त्ता है तथा स्वदेहपरिमाण है। वह भोक्ता है। उसके दो प्रकार हैं- संसारस्थ एवं सिद्ध। वह स्वभावत: ऊर्ध्वगति वाला है।

'जीव' एवं 'आत्मा' शब्द के प्रयोग को लेकर कई बार मतभेद दिखाई देते हैं। किन्तु जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो इन दोनों शब्दों का प्रयोग समान अर्थ में ही हुआ है। 'अतति सततं गच्छति इति आत्मा' अर्थात् जो सदैव विभिन्न गतियों में उत्पन्न होता है, अथवा जो सदैव जानता है, वह आत्मा है। 'जीवति प्राणैरिति जीव:' अर्थात् जो इन्द्रियादि बल प्राणों के आधार पर जीता है, वह जीव है। इस प्रकार व्युत्पत्तिपरक भेद होने पर भी आगम-साहित्य में एवं तत्त्वार्थसूत्र में जीव एवं आत्मा शब्द का प्रयोग एक ही अर्थ में किया गया है। सिद्ध आत्माओं के लिए भी 'जीव' शब्द का प्रयोग इसका एक उदाहरण है।

जीव उपयोगमय है। उपयोग उसका स्वरूप है। ज्ञानादि गुणों का उपयोग ही जीव का स्वरूप बनता है। न्याय-वैशेषिक आदि दार्शनिक ज्ञान आदि गुणों को आत्मा नामक द्रव्य में आगन्तुक गुण मानते हैं तथा मोक्ष की अवस्था में इन गुणों का नाश स्वीकार करते हैं। ऐसी अवस्था में उनकी आत्मा का स्वरूप चैतन्यरहित अर्थात् जड़ हो जाता है। जैनदर्शन आत्मा का यह स्वरूप नहीं मानता। जैनदर्शन में स्वीकृत आत्मा ज्ञान एवं दर्शन से अभिन्न है। विवक्षा की दृष्टि से ज्ञानादि गुणों को कथंचित् गुण एवं आत्मा को द्रव्य कह दिया जाता है। अन्यथा ज्ञान को ही आत्मा एवं आत्मा को ही ज्ञान कहने में कोई बाधा नहीं है। इसी प्रकार दर्शन गुण आत्मा की संवेदनशीलता को व्यक्त करता है। आत्मा के ये दो आवश्यक गुण हैं, जो उसके स्वरूप का निर्धारण करते हैं तथा जड़ पदार्थों से उसे पृथक् सिद्ध करते हैं। जीव का उपयोग-लक्षण चैतन्य का सूचक है। जीव के इस लक्षण से पंचभूतवाद की मान्यता का खण्डन हो जाता है। पंचभूतवादी चार्वाक मतावलम्बी पृथ्वी आदि पांच भूतों से ही चैतन्य का अनुभव मानते हैं, जो उनकी अत्यन्त स्थूल दृष्टि का सूचक है। वे बाह्य जगत् को देखकर ही इस प्रकार की मान्यता को लेकर चले हैं, भीतर में आत्मस्वरूप का साक्षात्कार करने वाले ज्ञानी पुरुष इस सत्य को जानते हैं एवं प्रतिपादित करते हैं कि आत्मा या जीव वस्तुत: शरीर से पृथक् स्वरूप वाला है। वह अष्टविध कर्मों से आबद्ध होने के कारण औदारिक आदि शरीरों से युक्त है। विग्रह गति में वह तैजस और कार्मण शरीर से युक्त रहता है। ये शरीर उस चेतना के कारण ही चेतन बने हुए लगते हैं। इस सत्य की सिद्धि जैन आगम के विशेषावश्यक आदि भाष्यग्रंथों, टीकाओं एवं उत्तरकालीन दार्शनिक ग्रंथों में विस्तार से की गई है। पंचभूतों से पृथक् चेतन तत्त्व को स्वीकार किये बिना सन्मार्ग का एवं

सत्य का अन्वेषण संभव नहीं है।

आत्मा का दूसरा लक्षण उसका अमूर्तत्व है। उसका न कोई आकार है और न ही उसमें रूप, रस, स्पर्श आदि गुण हैं। उसे हम इन्द्रियों से नहीं जान सकते। उसका अनुभव स्वयं कर सकते हैं। उदाहरण के लिए 'मैं जानता हूँ' यह एक हमारा अनुभव है। जानने का कार्य भले ही इन्द्रिय, मन, बुद्धि आदि के माध्यम से होता हो, किन्तु फिर भी हमें यह अनुभव होता है कि ज्ञाता व्यक्ति इन्द्रिय आदि से भिन्न है। इसीलिए वह यह जानता है कि मैं ही सुनता हूँ, देखता हूँ, सूँघता हूँ, चखता हूँ, छूता हूँ, सोचता हूँ, तर्क करता हूँ आदि। तात्पर्य यह है कि इन्द्रिय, मन एवं बुद्धि से होने वाले ज्ञान का कर्ता इनसे भिन्न है। इसीलिए वह अनेक ज्ञानों का ज्ञाता स्वयं को मानता है। स्मरण, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान आदि का ज्ञाता भी वही होता है। इस प्रकार आत्मा की सिद्धि अनुमान प्रमाण से भी होती है। आगम में तो आत्मा के अस्तित्व एवं अमूर्तता के अनेक कथन प्राप्त होते हैं। आत्मा को अमूर्त स्वीकार करने के कारण लोकायतिक मत में मान्य पंचभूतवाद एवं तज्जीव-तच्छरीरवाद का खण्डन हो जाता है। क्योंकि वे जीव को मूर्त मानकर अपना मत रखते हैं। अमूर्त तत्त्व को जानने के लिए उनके पास प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अनुमान आदि कोई प्रमाण नहीं हैं।

आत्मा का तीसरा लक्षण इसका कर्ता होना है। सांख्य दार्शनिक आत्मा को अकर्ता एवं भोक्ता मानते हैं। किन्तु प्रश्न होता है कि जो अकर्ता है वह भोक्ता कैसे हो सकता है? वस्तुतः जो जैसा कर्म करता है वह उसी के अनुरूप फल भोगता है। सांख्यदर्शन में फलभोग की यह प्रक्रिया बाधित हो जाती है, क्योंकि वहाँ अकर्ता को ही भोक्ता मान लिया गया है। एक बात यह भी है कि जो अकर्ता है वह भोग की क्रिया भी कैसे कर सकता है? क्योंकि भोग की क्रिया का भी तो वह कर्त्ता कहलाएगा। सांख्यदर्शन में जड़ प्रकृति को कर्त्री माना है जो किसी भी प्रकार युक्तिसंगत नहीं है। सांख्य एवं जैनदर्शन में यह तो समानता है कि ये दोनों दर्शन आत्मा को अनेक मानते हैं, किन्तु आत्मा के कर्तृत्व एवं अकर्तृत्व को लेकर मतभेद है।

उपनिषद् एवं वेदान्त की धारणा है कि आत्मा सर्वव्यापक है तथा एक ही आत्मा के अंश रूप में अन्य जीव रहते हैं। यह धारणा भी उचित नहीं है। आत्मा सर्वव्यापक नहीं हो सकता, क्योंकि हमें सुख-दुःख आदि का वेदन शरीर पर्यन्त ही होता है। शरीर के बाहर होने वाली घटनाओं का अनुभव मन एवं संस्कारों के माध्यम से तो हो सकता है, किन्तु उसके लिए आत्मा को व्यापक मानने की आवश्यकता नहीं है। आत्मा को व्यापक मानने पर अन्य के सुख-दुःखादि का भी हमें वेदन होना चाहिए, अन्य के चोट लगने पर, या अन्य के द्वारा स्वादिष्ट पदार्थों का आस्वादन लेने पर हमें भी उसका अनुभव होना चाहिए, किन्तु

ऐसा नहीं होता है। दूसरी बात यह है कि सभी जीव स्वतन्त्र हैं, कोई किसी का अंश या अंशी नहीं है। सबको अपने-अपने कृत कर्मों के अनुसार फल की प्राप्ति होती है। बन्धनों से मुक्त होने के लिए सबको पृथक् रूप से प्रयत्न करने की आवश्यकता होती है। इसलिए जैन दर्शन में जीव को स्वदेह परिमाण स्वीकार किया गया है। जीव को सर्वव्यापक नहीं मानने एवं अनन्त मानने से एकात्मवाद की मान्यता का भी खण्डन हो जाता है।

जीव अपने कृत कर्मों का स्वयं भोक्ता है। जैनदर्शन का यह सिद्धान्त उसे अपनी प्रवृत्ति में सुधार की प्रेरणा देता है। मन, वचन एवं काया के माध्यम से हम सम्यग्दर्शन पूर्वक जो प्रवृत्ति करते हैं वह ही हमें भोक्तृत्वभाव की शृंखला से छुटकारा दिला सकती है। भोक्ता होना संसारी जीवों का लक्षण है। कर्तृत्व के अनुरूप फल-प्राप्ति स्वीकार करने के कारण जैनदर्शन नियतिवाद का भी निरसन कर देता है। जीव दो प्रकार के हैं- संसारी और सिद्ध। जो कर्म-बन्धनों से आबद्ध हैं तथा संसार में परिभ्रमण करते रहते हैं, वे संसारी जीव हैं तथा जो अष्टविध कर्मों से मुक्त हो गये हैं, वे सिद्ध जीव हैं। वे पुनः जन्म ग्रहण नहीं करते। इससे अवतारवाद की मान्यता का भी खण्डन हो जाता है।

जैनदर्शन में आत्मा नित्य भी है और अनित्य भी। वह द्रव्यार्थिक नय से नित्य है तथा पर्यायार्थिक नय से अनित्य है। अनेक भवों में जन्म लेकर भी जीव द्रव्यार्थिक नय से वही जीव बना रहता है, जबकि पर्यायार्थिक नय से वह हर भव में शरीरादि के कारण बदल जाता है। इसीलिए भगवतीसूत्र में भगवान महावीर ने जीवों को स्यात् शाश्वत एवं स्यात् अशाश्वत कहा है। अष्टविध कर्मों से मुक्त होने के लिए आत्मा के सही स्वरूप को जानना आवश्यक है और वह ज्ञान सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान के होने पर ही संभव है। इन दोनों के होने पर चारित्र अथवा आचरण में प्रगति हो सकती है। ये तीनों मिलकर मोक्ष के मार्ग कहलाते हैं। जीव के कारण औपशमिक, क्षायिक एवं क्षायोपशमिक भावों की चर्चा होती है।

जैन आगमों में सूत्रकृतांग एक महत्त्वपूर्ण आगम है, जो अहिंसा, समता, अपरिग्रह आदि के आचरण की प्रेरणा करने के साथ जीव के सही स्वरूप का बोध कराता है। संसार में अनेक मत-मतान्तरों को देखकर या सुनकर मंदबुद्धि एवं कोमल हृदय वाले लोग भटक जाया करते हैं। अतः उनको सन्मार्ग पर लाने के लिए अन्य मतों के दोषों या कमियों का ज्ञान कराना भी शास्त्रकारों का उद्देश्य होता है। उस उद्देश्य में सूत्रकृतांग एवं उसके व्याख्या-ग्रन्थों की भूमिका सराहनीय है।

संदर्भ-

31. षड्दर्शनसमुच्चय, टीका में उद्धृत, पृ.152

32. सूत्रकृतांग, 1.1.1.13

33. को वेयई अकयं? कयनासो पंचहा गई नत्थि।
देवमणुस्सगयागइं जाईसरणाइयाणं च।।
-निर्युक्तिसंग्रह, सूत्रकृतांगनिर्युक्ति, गाथा 34।

34. द्रष्टव्य, सूत्रकृतांगसूत्र, 1.1.1.14 पर शीलांकाचार्य कृत टीका, प्रथम भाग, पत्रांक 71

35. द्रष्टव्य, वही, पत्रांक 71

36. श्री सूत्रकृताङ्गसूत्र, शीलाङ्काचार्यकृत टीका, लाखा बावल, प्रथम भाग, पत्राङ्क 72

37. सूत्रकृतांग सूत्र, 1.1.1.15

38. सूत्रकृतांग सूत्र, 1.1.1.15

39. 'नासतो विद्यते भावो, ना भावो विद्यते सतः।'-भगवद्गीता, 2.26

40. जातिरेव हि भावानां, विनाशे हेतुरिष्यते।
यो जातश्च न नश्येत्, नश्येत् पश्चात्स केन सः।। -श्री सूत्रकृतांगसूत्र 1.1.1.15 पर घासीलाल जी महाराज की समयार्थबोधिनी नामक टीका में उद्धृत।

41. सूत्रकृतांग सूत्र, 1.1.1.17

42. श्री सूत्रकृतांग सूत्र, पूज्य घासीलाल कृत टीका, भाग-1, पृष्ठ 214

43. दीपो यथा निर्वृतिमभ्युपेतो नैवावनिं गच्छति नान्तरिक्षम्।
दिशं न कांचिद् विदिशं न कांचित् स्नेहक्षयात् केवलमेति शान्तिम्।।
एवं कृती निर्वृतिमभ्युपेतो नैवावनिं गच्छति नान्तरिक्षम्।
दिशं न कांचिद् विदिशं न कांचिद् क्लेशक्षयात् केवलमेति शान्तिम्।।
-सौन्दरनन्द, सर्ग 16, श्लोक 28-29

44. धम्मपद, 15.8

45. श्री सूत्रकृतांगसूत्र, 1.1.1.18, पूज्य घासीलालकृत समयार्थबोधिनी टीका, भाग प्रथम, पृ.229

46. यथा घटादयो भावाः क्षणिकाः तथा आत्मापि क्षणिक एवेति क्षणिकत्वात् उत्पद्य सद्य एव विनश्यति, ततो विनष्टेनात्मना कालान्तरभावि स्वर्गादिफलं कथमिव भोक्तुं शक्येत। क्षणरूपयोः क्रियाफलवतोः संबन्धाऽभावात्। कृतनाशाऽकृताभ्यागमदोषश्च स्यात्।-श्री सूत्रकृतांग सूत्र, 1.1.1.18, समयार्थ-बोधिनी टीका, भाग-1, पृष्ठ 230

47. (1) पुढवी आउ तेऊ य, तहा वाऊ य एगओ।
चत्तारि धाउणो रूवं, एवमाहंसु आवरे।- सूत्रकृतांग, 1.1.1.18
(2) पृथिवी धातुरापश्च धातुस्तथा तेजो वायुश्चेति, धारकत्वात्पोषकत्वाच्च धातुत्वमेषाम्, 'एगओत्ति' यद्वैते चत्वारोऽप्येकाकारपरिणतिं बिभ्रति

कायाकारतया तदा जीवव्यपदेशमश्नुवते, तथा चोचुः- ''चतुर्धातुकमिदं शरीरं, न तद्व्यतिरिक्त आत्माऽस्तीति।-श्री सूत्रकृतांगसूत्र, 1.1.1.18 पर शीलांकाचार्य कृत टीका पत्रांक 81

48. द्रष्टव्य- श्री सूत्रकृतांगसूत्र, 1.1.1.18 पर शीलांकाचार्य कृत टीका पत्रांक 81-82

49. न सयं कडं ण अन्नेहिं, वेदयन्ति पुढो जिया।
संगतियं तं तहा तेसिं, इहमेगेसिमाहियं।।- सूत्रकृतांग, 1.1.2.3

50. बृहद्द्रव्य संग्रह, 1.2

प्रयुक्त ग्रन्थ–सूची

1. आचारांगसूत्र (प्रथम श्रुतस्कन्ध)- श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, चतुर्थ संस्करण, सन् 2010
2. ईशादि नौ उपनिषद्- गीता प्रेस, गोरखपुर
3. उपनिषद्वाक्यमहाकोष (239 उपनिषदों के वाक्यों से युक्त)- संकलक- श्री गजानन शम्भु साधले, चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 1990
4. निर्युक्ति-सङ्ग्रह- भद्रबाहु, संपादक- श्री विजयजिनेन्द्रसूरीश्वर, श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला, लाखा बावल, शांतिपुरी, जामनगर (सौराष्ट्र), सन् 1989
5. भगवद्गीता- गीता प्रेस, गोरखपुर
6. राजप्रश्नीयसूत्र- युवाचार्य श्री मधुकरमुनि सम्पादित, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, सन् 1981
7. श्री सूत्रकृताङ्गसूत्रम् (भाग-एक) (निर्युक्ति, चूर्णि, शीलाङ्काचार्यकृत टीका, श्री हर्षकुलगणि रचित दीपिका एवं श्री साधुरङ्गणि कृत दीपिका व्याख्या सहित), सम्पादक- आचार्य श्री विजयजिनेन्द्रसूरीश्वर, श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला, लाखा बावल, शांतिपुरी, जामनगर (सौराष्ट्र), सन् 1992
8. श्री सूत्रकृताङ्गसूत्रम् (भाग 1 एवं 4) (श्री घासीलाल महाराज कृत समयार्थबोधिनी टीका एवं हिन्दी- गुजराती अनुवाद युक्त), श्री अ.भा.श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन शास्त्रोद्धार समिति, गुरेडिया कुवा रोड, राजकोट (सौराष्ट्र), सन् 1969 एवं 1971
9. सर्वदर्शनसंग्रह- माधवाचार्य, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण 2001
10. सूत्रकृताङ्गसूत्र (हिन्दी अनुवाद, विवेचनादि सहित), युवाचार्य श्री मधुकर मुनि सम्पादित, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, द्वितीय संस्करण 1991
11. षड्दर्शनसमुच्चय (गुणरत्नकृत टीका सहित)- हरिभद्रसूरि, सम्पादक- डॉ. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, सन् 1981

-3 K 24-25, कुड़ी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342005 (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

सूत्रकृतांग और वर्तमान युगीन समस्याओं का समाधान*

डॉ. सुषमा सिंघवी

जैन परम्परा द्वारा मान्य द्वादश अंगसूत्रों में 'सूत्रकृतांग' द्वितीय अंग सूत्र है। सूत्रकृतांग दो श्रुतस्कन्धों में विभक्त है, जिनमें क्रमशः 16 तथा 7 अध्ययन हैं, जिनकी गाथाओं का कलेवर 631 संख्या प्रमाण है तथा प्रथम श्रुतस्कन्ध का 16 वाँ अध्ययन एवं द्वितीय श्रुतस्कन्ध के 7 अध्ययन गद्य में हैं। इस आगम में भगवान महावीर के युग में प्रचलित विभिन्न मत मतान्तरों का वर्णन होने से सूत्रकृतांग दार्शनिक साहित्य के इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। आचार्य भद्रबाहु कृत सूत्रकृतांग-निर्युक्ति के अनुसार इसमें 363 मतान्तरों का उल्लेख है, यथा- 180 प्रकार के क्रियावादी, 84 प्रकार के अक्रियावादी, 67 प्रकार के अज्ञानवादी, 32 प्रकार के वैनयिक।

महावीर ने क्रियावाद, अक्रियावाद, अज्ञानवाद और विनयवाद आदि सभी वादों को जाना और फिर अपना मार्ग चुना-

किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं।
से सव्ववायं इति वेयइत्ता उवट्ठिते संजम दीहरायं।।

-सूत्रकृतांग, 1.6.27

भगवान महावीर का युग धार्मिक मतवादों और कर्मकाण्डों का संकुल था। बौद्ध ग्रन्थ सुत्तनिपात के अनुसार उस समय तिरेसठ श्रमण-संप्रदाय विद्यमान थे- **"यानि च तीणि यानि च सट्ठि।"** जैन साहित्य में तीन सौ तिरसेठ धर्ममतवादों का उल्लेख मिलता है- **'तस्स णं इमाइं तिण्णि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं भवंतीति।'** (सूत्रकृतांग, 2.2.26)। संक्षेप में सारे सम्प्रदाय चार वर्गों में समाते हैं। महावीर ने उन्हें चार **समवसरण** कहा है- 1. क्रियावाद, 2. अक्रियावाद, 3. विनयवाद, 4. अज्ञानवाद।

चत्तारि समोसरणाणिमाणि पावादुया जाइं पुढो वयंति।
किरियं अकिरियं विणयं ति तइयं अण्णाणमाहंसु चउत्थमेव।।

-सूत्रकृतांग, 1.12.1

*बैंगलोर चातुर्मास में 19-20 जुलाई 2014 को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित स्वाध्याय-संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

1. क्रियावाद– 'किरियावाइदरिसणं' (सूत्रकृतांग, 1.1.2.24) क्रियावादियों के मत में जीव की क्रिया के अनुसार उसे फल मिलता है। क्रियावादी मतावलम्बियों की धर्मनिष्ठा आत्मा, पुनर्जन्म और कर्मवाद पर टिकी हुई थी। वे सुकृत और दुष्कृत को एक समान नहीं मानते थे, उनके अनुसार सुचीर्ण कर्म का फल अच्छा और दुश्चीर्ण कर्म का फल बुरा होता है। सुख-दुःख सभी अपनी-अपनी क्रिया के फल हैं। (सूत्रकृतांग, 1.1.2.24-29)।

2. अक्रियावाद– अक्रियावादी दार्शनिकों की नैतिक निष्ठा वर्तमान के उपयोग पर टिकी हुई थी। अक्रियावादी भविष्य और भूतकाल क्षणों के साथ वर्तमानकाल का कोई सम्बन्ध या संगति न होने से क्रिया और तज्जनित कर्मबन्ध (लव) का निषेध करते हैं– **'लवावसंकी य अणागतेहिं, णो किरियमाहंसु अकिरियआया'** (सूत्रकृतांग, 1.12.4)। वे आत्मा को पुनर्जन्मानुयायी तत्त्व नहीं मानते थे, इसलिए उनमें धर्मनिष्ठा नहीं थी। निमित्तों की विपरीतता के कारण अक्रियावादी विद्या से परिमुक्त होने को कल्याणकारी कहते हैं– **'आहंसु विज्जापलिमोक्खमेव'** (सूत्रकृतांग, 1.12.10)। उनका सिद्धान्त था सुकृत और दुष्कृत के फल में अन्तर नहीं है। कल्याण और पाप अफल हैं, पुनर्जन्म नहीं है, मोक्ष नहीं है।

सूत्रकृतांग के अनुसार लोकायतिक आत्मा का पृथक् अस्तित्व स्वीकार नहीं करते, अतः आत्मा में क्रिया का अभाव मानते थे। बौद्ध पदार्थों को क्षणिक मानते थे, उनमें क्रिया का आरोप मात्र मानते थे, क्रिया नहीं। सांख्य आत्मा को सर्वव्यापक मानते हैं, अतः उसमें क्रिया नहीं मानते। ये सभी अक्रियावादी कहे गये।

3. विनयवाद– 'जेमे जणा वेणइया अणेगे, पुट्ठा वि भावं विणइंसु नाम' (सूत्रकृतांग, 1.12.3)। विनयवादी अहं विसर्जन और समर्पण को सर्वोपरि मूल्य देते थे। उनकी दृष्टि में अहं ही सब दुःखों का मूल था। विनय से ही स्वर्ग-मोक्ष की प्राप्ति बताते थे। वे पशु-पक्षी-मनुष्य-यक्ष-किन्नर सभी को विनयपूर्वक नमन करते थे।

4. अज्ञानवाद– 'अण्णाणिया ता कुसला वि संता' (सूत्रकृतांग, 1.12.2)। अज्ञानवादी दुःखों का मूल ज्ञान को मानते थे। अज्ञानी मनुष्य जितना सुखी होता है उतना ज्ञानी नहीं होता। वे अपनी सारी समझ का उपयोग ज्ञान के निरसन में करते थे। अज्ञानवादियों के अनुसार जीवादि तत्त्वों का होना, न होना कौन जानता है? और जानने से क्या लाभ?

भगवान महावीर ने चारों वादों की समीक्षा की और क्रियावाद का सिद्धान्त स्वीकार किया, किन्तु उनका क्रियावाद को स्वीकार करना एकांगी दृष्टि से नहीं था, इसलिये उनके दर्शन को सम्यक् क्रियावाद या सापेक्ष क्रियावाद के रूप में समझा जा सकता है। तीर्थंकरों ने विद्या और चरण यानी ज्ञान और क्रिया से मोक्ष कहा है– **'आहंसु विज्जाचरणं पमोक्खं'** (सूत्रकृतांग, 1.12.11)। महावीर ने अन्य दर्शनों के मत में केवल 'ज्ञान' या केवल

'क्रिया' की स्वीकृति होने से उन्हें सम्यक् क्रिया से दूर रहने वाला एकांगी मत बताकर निरस्त किया।

जैन धर्म दर्शन ने अस्तित्ववाद के चारों अंगों- आत्मवाद, लोकवाद, कर्मवाद, क्रियावाद को स्वीकार किया है। महावीर ने कहा- 'लोक-अलोक, जीव-अजीव, धर्म-अधर्म, बंध-मोक्ष, पुण्य-पाप, क्रिया-अक्रिया नहीं है ऐसी संज्ञा मत रखो; किन्तु ये सब हैं ऐसी संज्ञा रखो (सूत्रकृतांग, 2.5.12-16)। जो आत्मा, लोक, जीवों की गति-अनागति, शाश्वत मोक्ष, अशाश्वत संसार, जन्म-मरण, आस्रव-बंध, संवर-निर्जरा को जानता है, वही सम्यक् क्रियावादी है (सूत्रकृतांग, 1.12.20-21)।

कुछ विद्वानों का अभिमत है कि यज्ञ, जातिवाद, ब्राह्मण सिद्धान्तों का विरोध करने के लिये महावीर ने जैन धर्म का प्रवर्तन किया, किन्तु यह समालोचना गंभीरतया आलोचित नहीं है। महावीर की श्रमण परम्परा बहुत प्राचीन है, उसका अस्तित्व वेदों की रचना से पूर्ववर्ती है, वेदों में स्थान-स्थान पर जिस विरोधी विचारधारा का उल्लेख मिलता है उसका सम्बन्ध श्रमण परम्परा से है। महावीर ने प्राचीन श्रमण-परम्पराओं को आगे बढ़ाया, अपने समसामायिक विचारों की परीक्षा की और उनके आलोक में अपने अभिमत जनता को समझाए।

सूत्रकृतांग में पंचमहाभूतवाद, एकात्मवाद, तज्जीव-तच्छरीरवाद, अकारकवाद, षष्ठात्मवाद, क्षणिकवाद, नियतिवाद, सृष्टिवाद, कालवाद, स्वभाववाद, यदृच्छावाद, प्रकृतिवाद आदि तत्कालीन प्रचलित अनेक मत-मतान्तरों की चर्चा और उन पर महावीर का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

****

सूत्रकृतांग आगम में 'एकान्त-दृष्टि' की समस्या का प्रतिपादन कर उसका समाधान दिया गया है। अनेकान्त या सापेक्ष दृष्टि के विकास से ही सत्य तक पहुँचा जा सकता है। निश्चय तथा व्यवहार दोनों व्याख्याएँ अनेकान्त दृष्टि से सम्भव हैं।

ऐकान्तिक दृष्टिकोण से वैयक्तिक, जातीय, सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तरों पर वर्गभेद, अलगाव, अव्यवस्था, संघर्ष, शक्ति का अपव्यय, युद्ध और अशान्ति आदि परिणाम आते हैं और इन्हीं वैयक्तिक, जातीय, सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तरों पर अनेकान्त और सापेक्षता का दृष्टिकोण विकसित हो तो समता, आत्मीयता, व्यवस्था, स्नेह, शक्तिसंवर्धन, मैत्री और शान्ति फलीभूत होते हैं। निरपेक्षता-सापेक्षता के द्वन्द्व की समस्या में व्यक्ति को समाज निरपेक्ष और समाज को व्यक्ति निरपेक्ष मानना ऐकान्तिक पृथक्तावादी नीति है। इससे व्यक्ति और समाज दोनों की स्थिति असमंजस में पड़ती है। छाछ बिलोकर मक्खन निकालते समय एक हाथ आगे

रहता है तो दूसरा पीछे जाता है और दूसरा आगे आता है तो पहला पीछे जाता है। इसी सापेक्षभाव से कभी व्यक्ति प्रधान होता है, कभी समाज। इसी सापेक्षभाव में स्नेह बना रहता है। एकान्त के आग्रह से समाज व व्यक्ति बिखर जाते हैं।

धर्मदर्शन के क्षेत्र में समुदायों और मतवादों की विविधता के कारण उत्पन्न असामंजस्य को मिटाने हेतु अनेकान्त का आश्रय अपेक्षित है। भेद अनेकता का आधार है और अभेद समन्वय का। भेदाभेद वस्तु के नैसर्गिक गुण हैं।

सूत्रकृतांग में विचार और आचार दोनों के बारे में अनेकान्त का तलस्पर्शी विवेचन मिलता है। सूत्रकृतांग में अनेक मतवादों का निराकरण कर स्वपक्ष की स्थापना अनेकान्त दृष्टि से की गई है।

धार्मिक मतवादों के पारस्परिक संघर्ष ज्यों-ज्यों बढ़ने लगे और अपनी मान्यताओं को युक्तियों द्वारा समर्पित करना अनिवार्य हो गया, जैन आचार्यों ने भी अपने सिद्धान्तों को युक्ति की कसौटी पर कसकर जनता के सामने रखा और अनेकान्त के स्वरूप का पल्लवन किया।

वाद कथा के क्षेत्र में एक ओर गौतम ने न्यायसूत्र में वाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभास-छल-जाति-निग्रहस्थान की व्यवस्था की तो दूसरी ओर सूत्रकृतांग में अहिंसा और अपरिग्रह का मार्ग यह था कि अन्य तीर्थिकों के साथ वाद करते समय आत्मसमाधि वाला सत्य-साधक मुनि प्रतिज्ञा-हेतु-उदाहरण का प्रयोग करे और इस प्रकार बोले कि प्रतिपक्षी अपना विरोधी न बने (सूत्रकृतांग, 1.3.3.19)।

कई तीर्थिक, त्रस और स्थावर जीव-हिंसात्मक प्रवृत्तियों जैसे जलस्नान, अग्निहोत्र आदि से सिद्धि की प्राप्ति बताते हैं, उनके इस अभिमत को 'अपरीक्ष्य दृष्ट' कहा गया है-

'अपरिक्खं दिट्ठं न हु एव सिद्धी, एहिंति ते घातमबुज्झमाणा।
भूतेहिं जाण पडिलेह सातं, विज्जं गहाय तसथावरेहिं।।

-सूत्रकृतांग, 1.7.19

सत्-असत् की परीक्षा किये बिना अपने दर्शन की श्लाघा और दूसरे दर्शन की गर्हा कर स्वयं को विद्वान् समझने वाले संसार से मुक्ति नहीं पाते-

'सयं सयं पसंसंता, गरहंता परं वयं।
ते उ तत्थ विउस्संति, संसारे ते विउस्सिया।।

-सूत्रकृतांग, 1.1.2.23

जैन परीक्षा पद्धति का प्रथम पाठ यह रहा कि स्व-पक्ष सिद्धि और पर-पक्ष असिद्धि करते समय आत्म-समाधि वाले मुनि को 'बहुगुण प्रकल्प' के सिद्धान्त को नहीं भूलना

चाहिये। प्रतिज्ञा, हेतु, दृष्टान्त, उपनय और निगमन अथवा मध्यस्थवचन- ये बहुगुण का सर्जन करने वाले हैं। वाद काल में अथवा वार्तालाप में मुनि ऐसे हेतु का प्रयोग करे जिससे विरोध न बढ़े, हिंसा न बढ़े-

'बहुगुणप्पगप्पाइं कुज्जा अत्त समाहिए।
जेणऽण्णो ण विरुज्झेज्जा तेण तं तं समायरे।।

-सूत्रकृतांग, 1.3.3.19

आर्द्रक मुनि गोशालक से कहते हैं- 'वे श्रमण और ब्राह्मण परस्पर एक-दूसरे की निन्दा करते हुए अपने-अपने धर्म की प्रशंसा करते हैं। अपने धर्म में कथित अनुष्ठान से ही पुण्य धर्म या मोक्ष होना कहते हैं, दूसरे धर्म में कथित क्रिया के अनुष्ठान से नहीं' हम उनकी इस एकान्त या एकांगी दृष्टि की गर्हा करते हैं, किसी व्यक्ति विशेष की नहीं-

'ते अण्णमण्णस्स वि गरहमाणा अक्खंति उ समणा माहणा य।
सतो य अत्थी असतो य णत्थी, गरहामो दिट्ठिं ण गरहामो किंचि।।

-सूत्रकृतांग, 2.6.12

भगवान महावीर ने जाति आदि के गर्व में सामाजिक दुर्व्यवस्था तथा विद्रोह के बीज होने के कारण, इसका पारलौकिक फल भी अनिष्ट बताया है। कोई पुरुष जाति, कुल, बल, रूप, तप, श्रुत, लाभ, ऐश्वर्य और प्रज्ञा के मद अथवा किसी दूसरे मद-स्थान से उन्मत्त होकर अवहेलना, निन्दा और गर्हा करता है, उनसे घृणा करता है, उन्हें तिरस्कृत और अपमानित करता है- यह दीन है, मैं जाति-कुल-बल आदि गुणों से विशिष्ट हूँ- इस प्रकार गर्व करता है, वह अभिमानी पुरुष मरकर गर्भ, जन्म और मृत्यु के प्रवाह में निरन्तर चक्कर लगाता है। क्षण भर भी उसे मुक्ति नहीं मिल सकती। **'से जहाणामए- केइ पुरिसे जाइमएण वा कुलमएण वा बलमएण.......आहिए''** (सूत्रकृतांग, 2.2.10)।

वर्तमान युगीन समस्याओं में कुछ मौलिक समस्याएँ हैं तथा कुछ युग प्रभाव से उत्पन्न समस्याएँ। सूत्रकृतांग में उन समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है जो मौलिक होने के साथ-साथ दूसरी समस्याओं को उत्पन्न भी करती हैं, जिनका समाधान महावीर ने समता धर्म के रूप में प्रस्तुत किया- ''समताधम्ममुदाहरे मुणी।'' (सूत्रकृतांग, 1.2.2.6) अर्थात् मुनि समता धर्म का उपदेश करे।

विषमता एक मौलिक समस्या है, उसका कारण है समानता और समता के दृष्टिकोण का अविकास। महावीर ने कहा- 'प्रत्येक दर्शन एवं मतवाद को पहले जानकर मैं प्रश्न करता हूँ, हे वादियों! तुम्हें सुख अप्रिय है या दुःख अप्रिय? यदि तुम स्वीकार करते हो कि दुःख अप्रिय है तो तुम्हारी तरह ही सर्व प्राणियों, सर्व भूतों, सर्व जीवों, सर्व सत्त्वों

को दुःख महाभयंकर, अनिष्ट और अशान्तिकर है।'

'जैसे मुझे कोई बेंत, हड्डी, मुष्टि, कंकर, ठीकरी आदि से मारे, पीटे, ताड़ित करे, तर्जित करे, दुःख दे, व्याकुल करे, भयभीत करे, प्राणहरण करे तो मुझे दुःख होता है, जैसे मृत्यु से लगाकर रोम उखाड़ने तक से मुझे दुःख होता है और भय होता है, वैसे ही सब प्राणी, भूत, जीव और सत्त्वों को होता है। यह सोचकर किसी भी प्राणी, भूत, जीव और सत्त्व को नहीं मारना चाहिये, उन्हें परिताप नहीं पहुँचाना चाहिये, उन्हें उद्विग्न नहीं करना चाहिये।'

'तत्थ खलु भगवता छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, तं जहा- पुढविकाइया जाव तसकाइया। से जहा नामए मम असायं दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा... एवं णच्चा सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता ण हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेत्तव्वा, ण परितावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा।' (सूत्रकृतांग, 2.1.15)।

यह समता समाधान जो- जबरदस्ती-शक्ति का तंत्र नहीं है, संस्कारों से उद्भूत है अतः यह समाज को अधिक समृद्ध बना सकता है। मन-वचन-काया से हिंसा न करना, न करवाना, न अनुमोदन करना सूत्रकृतांग की सीख है। प्रश्न उठता है कि सभी जीव भिन्न-भिन्न हैं तो समानता कैसे सम्भव है?

बाहरी आवरणों का भेद होने पर भी जीवों का भीतरी आत्मजगत् परिमाण-ज्ञान-वीर्य-चैतन्य-स्वभाव सभी दृष्टियों से समान है। परिमाण की दृष्टि से चींटी और हाथी दोनों की आत्मा समान-स्वदेहपरिमाण है। ज्ञान और वीर्य अन्तःशक्ति रूप में सभी जीवों में समान होते हैं, अभिव्यक्ति में भले ही तरतमता होती हो। छोटा, बड़ा, सुन्दर, कुरूप, उच्चकुलीन, निम्नकुलीन सभी भेद बाहरी हैं, स्वभाव गुण चैतन्य सभी में समान है।

सभी जीवों का स्वभाव समान है। अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त बलवीर्य, क्षायिकसमकित, अटल अवगाहना, अमूर्तता, अगुरुलघुता- ये आठ गुण प्रत्येक प्राणी में बीज रूप में रहते ही हैं, विकास की तरतमता जरूर होती है। यह सर्वजीव समानता है समत्व की आधारशिला। महावीर ने कहा- जगत् के सभी प्राणियों को आत्मवत् समझकर उनकी रक्षा के लिये पराक्रम करें- **''तेसिं अत्तुवमायाए थामं कुव्वं परिव्वए''** (सूत्रकृतांग, 1.11.33)। आत्मौपम्य भाव दृष्टि से समता के द्वारा विषमता के सभी रूप आर्थिक शोषण, राजनैतिक दमन एवं सामाजिक विषमता सभी का निवारण सम्भव हो सकता है।

****

महावीर के समय में हिंसा सैद्धान्तिक-पक्ष में भी स्वीकृत थी। उन्होंने इस हिंसा के आचरण को दोहरी मूर्खता कहा। उन्होंने कहा- प्रातः स्नानादि से मोक्ष नहीं होता

(सूत्रकृतांग, 1.7.12)। जो सुबह और शाम जल का स्पर्श करते हुए जल स्नान से मुक्ति बतलाते हैं, वे अज्ञानी हैं- **'पाओ सिणाणाइसु णत्थि मोक्खो'** (सूत्रकृतांग, 1.7.13)। हवन से जो मुक्ति बताते हैं, वे भी अज्ञानी हैं। (सूत्रकृतांग, 1.7.18)।

'जाति की कोई विशेषता नहीं है' (सूत्रकृतांग, 1.7.19) कहकर महावीर ने जाति-मद का घोर विरोध किया। ब्राह्मणों को अपने गणों के प्रमुख बनाकर उन्होंने जाति-समन्वय का आदर्श उपस्थित किया।

महावीर आत्मवादी थे। वे ईश्वर के अस्तित्व का प्रतिपादन करते थे, किन्तु उसकी मनुष्य से भिन्न सत्ता स्वीकार नहीं करते थे। 'मनुष्य ईश्वर की सृष्टि है और ईश्वर उसका सर्जक है' यह कृति और कर्ता का सिद्धान्त उन्हें स्वीकार ही नहीं था। महावीर की दृष्टि में जगत् अनादि अनन्त है, उसके कृतित्व की जिम्मेदारी के लिये सत्ता को जन्म लेने की आवश्यकता नहीं है। अस्तित्व की दृष्टि से जगत् शाश्वत है और रूपान्तरण की दृष्टि से अशाश्वत होने से उसमें जगत् कर्तृत्व का अंश भी है जो जीवों और परमाणुओं के स्वाभाविक संयोग की प्रक्रिया से संपादित होता है, इस दृष्टि से कर्तृत्व निषेध नहीं है, किन्तु जगत्-कर्तृ-सत्ता का निषेध है।

'सब प्राणी, सब भूत, सब जीव, सब सत्त्व नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होते हैं और वहीं स्थिति और वृद्धि को प्राप्त करते हैं। वे शरीर से उत्पन्न होते हैं, शरीर में रहते हैं, शरीर में वृद्धि को प्राप्त करते हैं और शरीर का ही आहार करते हैं। वे कर्म के अनुगामी हैं। कर्म से ही विभिन्न अवस्थाओं को प्राप्त करते हैं- **'अहा वरं पुरक्खायं सव्वे पाणा सव्वे भूता... कम्मणा चेव विप्परियासमुवेंति।'** (सूत्रकृतांग, 2.3.18)।

कर्म प्रत्येक व्यक्ति में रहता है। भेद यह रहता है कि कौन किस दिशा में उसे लगाता है और कौन किस कर्म को हेय और किस कर्म को उपादेय मानता है।

श्रमण परम्परा के दो पक्ष हैं गृहस्थ और श्रमण। गृहस्थ जीवन के लिये अणुव्रतों और श्रमण जीवन के लिये महाव्रतों का विधान है। समाज का बृहत्तर भाग तो आरम्भ परिग्रहवान् (सूत्रकृतांग, 2.1.14) गृहस्थ ही होता है। किन्तु समाजशास्त्र के नियमों के अनुरूप उनके उचित-अनुचित कर्म का निर्धारण होता है। मोक्ष गृहस्थ का आदर्श लक्ष्य हो सकता है, किन्तु उसका जीवन कर्ममय होता है। सूत्रकृतांग में मोक्ष साधना की दृष्टि से कर्म और अकर्म दोनों को परिभाषित करते हुए कहा है कि कोई कर्म को वीर्य कहते हैं और कोई अकर्म को। सभी मनुष्य इन्हीं दोनों से घिरे हैं-

कम्ममेगे पवेदेंति, अकम्मं वा वि सुव्वता।
एतेहिं दोहिं ठाणेहिं, जेहिं दिस्संति मच्चिया।।

-सूत्रकृतांग, 1.8.2

प्रमाद कर्म है और अप्रमाद अकर्म-

'पमायं कम्ममाहंसु अप्पमायं तहाऽवरं।
तब्भावादेसओ वा वि, बालं पंडियमेव वा।।

-सूत्रकृतांग, 1.8.3

प्रमाद को बाल-वीर्य और अप्रमाद को पंडित-वीर्य कहा जाता है। असंयम का दूसरा नाम बाल वीर्य या सकर्म वीर्य है और संयम पंडितवीर्य या अकर्मवीर्य है।

जो व्यक्ति अबुद्ध हैं, असम्यकदर्शी हैं, असंयमी है उनका पराक्रम-प्रमाद-वीर्य बन्धनकारक होता है और जो बुद्ध, सम्यक्दृष्टि और संयमी है उनका पराक्रम- अप्रमाद-वीर्य मुक्तिदायक होता है।

जो याऽबुद्धामहाभागा वीरा असम्मत्तदंसिणो,
असुद्धं तेसिं परक्कंतं, सफलं होइ सव्वसो।
जे य बुद्धा महाभागा वीरा सम्मत्तदंसिणो,
सुद्धं तेसिं परक्कंतं अफलं होइ सव्वसो।

-सूत्रकृतांग, 1.8.22-23

प्रमत्त का कर्म बाल वीर्य होता है, अप्रमत्त का कर्म पंडित वीर्य होता है। पंडित वीर्य असत् क्रिया रहित होता है, इसलिये वह प्रवृत्ति रूप होते हुए भी निवृत्ति रूप अकर्म है, मोक्ष का साधन है। 'शस्त्र-शिक्षा, जीव-वध, माया, काम-भोग, असंयम, वैर, राग-द्वेष ये सकर्म वीर्य हैं, बाल पंडित इनसे घिरा रहता है' (सूत्रकृतांग, 1.8.4-8)। 'पाप का प्रत्याख्यान, इन्द्रिय-संगोपन, शरीर-संयम, वाणी-संयम, मान-माया-परिहार, ऋद्धि-रस-सुख के गौरव का त्याग, उपशम, अहिंसा, अचौर्य, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, क्षमा, ध्यान-योग और काय व्युत्सर्ग ये अकर्म वीर्य हैं। पंडित इनके द्वारा मोक्ष परिव्राजक बनता है। (सूत्रकृतांग, 1.8.10-26)।

'बुज्झिज्ज'- 'बोध प्राप्त करो' पद से सूत्रकृतांग का प्रारम्भ किया गया है।

'ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः' के अनुसार ज्ञान और आचरण से दुःख मुक्ति होती है। जाने बिना व्यवहार सम्भव नहीं, अतः सर्वप्रथम बोध प्राप्त करने का निर्देश दिया गया है। सूत्रकृतांग में सकारात्मक दृष्टिकोण की पहल हुई है- बोध अभी सम्भव है, यहीं और जीते जी। 'संबोधि प्राप्त करो, (देर क्यों करते हो) अरे! क्यों नहीं अभी बोध प्राप्त करते हो, मरने पर संबोधि पाना दुर्लभ है- 'संबुज्झह किं न बुज्झह, संबोही खलु पेच्च दुल्लहा।' (सूत्रकृतांग, 1.2.1.1)।

जान लो कि बंधन क्या है? क्या जानने से बंधन टूटता है? इसी क्षण को जानना

जरूरी है- **'इणमेव खणं वियाणिया'** (सूत्रकृतांग, 1.2.3.19)।

वर्तमान क्षण का अनासक्त आचरण पूर्व भवों की अनन्त बंधन शृंखला को तोड़ने में समर्थ है। बोधि प्राप्त करने में ज्ञान और अनासक्त क्रिया दोनों का समावेश हो जाता है।

****

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः। जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।। अर्थात् धर्म को जानता हूँ, पर उसमें प्रवृत्ति नहीं होती, अधर्म को भी जानता हूँ पर उससे निवृत्ति नहीं होती- यह बहुत बड़ा तथ्य है। क्या कारण है कि हम बुराई को बुराई जानते हुए भी छोड़ नहीं पाते। जानना ज्ञान का कार्य है, ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से ज्ञान हो जाता है, किन्तु चारित्रमोहनीय का क्षयोपशम नहीं होने से अच्छा आचरण करना सम्भव नहीं होता। छद्मस्थ की मनोदशा स्थानांगसूत्र में विश्लेषित करते हुए महावीर ने कहा कि छद्मस्थ सात कारणों से पहचाना जाता है- 1. वह प्राणातिपात करता है, 2. मृषावादी होता है, 3. अदत्त लेता है, 4. शब्द-स्पर्श-रस-रूप-गंध का आस्वाद लेता है, 5. पूजा सत्कार की वृद्धि चाहता है, 6. बुरे कार्य को बुरा कहता हुआ भी करता है, 7. जैसा कहता है वैसा नहीं करता- **'सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा, तंजहा- पाणे अइवाएत्ता भवइ, मुसं वइत्ता भवइ, अदिण्णमाइत्ता भवइ, सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे आसाएता भवइ, पूतासक्कारमणुवूहेत्ता भवइ, इमं सावज्जंति पण्णवेत्ता पडिसेवेत्ता भवइ, णो जधावाई तहाकारी यावि भवइ'** (स्थानांग सूत्र, 7.16)। ऐसे प्रमादयुक्त व्यक्ति के मन में मोह प्रबल होता है, कथनी-करनी एक सी नहीं होती, इसलिये ज्ञान और क्रिया का सामंजस्य नहीं होता। इस असामंजस्य के कारण पूजा-प्रतिष्ठा की भूख रहती है इससे विषय- भोगों का आकर्षण रहता है, विषयों की पूर्ति हेतु चोरी, झूठ, प्राणातिपात सभी विकार जुड़ते रहते हैं। किन्तु अप्रमत्त या वीतराग में ये सातों विकार नहीं होते। समिति-गुप्ति द्वारा राग-द्वेष आदि द्वन्द्वों के कारणभूत कर्मों के विलीन होने से शान्ति हो जाती है, वह निरोध है। यही दुःख निरोध है-'एतेसु या संति निरोहमाहु' (सूत्रकृतांग, 1.14.16)।

सूत्रकृतांग में 'अंजुधम्मं' (सूत्रकृतांग, 1.9.1) कहकर सरलता को धर्म या धर्म को सरल बताया है तथा एकांत मत को अनाचार कहा है (सूत्रकृतांग, 2.5.2-11)। अपरिग्रह को समृद्ध जीवन का आधार तथा बंधन मुक्ति का सोपान माना गया है। 'एए गन्थे' (सूत्रकृतांग, 1.1.1.6) में सूत्रकृतांग की प्रारम्भिक पाँच गाथाओं में वर्णित सिद्धान्त स्वरूप आर्हत दर्शन के सार को नहीं जानने वाले अज्ञानी परमतावलम्बियों को कामनाओं में आसक्त कहा है। फलतः उनकी मान्यताओं को परिग्रह प्रसूत मानकर अपरिग्रह सिद्धान्त

से उनका खण्डन किया है। सूत्रकृतांग के प्रारम्भ में ही 'किमाह बंधणं वीरे?' प्रश्न के उत्तर में कहा परिग्रह बंधन है, परिग्रह की प्राप्ति-सुरक्षा-संग्रह के लिये व्यक्ति हिंसा आदि करता है और उससे वैर बढ़ता है (सूत्रकृतांग, 1.9.3), वैर से कर्मबन्धन होता है (सूत्रकृतांग, 1.10.9)। चेतन और अचेतन परिग्रह से भय-मुक्ति एवं सुरक्षा सम्भव नहीं है यह जानकर जो बाह्य एवं भीतरी परिग्रह के बंधन से मुक्त हो जाता है, समाधिभाव को प्राप्त करता है वह कर्मक्षय कर लेता है। (सूत्रकृतांग, 1.10.13)।

मनुष्य की सुखोपभोग में आसक्ति, स्वामित्व एवं प्रशंसा की इच्छा वर्तमानयुगीन समस्याओं का मूल कारण है, जिसे सूत्रकृतांग सूत्र में **'साता-गारव-णिस्सिता'** कहा है (सूत्रकृतांग, 1.1.2.30)। विश्वव्यापी वर्तमानयुगीन समस्याओं में भौतिकवाद : परिग्रह, एकान्त दृष्टिकोण का आग्रह, आर्थिक शोषण-राजनैतिक दमन-सामाजिक विषमता, पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल-वार्मिंग, युद्ध और अशांति के मूल में सुख की कामना और अहंकार-प्रदर्शन मुख्य हैं। सूत्रकृतांग में निरूपित अपरिग्रह, अनेकान्त तथा अहिंसा की त्रिवेणी में वर्तमानयुगीन समस्याओं के समाधान खोजे जा सकते हैं।

वर्तमान युग अर्थप्रधान युग है। वर्तमानयुगीन 'भौतिकवाद' में नश्वर भौतिक पदार्थों से सुख खोजा जा रहा है, जिसके लिये विनाशकारी एवं अनित्य साधनों-यंत्रों-व्यापारों की ओर प्रवृत्ति बढ़ रही है, कर्मादानों का त्याग पीछे छूट गया है, फलतः जीवन मूल्यों का हनन हो रहा है। दूसरों के साथ लोभ, बल और प्रभाव का दुरुपयोग जैसी अधम अन्तः प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं और परिग्रह-संग्रह-संचय से राजनैतिक-दमन, आर्थिक शोषण और सामाजिक विषमता बढ़ रही है।

यदि अर्थव्यवस्था सूत्रकृतांग में वर्णित अपरिग्रह तथा अध्यात्म पर आधारित हो तो उसका सम्बन्ध अनन्त से आनन्द की खोज होगा। आध्यात्मिक दृष्टि अनित्य वस्तु-व्यक्ति-परिस्थिति से बंधती नहीं है, परिणामतः अपरिग्रह-अनासक्ति जैसी संरचना की ओर प्रवृत्त होती है और सहयोग, सौमनस्य तथा स्नेह जैसे गुणों का संवर्धन करती है।

इन गुणों से चेतना का ऊर्ध्वीकरण होता है फलतः भौतिकवाद का रूपान्तरण हो जाता है, वह भौतिक न रहकर प्राणिमात्र के विकास का साधन बन जाता है। सूत्रकृतांग में भी विभिन्न मतों के भौतिकवाद से ऊपर उठने का आर्हत मत प्रशस्त कहा गया है।

शरीर से भिन्न आत्मा नहीं मानने वाले मतावलम्बियों की दृष्टि में शरीर महत्त्वपूर्ण होने से शरीर की इच्छाओं की पूर्ति महत्त्वपूर्ण है। किन्तु सूत्रकृतांग में स्पष्टतः 'साता की आसक्ति' तथा उसके लिए परिग्रह संग्रह को दुःखदायी बताया है।

'चित्तमंतमचित्तं वा परिगिज्झ किसामवि।
अन्नं वा अणुजाणाति एवं दुक्खा ण मुच्चई।।

-सूत्रकृतांग, 1.1.1.2

जो परिजनों, नौकर-चाकर, पशु-पक्षी आदि चेतन तथा सोना-चाँदी-सम्पत्ति आदि अचेतन किसी भी प्रकार का परिग्रह अपनी जरूरत से अधिक रखता है और दूसरों से रखवाता है वह दुःख से मुक्त नहीं होता है। धन, सम्पत्ति तथा परिवार जन परिग्रही की रक्षा करने में असमर्थ हैं- 'वित्तं सोयरिया चेव सव्वमेतं न ताणए' (सूत्रकृतांग, 1.1.1.5)।

परिग्रह संचय की लालसा एवं आसक्ति के कारण व्यक्ति प्राणियों की हिंसा एवं वध करता है और अपने प्रति वैरभाव बढ़ाता है- **'वेरं वड्ढेति अप्पणो'** (सूत्रकृतांग, 1.1.1.3)।

अपरिग्रह और अहिंसा के मर्म को जो नहीं समझते वे मानव काम-भोग में आसक्त रहते हैं- 'सत्ता कामेहिं माणवा' (सूत्रकृतांग, 1.1.1.6)।

सम्पत्ति के संग्रह से समृद्धि होना, धन से सुरक्षा होना, धन से शत्रुओं पर विजय पाना, धन से भविष्य को सुखमय बनाना, धन से दुःखों का दूर होना आदि सभी भ्रान्त धारणाओं का मनोवैज्ञानिक कारण प्रस्तुत करते हुए सूत्रकृतांग में कहा है कि मनुष्य जिस कुल में उत्पन्न होता है, जिनके साथ रहता है, उनसे ममता मोह करने लगता है। उन्हें अपना मानता हुआ वह उन व्यक्तियों के साथ-साथ दूसरे पदार्थों में भी आसक्त हो जाता है- 'अन्नमन्नेहिं मुच्छिए' (सूत्रकृतांग, 1.1.1.4)।

भौतिक पदार्थों में सत्त्व का आरोपण कर लेता है और मूर्च्छित होकर पदार्थ परिग्रह से स्वयं को सुखी मानता है। किन्तु यह परिग्रह न तो त्राणरूप है, न शरणरूप-

'वित्तं पसवो य णातयो, तं बाले सरणं ति मण्णती।
एते मम तेसु वी अहं, नो ताणं सरणं च विज्जइ।।

-सूत्रकृतांग, 1.2.3.16

****

सभी मानव सभ्यताएँ यह स्वीकार करती हैं कि हम जाने-अनजाने में भौतिक परिग्रह को अपनी आत्मा या अपने सत्त्व का ही एक अंश मान लेते हैं, हम वस्तुओं में अपनी आत्मा का नियोजन कर देते हैं- यही ममत्व बुद्धि है, जो पदार्थों में चाहत पैदा करती है और यही मूर्च्छा को जन्म देती है।

किसी व्यक्ति के पास होने वाली सामग्री एवं संपत्ति आदि परिग्रह समाज में उसके व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मनोवैज्ञानिक इसे Material Self कहते

हैं। घर-गाड़ी-वस्त्र-पात्र-फर्नीचर आदि भौतिक सत्त्व उस व्यक्ति का अपना विस्तार है, जिसके खोने पर व्यक्ति अपने को ठगा सा और नष्ट मान लेता है। हम अपनी अध्यात्म की शक्ति को उस पदार्थ से संयुक्त कर देते हैं, जिस वस्तु पर हमने अपना श्रम, समय और ध्यान लगाया है। इस आत्मानुभव से पदार्थ का स्वामित्व मान लिया जाता है। यही कारण है कि हम 'ममत्व' का अनुभव करते हैं कि 'यह मेरा है'। इसी कारण आत्मा के साथ पदार्थ का गहरा सम्बन्ध प्रतीत होता है जो आसक्ति या मूर्च्छा में बदल जाता है।

यह आसक्ति अन्तःवृत्ति है, यह सामाजिक तथा पारिवारिक शिक्षण से बढ़ती है जैसे- जाओ, अपना खिलौना ले लो। यह गाड़ी तुम्हारी नहीं है, इसमें मत बैठो आदि आदि। यह व्यवहार विश्वव्यापी है। आसक्ति के कारण से दुःख दूर न होने की समस्या भी विश्वव्यापी है। लोग क्यों भौतिक संपत्ति और सामग्री संग्रह करने में जुटे रहते हैं इसके कई कारण हैं-

1. व्यक्ति अपने आपको अधूरा महसूस करता है या भीतर में खालीपन महसूस करता है जिसकी पूर्ति के लिये वह परिग्रह जुटाता है। व्यक्ति परिग्रह से सुरक्षित महसूस करता है। यह परिग्रह सामाजिक और भावनात्मक आलंबन के अभाव या अधूरेपन की पूरक सुरक्षा के रूप में बढ़ता रहता है। किन्तु यह परिग्रह संवर्धन दुःखों से त्राण नहीं दिला सकता, क्योंकि भौतिक सामग्री नश्वर है तथा प्राणियों के भीतर के अभाव को भरने में असमर्थ है।
2. चित्तमंत तथा अचित्तमंत परिग्रह जीवन में दुःख और दर्द के बचाव का साधन प्रतीत होता है और ऐसा मानकर व्यक्ति बिना जरूरत का भी फालतू परिग्रह संग्रह करते रहते हैं। सूत्रकृतांग स्पष्ट रूप से कहता है कि परिग्रह दुःख और बंधन का कारण है। इससे दर्द का बचाव संभव नहीं है।
3. व्यक्ति वस्तुओं को आवश्यक, अपनी जान से भी बढ़कर महत्त्व देते हैं, इसलिये वस्तुओं के प्रति आसक्ति बढ़ती है, यहाँ तक कि हम अपने व्यक्तित्व-अहं-पहचान और भाग्य को परिग्रह से परिभाषित करने लगते हैं और अन्ततः परिग्रह के गुलाम बन जाते हैं।
4. परिग्रह-संग्रह का एक मूल कारण है- संतानों के लिए धन संग्रह। 'जेहिं वा संवसे णरे' के अनुसार व्यक्ति जिन पुत्र पौत्रों के साथ रहता है, उनमें ममत्व बुद्धि रखता हुआ पीड़ित होता है और एक से बढ़कर एक, एक के बाद एक पदार्थों में आसक्त हो उनका संग्रह करता है। संतान के लिये धन-संग्रह के सम्बन्ध में संसार के सबसे अधिक धनी लोगों में एक वॉरेन बफेट तथा अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन का संवाद प्रेरक प्रसंग है। वॉरेन बफेट ने अपनी संपत्ति का 85 प्रतिशत भाग जो

करीबन डेढ़ हजार करोड़ रुपये की राशि के बराबर होता है, दान में दे दिया। उनसे बिल क्लिंटन ने पूछा- आपने इतना धन दान में दे दिया, आपके बच्चों की क्या प्रतिक्रिया रही? उनका उत्तर था- 'मैंने, मेरे पास जो बचा था उसे, अपने बच्चों को दिया; वह इतना था जिससे वे अपने जीवन में सब कुछ कर सकते हैं। पर मैंने उनको इतना नहीं दिया कि वे जीवन में कुछ भी नहीं करें।'

****

सूत्रकृतांग में स्पष्ट कहा है कि लोभ की पूर्ति सम्भव नहीं है, परिग्रह नश्वर है। वास्तव में व्यक्ति विपरीत बुद्धि और विपरीत प्रवृत्ति के प्रयोग के कारण दुःखात्मक विषयों को सुखरूप तथा सुखात्मक विषयों को दुःखरूप मानते हैं; जैसे किसी धातु पर खुदी हुई अक्षरपंक्ति देखने पर उल्टी प्रतीत होती है पर मुद्रित होने पर सीधी हो जाती है-

'दुःखात्मकेषु विषयेषु सुखाभिमानः सौख्यात्मकेषु नियमादिषु दुःखबुद्धिः।
उत्कीर्णवर्णपदपंक्तिरिवान्यरूपा, सारूप्यमेति विपरीतगतिप्रयोगात्।।'

सूत्रकृतांग में पदे-पदे परिग्रह त्याग की प्रेरणा की गई है। परिग्रही की शोचनीय दशा भी चित्रित की गई है- जो अपने परिग्रह की प्राप्ति-संग्रह-संरक्षण के विषय में सोचते रहते हैं, उन पर 'मेरे हैं' इस भाव से ममत्व और स्वामित्व भाव रखते हैं, तो भी जरूरी नहीं कि वे अपने परिग्रह पदार्थों को प्राप्त कर लें-

'धम्मस्स य पारए मुणी, आरंभस्स य अंतए ठिए।
सोयंति य णं ममाइणो, नो य लभंति णियं परिग्गहं।।'

-सूत्रकृतांग, 1.2.2.9

मुनि परिग्रही नहीं हो सकता, धर्म का पारगामी तथा आरम्भ का त्याग करने वाला ही मुनि है। सूत्रकृतांग में साधु के लिए 'अतिपरिचय' तथा प्रशंसा को भी परिग्रह की कोटि में गिना गया है क्योंकि अतिपरिचय गाढ़े कीचड़ की तरह फंसाने वाला तथा प्रशंसा ऋद्धि-रस-साता रूप गर्व होने से आत्मलाभ में बाधक है (सूत्रकृतांग, 1.2.2.11)।

संयमी पुरुष विरुद्ध काथिक-कथाकार न बने, न प्राश्निक-प्रश्न फल वक्ता बने, न ही सम्प्रसारक-वर्षा, वित्त उपार्जन आदि के उपाय निर्देशक बने, न ही किसी वस्तु पर ममत्ववान होवे किन्तु अनुत्तर धर्म को जानकर संयममय क्रिया का अनुष्ठान करे-

'णो काहिए होज्ज संजए पासणिए ण य संपसारए।
णच्चा धम्मं अणुत्तरं, कयकिरिए य ण यावि मामए।।'

-सूत्रकृतांग, 1.2.2.28

****

महावीर के दर्शन में बन्धन क्या है? किस ज्ञान से बन्धन टूटता है? यह दो प्रश्न सूत्रकृतांग आगम की प्रस्तावना है। कोई प्राणी पराधीन रहना नहीं चाहता, क्योंकि कोई प्राणी दुःखी रहना नहीं चाहता। तुलसीदासजी ने कहा था कि पराधीनता में सुख नहीं- **'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।'** बन्धन दीनता-दासता-अभाव-पराधीनता का पर्याय है। कर्मग्रन्थ टीका में कहा है कि आत्मा को परतंत्र करने वाला बन्धन है- 'बध्यते परतन्त्रीक्रियते आत्माऽनेनेति बन्धनम्'। सूत्रकृतांग के अनुसार सचित्त या अचित्त परिग्रह संग्रह करने वाला दुःखों से मुक्त नहीं होता अतः फलित होता है कि परिग्रह बन्धन है। लोग तो सुख पाने हेतु परिग्रह संचय करते हैं, करवाते हैं। परिग्रह को ही सम्पन्नता का प्रतीक मानते हैं और अपरिग्रह को दरिद्रता का। किन्तु सूत्रकृतांग इस भ्रान्त धारणा कि 'परिग्रह से सुख मिलता है' को निर्मूल कर देता है। परिग्रह के दो रूप बताये हैं- चित्तमंत और अचित्तमंत। चेतन प्राणियों पर मालकियत की भावना होना, 'ये मेरे हैं' ऐसी पकड़ रखना चित्तमंत परिग्रह है और अचेतन जड़ वस्तुओं पर मालकियत होना अचित्तमंत संग्रह है। जो व्यक्ति अपना मालिक नहीं होता वह अपनी कमी को पूरा करने के लिये अपने को दूसरे प्राणियों या वस्तुओं का मालिक मानता रहता है। अपना मालिक होना तो आनन्द देता है, पर दूसरों का मालिक होना सदा दुःखदायी है। सूत्रकृतांग ने स्पष्ट कहा कि परिग्रही दुःखों से मुक्त नहीं हो सकता (सूत्रकृतांग, 1.1.1.2)। स्वामिभाव दोहरी परतंत्रता है। हम जिसे भी बांधते हैं, उससे हमें भी बन्ध जाना पड़ता है। वास्तव में मालिक अपने गुलाम का भी गुलाम हो जाता है। गुलाम कब विद्रोह कर दे यह भय उसे सदा बना रहता है।

किसी व्यक्ति या वस्तु पर स्वामित्व मानना ही हिंसा करना है, बिना हिंसक हुए मालिक होना सम्भव नहीं। बिना किसी को परतंत्र बनाये मालिक नहीं हो सकते और परतंत्रता देना यानी दुःख देना। इसलिए सूत्रकृतांग कहता है- जो हिंसा करता है, करवाता है, अनुमोदन करता है, वह वैर बढ़ाता है (सूत्रकृतांग, 1.1.1.3)। दूसरों को परतंत्र करके, बन्धन में डालकर जो खुद स्वतंत्रता चाहते हैं वे स्वतंत्र नहीं हो सकते। परिग्रह ही बन्धन है।

भीतर के खालीपन को धन, संपत्ति, मकान, सामग्री, यश, पद, प्रतिष्ठा, नौकर, वस्तुओं यहाँ तक कि सगे सम्बन्धियों से भरने की चेष्टा परिग्रह है। इस बाह्य परिग्रह के छूटने मात्र से भी भीतर की रिक्तता नहीं भर सकती, जब तक कि इन परिग्रह के भोगोपभोग साधनों के प्रति आसक्ति-मूर्च्छा टूट नहीं जाती। परिग्रह एक व्यर्थता है। अपनी जरूरत मात्र पूरी होने तक जो बाह्य वस्तुएँ साधन के रूप में काम में आती हैं, वे परिग्रह की श्रेणी में नहीं आती, किन्तु वस्तुएँ जब सत्त्व बन जाती हैं, हमारी आत्मा बन जाती है तब वस्तुओं की पराधीनता प्रारम्भ हो जाती है, यही परिग्रह है। वस्तुएँ वस्तुएँ ही रहती हैं, वे न तो जुड़ती

हैं, न छूटती हैं, पर व्यक्ति उनसे बँधकर परिग्रही हो जाता है, यही बन्धन है।

क्या जानकर बंधन तोड़ें? इस प्रश्न का सीधा सा उत्तर दिया कि अपरिग्रह अपनाने से बंधन टूट जायेगा अर्थात् व्यक्ति और व्यक्तियों तथा व्यक्तियों और वस्तुओं के बीच 'ये मेरे हैं' ऐसा स्वामिभाव, **आसक्ति का सम्बन्ध टूट जाना बन्धन का टूटना है।** वस्तु वस्तु रहे, उसे व्यक्ति पकड़े नहीं, तो छोड़ने की भी आवश्यकता नहीं, बस बीच में ममत्व के सम्बन्ध को न बांधे तो कोई दुःख नहीं है।

सामान्यतया व्यक्ति सोचता है कि इच्छाओं की पूर्ति से सुख मिलता है। सिगमण्ड फ्रायड जैसे मनोवैज्ञानिकों ने भी इच्छा की पूर्ति के अभाव में मनोविकार होना बताया है। किन्तु वास्तव में सुख इच्छापूर्ति से नहीं इच्छा के अभाव से होता है। इच्छाएँ अनन्त हैं, एक के बाद एक उत्पन्न होती जाती हैं, उनकी पूर्ति सम्भव भी नहीं हैं। जरूरत और आवश्यकता से अधिक साधन-सामग्री परिग्रह है। जिसके कारण एक के पास अधिक संग्रह होने से दूसरे लोग वंचित रहते हैं। अतः परिग्रह त्याज्य है।

मानव समाज में एक भ्रान्त धारणा व्याप्त है कि सम्पत्ति का संग्रह करने वाला समृद्ध होता है। वास्तव में समृद्ध वह है जो सम्पन्न है; सम्पन्न वह है जिसके अभाव नहीं है; अभाव उसके नहीं है जिसके इच्छा नहीं है। यही इच्छा का अभाव समृद्धि का मूल है, जिसे सूत्रकृतांग के प्रारम्भ में अपरिग्रह मूलक विचारों के द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। अर्थशास्त्री प्रो. जे.के. मेहता ने इच्छाओं के अभाव में अर्थशास्त्र की सार्थकता को अभिव्यक्त किया है।

संपन्नता अपरिग्रह का आधार है। धन आदि परिग्रह की इच्छा होना दरिद्रता का प्रतीक है, ऐसी दरिद्रता से अपरिग्रह नहीं सध सकता। इच्छाएँ पूर्ण की ही नहीं जा सकती, वे आकाश के समान अनन्त हैं, किन्तु इच्छा का अभाव हो जाना संभव है, यही सम्पन्नता है और यही अपरिग्रह है जो बन्धन को तोड़ता है। मन से वस्तुओं की चाह मिट जाना वास्तविक समृद्धि है।

ओशो ने ठीक ही कहा था कि अपरिग्रह दरिद्रता का प्रतीक या प्रगति का विरोधी नहीं, अपितु अमीरी की व्यर्थता का उद्घोषक है। व्यक्ति जब जगत् के पदार्थों को मूल्य रहित, निरर्थक जान लेता है, सारा परिग्रह संग्रह स्वतः छूट जाता है, तब वह बन्धन मुक्त हो जाता है। धन संपत्ति और सहोदर भाई-बहन आदि ये सब रक्षा करने में समर्थ नहीं हैं। यह जानकर तथा जीवन को स्वतंत्र जानकर जीव कर्मबन्धन से छूट जाता है (सूत्रकृतांग, 1.1.1.5)। महावीर की दृष्टि में सगे-सम्बन्धी, नौकर-चाकर आदि सचित्त परिग्रह और

महल-समृद्धि-धन-दौलत-पदार्थ आदि अचित्त परिग्रह वास्तविक समृद्धि नहीं थी, उसका कोई मूल्य नहीं था अतः जगत् का परिग्रह छूट गया और उनका बन्धन टूट गया।

परिग्रह बन्धन है, हिंसा का कारण है और परिग्रह की निस्सारता जान लेने पर वह छूट जाता है ऐसा निरूपण कर सूत्रकृतांग सूत्र में इस पर चर्चा की गई है कि परिग्रह के प्रति मूर्च्छा क्यों होती है? परिग्रह का बन्धन क्यों होता है?-

जस्सिं कुले समुप्पन्ने जेहिं वा संवसे णरे।
ममाती लुप्पती बाले अन्नमन्नेहिं मुच्छिए।।

-सूत्रकृतांग, 1.1.1.4

अर्थात् मनुष्य जिस कुल में उत्पन्न हुआ है, जिसके साथ निवास करता है वह बाल बुद्धि व्यक्ति उनमें ममत्व बुद्धि रखता हुआ उत्पीड़ित होता है, एक के बाद एक (व्यक्ति और वस्तु) में मूर्च्छित होता रहता है। महाभारत में भी ममत्व से बन्धन और निर्ममत्व से मोक्ष कहा है-

द्वे पदे बन्धमोक्षस्य निर्ममेति ममेति च।
ममेति बध्यते जन्तुः, निर्ममेति विमुच्यते।।

-महाभारत, 4.72

सारांशतः सूत्रकृतांग में जैन दर्शन की द्रव्य दृष्टि से जीव के प्रभाव का संकेत करते हुए विभिन्न पर्याय दृष्टियों से प्रस्तुत अजीव के प्रभाव वाले विभिन्न मत-मतान्तरों का अनेकान्त दृष्टि से समन्वय किया गया है। अनेकान्त, अपरिग्रह और अहिंसा की त्रिवेणी के द्वारा वर्तमान युगीन समस्याओं का समाधान का सुन्दर निदर्शन प्राप्त होता है।

-एमेरिटस प्रोफेसर, संस्कृत एवं प्राकृत, जैन विश्व भारती डीम्ड यूनिवर्सिटी, लाडनूँ
निदेशक, शोध, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर (राज.)

भोग और योग

आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा.

जहाँ भोग है- वहाँ कामना है, दासता है, बंधन है, भय और पीड़ा है

जहाँ योग है - वहाँ निस्पृहता है, स्वामित्व है, स्वतंत्रता है, अभय और आनंद है।

भोगासक्त सम्राट् भी अपने को दलदल में फंसे हुए हाथी की तरह सर्वथा असमर्थ, दीन एवं भयग्रस्त अनुभव करता है।

योग साधना में रत एक अकिंचन स्वयं को पवन की तरह उन्मुक्त एवं अभय अनुभव करता है।

अध्यात्म

भावना योग : आत्म-विशुद्धि का सर्वोत्तम साधन

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्य रत्न'

धर्म की साधना में भावना का सबसे अधिक महत्त्व है। कहा भी है-

जैसा साँचा दीजिए, वैसा ही आकार।
मानव वैसा ही बने, जैसा रहे विचार।।

दान, शील, तप, स्वाध्याय, ध्यान- इनका फल तभी मिलता है, जब व्यक्ति भाव से जुड़ा हुआ हो। हम सामायिक करते हैं और उस समय मन के भाव अन्यत्र हों, तो सामायिक का लाभ नहीं मिलता। भावना को 'अनुप्रेक्षा' भी कहते हैं अर्थात् गहराई से, बारीकी से किया हुआ चिन्तन।

भगवान महावीर ने कहा है कि जिस व्यक्ति की अंतरात्मा भावना-योग से शुद्ध हो गई है, वह जल में नौका के समान है। जिस प्रकार नौका अथाह जल को पार कर जाती है, उसी प्रकार साधक भावना-योग के आलम्बन से संसार-सागर को पार कर जाता है।

मन, वचन और कर्म- ये तीन प्रवृत्ति के स्रोत हैं। प्रवृत्ति के स्रोत को शुभ-अशुभ की ओर मोड़ती है- भावना। महर्षि पंतजलि ने 'योग दर्शन' में भावना को 'नदी की धार' से उपमित किया है- 'चित्तनदी नाम उभयतो वाहिनी।'

अर्थात् चित्तरूपी नदी दोनों ओर बहती है, शुभ में भी और अशुभ में भी। यदि भावना का प्रवाह शुभ चित्त-वृत्तियों से प्रेरित रहा तो जीवन सुख-शान्ति से परिपूर्ण हो जाता है और यदि अशुभ चित्त-वृत्तियों से प्रेरित रहा, तो जीवन दुःखपूर्ण हो जाता है।

इसीलिए जैनधर्म में भावनाओं को बहुत महत्त्व दिया गया है। एक जैनाचार्य ने कहा-

जं जं समयं जीवो, आविसइ जेण जेण भावेण।
सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं।।

-उपदेश माला, 24

अर्थात् जिस-जिस समय जीव जैसे-जैसे भाव रखता है, वह उस समय वैसे-वैसे ही शुभ-अशुभ कर्मों का बंध करता है। गीता में भी सुविचार रखने को महत्त्व दिया गया-

विचारो ही मनुष्याणां, प्रतिमानाः परन्तपः।
विचारो यादृशो यस्य, मर्त्यो भवति तादृशः।।

अर्थात् हे अर्जुन! विचार ही मनुष्य के प्रतिनिधि हैं। जिस व्यक्ति के जैसे विचार होते हैं, वैसा ही उसका जीवन हो जाता है।

मन ही बंध एवं मोक्ष का कारण कहा गया है- 'मनः एव मनुष्याणां, कारणं बन्ध-मोक्षयोः।' अर्थात् मन ही मनुष्य के बंधन एवं मोक्ष का कारण है। रामायण में एक सुन्दर प्रसंग आता है। श्रीराम को वनवास हो गया था। एक दिन की घटना है कि सीताजी भोजनादि के बाद थक गई थीं। वे एक पत्थर की शिला पर सो गईं। उनकी साड़ी अस्त-व्यस्त हवा में उड़ रही थी। थोड़ी ही दूर पर श्री लक्ष्मण धनुष-बाण हाथ में लिये पहरा दे रहे थे, क्योंकि हिंसक पशुओं का डर था। वृक्ष के ऊपर एक चकवा और चकवी- दो पक्षी बात कर रहे थे।

चकवी ने पूछा- "अभूतपूर्व यौवन एवं कान्ति से सम्पन्न, यह कैसा पुरुष है, जिसका मन चलायमान नहीं होता?"

चकवा बोला-

पिता यस्य शुचिर्भूतो, माता यस्य पतिव्रता।
उभाभ्यामेव सम्भूतो, तस्य नो चलति मनः।।

अर्थात् जिस पिता का जीवन पवित्र होता है और माता पतिव्रता होती है, उन दोनों के संयोग से जो संतान जन्म लेती है, उसका मन चंचल नहीं होता।

भावना मन को संस्कारित करने का कार्य करती है। गीता में भी कहा है-

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः, कामात्क्रोधोभिजायते।।
क्रोधात्भवति सम्मोहः, सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धि नाशो, बुद्धि नाशात्प्रणश्यति।।

-भगवद् गीता, 2.62-63

अर्थात् विषयों का चिन्तन करने से उन विषयों में आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न होता है, मूढ़भाव से स्मृति-विभ्रम हो जाता है, स्मृति-विभ्रम से ज्ञान-शक्ति विनष्ट हो जाती है और बुद्धि-विनाश से मनुष्य पतन के गर्त में गिर जाता है।

भावनाएँ दो प्रकार की कही गई हैं- असंक्लिष्ट अर्थात् शुभभावना एवं संक्लिष्ट अर्थात् अशुभ भावना। जीवन को उन्नत बनाने के लिए शुभभावना की आवश्यकता है। शुभ भावना से जीवन में आनन्द एवं प्रसन्नता आ जाती है।

मन का सत्संकल्प:– शुभ भावना मन को कल्याण के मार्ग की ओर ले जाती है। हम प्रभु से प्रार्थना करें कि हम कल्याण के मार्ग की ओर बढ़ें। कहा भी है– "असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय।।" अर्थात् "हे प्रभो! हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।" इसके लिए हमारे मन का संकल्प दृढ़ होना चाहिये।

'श्रमण–सूत्र' में मन के आठ प्रकार के संकल्प का वर्णन आता है–

असंजमं परियाणामि, संजमं उवसंपज्जामि।

मैं असंयम को छोड़ता हूँ, संयम को स्वीकार करता हूँ।

अबंभं परियाणामि, बंभं उवसंपज्जामि।

मैं अब्रह्मचर्य को छोड़ता हूँ, ब्रह्मचर्य को स्वीकार करता हूँ।

अकप्पं परियाणामि, कप्पं उवसंपज्जामि।

मैं अकल्पनीय को छोड़ता हूँ, कल्पनीय को स्वीकार करता हूँ।

अण्णाणं परियाणामि णाणं उवसंपज्जामि।

मैं अज्ञान को छोड़ता हूँ, ज्ञान को स्वीकार करता हूँ।

अकिरियं परियाणामि, किरियं उवसंपज्जामि।

मैं अक्रिया को छोड़ता हूँ, क्रिया को स्वीकार करता हूँ।

मिच्छत्तं परियाणामि, सम्मत्तं उवसंपज्जामि।

मैं मिथ्यात्व को छोड़ता हूँ, सम्यक्त्व को स्वीकार करता हूँ।

अबोहिं परियाणामि, बोहिं उवसंपज्जामि।

मैं अबोधि को छोड़ता हूँ, बोधि को स्वीकार करता हूँ।

अमग्गं परियाणामि, मग्गं उवसंपज्जामि।

मैं अमार्ग को छोड़ता हूँ, मार्ग को स्वीकार करता हूँ।

इस प्रकार के संकल्प से मन की शुद्धि होती है। हमें मन को मारना नहीं है, मन को बदलना है। एक नवयुवक प्रतिदिन एक आचार्यजी का व्याख्यान सुनने जाता था, लेकिन *फिर भी उसके मन में विषय–वासना के भाव आते रहते थे। एक दिन उसने आचार्यजी को* आकर कहा– "मेरे पड़ौस में एक नवयुवती रहती है, मैं जब भी उसको देखता हूँ तो मेरे मन में विकृति आ जाती है। मैं सोचता हूँ – मैं अपनी आँखें फोड़ लूँ।" आचार्यजी ने कहा– "इससे तुम्हारी समस्या हल नहीं होगी, आँखें बन्द होने पर भी वह लड़की तुम्हारे चिन्तन

में आ जायेगी। तुमको मन का परिवर्तन करना चाहिये। मन में सोचो- वह लड़की तुम्हारी बहन है। मन के भावों को बदलो, धीरे-धीरे तुम्हारा मन परिवर्तित हो जायेगा।

'उत्तराध्ययन सूत्र' में श्री प्रसन्नचंद्र राजर्षि की मार्मिक कथा आती है। उन्होंने युवावस्था में ही दीक्षा ले ली। दीक्षा-ग्रहण से पूर्व कम उम्र के पुत्र और अपनी पत्नी को राज्य का भार सौंप दिया। दीक्षोपरान्त वे हमेशा ध्यान में तल्लीन रहते थे। श्रेणिक राजा उनके ध्यान से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने एक बार भगवान से पूछा- प्रसन्नचंद्र राजर्षि अगर अभी शरीर छोड़ दें तो कहाँ जायेंगे?" भगवान ने कहा- 'नरक में!' इसका कारण यह था कि उस समय राजर्षि के मन में अपने परिवार का चिन्तन आ रहा था। वे सोचने लगे कि मेरा पुत्र अल्पायु है, क्या पता उसे मार कर शत्रु ने राज्य हड़प कर लिया हो। इसी प्रकार का चिन्तन करते हुए उनका हाथ उनके माथे पर गया और चिन्तन आया- मैं तो मुण्डित श्रमण हूँ। उन्होंने पश्चात्ताप किया। उनकी भावना शुद्ध हो गई। पुनः विशुद्ध ध्यान करते-करते, शुभ भावना भाते-भाते ही वे देवलोक पहुँच गए।

वैसे तो भावनाएँ असंख्य होती हैं, पर आचार्यों ने उनको बारह भागों में विभक्त किया है- 1. अनित्य, 2. अशरण, 3. संसार, 4. एकत्व, 5. अन्यत्व, 6. अशुचि, 7. आस्रव, 8. संवर, 9. निर्जरा, 10. लोक, 11. बोधिदुर्लभ और 12. धर्म। इनमें-से प्रथम 6 भावनाएँ वैराग्योत्पादक और अंत की 6 भावनाएँ तत्त्वपरक हैं। आचार्य अमितगति ने चार और भावनाओं का प्रतिपादन किया है। वे हैं-

सत्वेषु मैत्रीः गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वं।
माध्यस्थभावं विपरीत वृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव।।

अर्थात् प्राणिमात्र के प्रति मैत्री, गुणज्ञों के प्रति प्रमोद, व्यथितों के प्रति करुणा एवं अपने से विपरीत भाव रखने वालों के प्रति तटस्थ वृत्ति- हे प्रभो! मेरी आत्मा में ये विचार सदैव सुस्थिर हों।

आचार्य श्री भूधरदास एवं अन्य अनेक कवियों/साधकों ने बारह भावनाओं को श्रेष्ठ पद्य में लिखा है, जो ज्ञेय हैं तथा हजारों लोग जिनको मधुर कंठ से गाते हैं। आचार्य अमितगति का उपर्युक्त श्लोक भी बहुत लोकप्रिय है। इन भावनाओं में आध्यात्मिकता एवं वैराग्य की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को इन भावनाओं का निरन्तर पाठ एवं अनुशीलन करना चाहिये तथा इन्हें जीवन में आचरित करना चाहिये।

-70, टी.टी.के.रोड, अलावरपेठ, चेन्नई-600018 (तमिलनाडु)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (23)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-**सम्पादक**

(तर्ज:- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

तेतीसवाँ अध्ययन-कर्म प्रकृति

अष्ट कर्म की मूल प्रकृति, अनुक्रम से मैं कहता,
जिनके बन्धन से संसार में, जीव विवर्तन करता,
मुक्त बनो इनके बन्धन से, अन्तर्बोध करालो ।। 684 ।।
दर्शन-ज्ञान आवरण, मोह, अन्तराय है घाती,
आयु - नाम - गोत्र - वेदना, ये चारों हैं अघाती,
इनके भेद-प्रभेद समझकर, पुद्गल ज्ञान जगालो ।। 685 ।।
ज्ञान गुणों का आवरक कर्म, ज्ञानावरण कहलाता,
दर्शन गुण आच्छादक कर्म, दर्शनावरण कहा जाता,
वेदनीय सुख-दुःख का हेतु, इनको दूर भगालो ।। 686 ।।
हेय-ज्ञेय और उपादेय की, परख नष्ट जो करता,
स्व पर का जो भान भुला दे, दोष चरित में भरता,
सबसे प्रबल मोह कर्म है, इसकी मार बचालो ।। 687 ।।
नियत समय के पूर्ण हुए बिन, अन्य गति नहीं पाता,
काल मर्यादा भव की बाँधे, आयु कर्म कहलाता,
महारम्भ माया को तज कर, उच्च गति को पा लो ।। 688 ।।
देह रूप की रचना का, नाम कर्म निर्माता,
उच्च नीच कुलों का मिलना, गोत्र कर्म प्रदाता,

शक्ति में जो विघ्न रूप है, अन्तराय को टालो ।। 689 ।।
पुद्गल रूप कर्म का जानो, कर्म-वर्गणा उनकी,
राग-द्वेष भावों से आकृष्ट, जीवों के संग चिपकी,
निर्मल बनने के हित पहले, ग्रन्थि-भेद कर डालो ।। 690 ।।
ज्ञानावरण के पाँच भेद हैं, श्रुत - आभिनिबोधिक,
अवधि - मनपर्यव - केवल, इन सबके अवरोधक,
इनके कारण जान-समझकर, आत्म स्वरूप सम्भालो ।। 691 ।।
निद्रा प्रचला, निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला, स्त्यानगृद्धि,
चक्षु, अचक्षु अवधि, केवल, सब दर्शन की निरुद्धि,
दर्शन के नौ भेद जानकर, मोक्ष पथ पग भरलो ।। 692 ।।
वेदनीय के भेद जानलो, साता और असाता,
जिसके कारण जीव यहाँ, सुख-दुःख का वेदन पाता,
दुःखों से छुटकारा पाने, दया धर्म को पालो ।। 693 ।।
मोह कर्म के भेद कहे हैं, दर्शन और चरित जानो,
दर्शन के फिर तीन कहे हैं, भेद चरित के दो मानो,
घात करे सम्यक्त्व गुणों का, मोह नष्ट कर डालो ।। 694 ।।
समकित, मिथ्या, मिश्र भेद, दर्शन मोह के जानो,
कषाय और नोकषाय भेद, चरित मोह के जानो,
भेद अवान्तर और कई हैं, इन सबको समझालो ।। 695 ।।
मोह कर्म के शुद्ध दलिक भी, जो सम्यक् हैं होते,
जिसके कारण जीव यहां, तत्त्व रुचि नहीं खोते,
अतत्त्वों में तत्त्व बुद्धि के, मिथ्या मोह को टालो ।। 696 ।।
क्रोध मान, माया अरु लोभ ये, चार कषाय बताये,
सहवर्ती इनके जो होते, नोकषाय कहलाये,
कषाय मोह के भेद जानकर, इनसे निज को बचालो ।। 697 ।।
अनन्तानुबन्धी एक चतुष्क है, अप्रत्याख्यान दूसरा,
प्रत्याख्यान तीसरा फिर, संज्वलन है निखरा,
सोलह कषाय भेद को जानो, क्रमशः इन्हें छुड़ालो ।। 698 ।।
हास्य रति, अरति, शोक, भीति और जुगुप्सा,

नर, नारी और वेद नपुंसक, विषयों की अभिलाषा,
नौ भेद हैं नोकषाय के, मन से इन्हें निकालो ।। 699 ।।
दर्शन मोह के भेद तीन हैं, पच्चीस चरित के जानो,
भेद अट्ठाईस मोह कर्म के, उत्तर-प्रकृति मानो,
मोह बन्ध के कारण सारे, इनको समझ छुड़ालो ।। 700 ।।
आयु कर्म के चार भेद हैं, सूत्रों में बतलाते,
नारक-देव तिर्यंच मनुज सब, आयुष बान्ध के आते,
जानो आयुष कर्म बन्ध को, नीच गति को टालो ।। 701 ।।
नाम कर्म के युगल भेद हैं, शुभ-अशुभ बतलाये,
शुभ-अशुभ के और भेद भी, भिन्न-भिन्न गिनवाये,
इससे रूप मिले चहुँ गति में, अशुभ नाम को टालो ।। 702 ।।
गोत्र कर्म के भेद जानलो, उच्च नीच कहलाते,
इन दोनों के अष्ट-अष्ट हैं, आशय वचन सिखाते,
उच्च-नीच जाति कुल मिलते, ऊँचा गोत्र बन्धालो ।। 703 ।।
अन्तराय के पाँच भेद जो, शक्ति में हैं बाधक,
दान-लाभ, उपभोग-भोग, इन सबके अवरोधक,
सत्कर्मों में जो बाधक हैं, बाधा दूर हटालो ।। 704 ।।
कर्म स्कन्ध अनन्ता होते, एक समय बंधन के,
अनन्त गुणा ग्रन्थिक जीवों से, अनन्त भाग सिद्धों के,
अनन्त दलिक आतम से चिपके, इसकी समझ बिठालो ।। 705 ।।
छहों दिशाओं से बाँधे, जीव कर्म के पुद्गल,
सभी प्रदेशों से बन्धते हैं, आत्मा के वे अरिदल,
क्षीर नीरवत् बन्धन वाले, यह नियम समझालो ।। 706 ।।
काल स्थिति सब कर्मो की, भिन्न-भिन्न है गाई,
दर्शन ज्ञान वेदनीय अरू, अन्तराय की बतलाई,
उत्कृष्ट तीस कोटी सागर है, इसका ज्ञान करालो ।। 707 ।।
सत्तर कोटा कोटी सागर, मोह कर्म की बतलाई,
आयु की तैतीस सागर, बीस नाम की गाई,
गोत्र कर्म की बीस ही जानो, काल का कर्ज चुकालो ।। 708 ।।

नाम गोत्र को छोड़ सभी की, जघन्य स्थिति बतलाई,
अन्तर्मुहूर्त है इन सबकी, आगम में सिखलाई,
नाम गोत्र की आठ मुहूर्त है, कर्म का बन्ध हटालो ।। 709 ।।
कर्मों के इन अनुभागों का, ज्ञान करे सब साधक,
तीव्र-मन्द परिणाम जानकर, निरोध करे आराधक,
क्षय करके सारे कर्मों का, शाश्वत सुख को पालो ।। 710 ।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बख्तसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

('वीर प्रभु की अन्तिम वाणी' पुस्तक का प्रकाशन हो गया है, जिसमें सभी 36 अध्ययनों का समावेश हो गया है, अतः सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से यह पुस्तक मंगवायी जा सकती है।)

मानव सेवा

श्रद्धेय श्री योगेशमनिजी म.सा.

मानव सेवा ही माधव सेवा है। यदि हमने पीड़ित या अभावग्रस्त मानव की सेवा कर ली, तब यह भगवान की सेवा के समान ही है, क्योंकि हर इंसान में परमात्मा का ही स्वरूप रहा हुआ है। संसार में जितने भी भगवान बने हैं, वे सब मानव के द्वारा ही बन पाए हैं। एक भी ऐसा भगवान नहीं जिन्होंने कभी कष्ट-परेशानी-दुःख-पीड़ा-अभावों की स्थिति सहन नहीं की हो। चाहे राम हो, श्री कृष्ण हो, महादेव हो, गुरुनानक हो, जीसस हो, महावीर स्वामी हो, बुद्ध हो, मोहम्मद साहब हो, सभी ने विपरीत हालातों में भी अपने धर्म-कर्त्तव्य व संस्कारों को नहीं छोड़ा, तभी तो सारा संसार उन्हें श्रद्धा-आस्था से याद करता है। हमें अभाव में कभी रोना नहीं, बल्कि उसको सहारा मानकर हिम्मत से जीना होगा। अभाव-कष्ट-मुसीबत-संकट में भी हर हालत को सहन करने वाला ही एक दिन विशेष शख्सियत बनाता है। जिसके इरादे ऊँचे व नेक होते हैं, उसे ऊँची चेयर तक नसीब हो जाती है। चाहे राष्ट्र धर्म हो या आत्म-कल्याण, उनमें सफल वही हो पाते हैं, जो अभाव और संकटों से कभी विचलित नहीं होते। उनकी राहें स्वतः ही एक दिन सुगम बन जाती है, जिनका ध्येय सर्व हितकारी-सर्वरक्षण और पावन-पवित्र होता है। शून्य से शिखर तक पहुँचने वाले इस धराधाम पर अभी भी मौजूद हैं और आगे भी रहेंगे क्योंकि इस माटी में श्रेष्ठ रत्नों का बीजारोपण होना अभी निरन्तर जारी है। जो अभाव को शाप नहीं वरदान बना लेते हैं, वे ही तो असली रत्न इस देश की शान बन पाते हैं। *-संकलन : श्री ओमप्रकाश गुप्ता, अलवर*

युवा-स्तम्भ

सफलता का सूत्र : समय प्रबन्धन

प्रो. सुमेरचन्द जैन

समय और सागर की लहर किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। समय कभी बूढ़ा नहीं होता। समय के चेहरे पर न तो कभी झुर्रियाँ पड़ती हैं और नहीं सुस्ती आती है। उलटे उसके चेहरे पर दिन ब दिन निखार आता जाता है। समय अगर बूढ़ा होता तो कब से उसके पाँव कब्र में लटक गए होते। समय कभी नहीं बुढ़ाता, हाँ वह औरों को जरूर बूढ़ा कर देता है। समय-समय होता है, समय न तो किसी को छोड़ता है और न ही अकारण छेड़ता है।

समय बहुमूल्य है। इसे व्यर्थ मत गंवाइये। जो समय एक बार हाथ से निकल जाता है, वह दौबारा लौटकर नहीं आता। समय की पूजा करो, समय तुम्हें पूज्य बना देगा। उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन में भगवान महावीर गौतम को सम्बोधित करते हुए कहते हैं-''यह जीवन क्षणभंगुर है, यह जीवन विघ्नों से भरा हुआ है, इसलिए हे गौतम! तू पूर्व संचित कर्म रज को प्रकम्पित कर (दूर कर) और क्षण भर भी प्रमाद मत कर।'' समय बड़ी चिकनी चीज़ है, सामने आते ही पकड़ लीजिए। गुजर गया तो पीछे से न पकड़ पाओगे। हाथों में से फिसल जाएगा।

उपर्युक्त कथन जीवन में एक-एक क्षण के सदुपयोग करने की प्रेरणा देता है। जीवन में समय के महत्त्व के कारण ही तो कहा जाता है कि 'समय ही धन है।', 'समय कीमती है' और 'जो समय को नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है।'

जीवन की सफलता का एक बहुत महत्त्वपूर्ण सूत्र है- समय-प्रबन्धन। प्रबन्धन की अनेक विद्याओं में से समय-प्रबन्धन की विद्या को जिसने अपने जीवन में व्यावहारिक रूप से अपना लिया, सफलता उसके कदम चूमती है।

प्रसिद्ध अमेरीकी साहित्यकार एवं दार्शनिक राल्फवाल्डो इमरसन से एक बार किसी व्यक्ति ने उनकी आयु पूछी। इमरसन तुरन्त बोले-'तीन सौ साठ वर्ष।' 'क्या?'-प्रश्नकर्त्ता चौंका। परन्तु श्रीमान् आप तो केवल साठ वर्ष के ही लगते हैं।' इमरसन बोले- 'हाँ, तुम एक अर्थ में सही हो, मैं शरीर से साठ वर्ष का ही हूँ, किन्तु सामान्य व्यक्ति की तुलना में मैं पाँच गुणा अधिक सक्रियता एवं उत्साह से जीया हूँ।' वास्तव में इमरसन जैसे व्यक्ति साठ वर्ष में वह कुछ कर गुजरते हैं जिसे सामान्य व्यक्ति को करने में तीन सौ साठ वर्ष लग जाते

हैं। अभी हाल ही में इंग्लैण्ड में गाँधीजी के कुछ पुराने पत्रों की लाखों रुपयों में नीलामी हुई। आश्चर्य होता है कि गाँधीजी ने अपने जीवन में कितनी पुस्तकें, लेख व पत्र लिखे। क्या विशेष बात होती है इमरसन और गाँधी जैसे व्यक्तियों में? इन व्यक्तियों में कतिपय विशिष्ट गुण एवं लक्षण तो होते ही हैं, किन्तु समय के मूल्यवान साधन का अधिकतम सदुपयोग ही उनकी प्रगति का मुख्य आधार बनता है।

समय का सम्मान

विलियम शेक्सपीयर के नाटक का एक प्रसिद्ध पात्र सम्राट् लियर अपनी प्रौढावस्था में ग्लानिपूर्ण ढंग से कहता है– 'उफ! मैंने समय नष्ट किया, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।' यह सही भी है। जो समय का सम्मान करता है, समय उसका सम्मान करता है तथा जो समय नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है।

82 वर्षीय टॉमस एल्वा एडीसन जिन्होंने अपने जीवन में ढाई हजार आविष्कार किये थे, से एक बार एक व्यक्ति ने उनकी अपूर्व सफलता का रहस्य पूछा। पहले तो एडीसन ने इस प्रश्न को यह कहकर टालना चाहा कि अभी तो उसे काफी कुछ करना है, किन्तु जब प्रश्नकर्त्ता ने उत्तर जानना ही चाहा तो एडीसन ने इस प्रकार रहस्य उद्घाटित किया– "पिछले 60 वर्षों से लगातार प्रतिदिन 16 घण्टे में अपनी प्रयोगशाला में कार्य कर रहा हूँ।" यह थी समय के एक सफल उपासक की गाथा जिसने विद्युत बल्ब, ग्रामोफोन, सेल, बेट्री जैसे सैकड़ों उपयोगी आविष्कार किए।

दो-दो नोबल पुरस्कारों से सम्मानित प्रसिद्ध महिला वैज्ञानिक मैडम क्यूरी को अद्वितीय सफलताओं का रहस्य उनकी समय निष्ठा में निहित था। इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व में जितने महापुरुष हुए हैं, जैसे हेनरी फोर्ड, जमशेदजी नसरवानजी टाटा, घनश्यामजी बिड़ला, महादेव गोविन्द रानाडे जैसी प्रतिभाओं के ओजस्वी कृत्यों का आधार उनका प्रभावी समय प्रबन्धन था। आश्चर्य होता है कि जगद्गुरु शंकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, प्रसिद्ध गणितज्ञ रामानुजन, आचार्य जवाहरलालजी, आचार्य हस्तीमलजी आचार्य महाप्रज्ञजी जैसे असाधारण महापुरुषों ने छोटी आयु में ही इतिहास को नए मोड़ कैसे दिए? संभव है उन महानुभावों में देवी शक्तियाँ रही हों, किन्तु भौतिक धरातल पर तो एक बात समझ में आती है कि विराट् व्यक्तित्व के इन धनियों ने अपने समय का पूर्णतया उपयोग अति विवेकपूर्ण ढंग से किया। यदि ये व्यक्ति अपने समय का कुशल प्रबन्धन न करते तो साधारण मनुष्यों से भिन्न उनकी कहानी नहीं होती।

समय का मूल्य

समय कितना कीमती है, कभी गहराई से सोचें तो सही। चिन्तन के कुछ बिन्दु हैं-

1. एक वर्ष का कितना महत्त्व है, पूछिए उस विद्यार्थी से जो परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया।
2. एक महीने का कितना महत्त्व है, पूछिए उस माँ से जिसने समय से पूर्व ही बच्चे को जन्म दे दिया।
3. एक सप्ताह का क्या महत्त्व है, पूछिए उस सम्पादक से जो साप्ताहिक पत्र निकालता है।
4. एक दिन का कितना महत्त्व है, पूछिए उस मजदूर से जो रोजाना मजदूरी करके अपना पेट भरता है और आज हड़ताल या बन्द के कारण उसे काम नहीं मिला।
5. एक मिनट का कितना महत्त्व है, पूछिए उस यात्री से जो हवाईजहाज नहीं पकड़ सका।
6. एक सैकण्ड का क्या महत्त्व है, पूछिए उस ओलम्पिक धावक से जो स्वर्णपदक प्राप्त करने से चूक गया।

एक समय ही है जो अमूल्य है, समय को खरीदा या बेचा नहीं जा सकता। आदमी पैसा तो ज्यादा से ज्यादा कमा सकता है पर समय नहीं कमाया जा सकता। दुनिया का पूरा पैसा मिलकर भी एक सैकण्ड नहीं खरीद सकता। समय सफलता का वह स्रोत है जो दोहराया नहीं जा सकता। क्या आप अपने बचपन को वापस बुला सकते हैं?

काल का एक घण्टा भी ऐसा नहीं होता जो मानव के भाग्य निर्माण के लिए उपयोगी न हो। एक घड़ी भी ऐसी नहीं होती, जिसके लिए निर्धारित कार्य को फिर किया जा सके। एक बार अवसर निकल जाने के बाद कुछ भी हाथ नहीं लगता। समय को आगे बढ़कर अधिकार में कर लीजिए।

यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि आप कितने समय का इस्तेमाल करते हैं। महत्त्वपूर्ण यह है कि आप समय का इस्तेमाल कितनी कुशलता से करते हैं। हम अपने जीवनकाल में कितना समय गंवाते हैं, आकड़ों के रूप में एक अनुमान इस प्रकार लगाया जा सकता है। औसत रूप में एक व्यक्ति की आयु यदि हम 75 वर्ष मानें तो-

1. पच्चीस वर्ष का समय तो सोने में बीत जाता है।
2. चार वर्ष का समय बातचीत में बीत जाता है, यदि वह पुरुष हो।
3. पाँच वर्ष का समय बातचीत में बीत जाता है, यदि वह स्त्री हो।
4. पाँच वर्ष का समय मोबाइल/टेलिफोन पर बातचीत में बीत जाता है।
5. आठ वर्ष का समय विभिन्न प्रकार के आमोद-प्रमोद में बीत जाता है। बचपन में खेल

से लेकर स्कूल गेम, फिल्म, टी.वी. देखने, ताश-चौपड़ आदि खेलने में।

6. छह वर्ष का समय भोजन करने में बीत जाता है।
7. दो वर्ष का समय पेय पदार्थ पीने में बीत जाता है।
8. पाँच वर्ष का समय स्नानघर में नहाने, धोने, शेविंग करने, बाल कटवाने, वस्त्र पहनने आदि में बीत जाता है।
9. पाँच वर्ष का समय यात्रा में, छुट्टियों में जाना, व्यावसायिक यात्रा, दैनिक यात्रा, घर में ऊपर से नीचे आने-जाने में बीत जाता है।
10. तीन वर्ष का समय रुकने व इन्तजार करने में बीत जाता है।
11. तीन वर्ष का समय बीमारी में बीत जाता है।
12. सत्तर दिन का समय तो मात्र शीशे में मुँह देखने में बीत जाता है।

समय है, तो एक साधन किन्तु अन्य साधनों से पूर्णतया भिन्न है। धन गंवाने पर तो पुनः अर्जित किया जा सकता है, किन्तु जो समय गंवा दिया, वह वापिस नहीं आ सकता और न ही समय भविष्य के लिए संचित किया जा सकता है। सबसे अधिक नश्वर वस्तु समय ही है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण बात यह है कि समय के मामले में ईश्वर पूर्ण समाजवाद बरतता है, न्याय करता है। चाहे प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति हो अथवा कोई छोटा कर्मचारी, चाहे बड़ा उद्योगपति हो या छोटा दुकानदार, सभी को ईश्वर ने दिन में 24 घण्टे ही दिए हैं। जो व्यक्ति अपने इन चौबीस घण्टों को दूसरे व्यक्ति की अपेक्षा अच्छा उपयोग कर लेता है, वह दूसरों से आगे बढ़ जाता है, अन्य व्यक्ति पिछड़ जाते हैं। कुछ व्यक्ति अपने जीवन के अल्पकाल में इतना कुछ कर जाते हैं कि अन्य व्यक्ति उससे कहीं बहुत अधिक समय में भी नहीं कर पाते। इसके पीछे कारण है- जीवन को सक्रियता से गुजारना और क्षण-क्षण को सार्थकता से जीना।

आइये, जीवन की क्षणभंगुरता को स्वीकार करते हुए कवि की इन पंक्तियों को हृदयंगम करें और एक-एक क्षण का उपयोग करें-

गतिशील करो चरणों को, मंजिल पास नहीं है,
कालचक्र गतिमान, किसी का दास नहीं है।
जीवन की हर सांस, सार्थक कर डालो तुम,
सांसों पर पल भर का भी विश्वास नहीं है।।

-10, इण्डस्ट्रियल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर-334001 (राज.)

नारी-स्तम्भ

नारी स्वतन्त्रता, नारी सम्मान : एक चिन्तन

श्री अरुण मेहता (FCA, FCS)

आजकल स्त्री-स्वतन्त्रता, स्त्री-समानता व स्त्री-विकास की बातें सारी दुनियां में बड़े जोर-शोर से की जा रही हैं। स्त्री को अबला समझ कर उसके उत्थान की बातें चहुँ ओर बढ़ा चढ़ा कर की जा रही हैं। क्या स्त्री परतन्त्र है या पुरुषों की गुलामी कर रही है? क्या स्त्री अबला या अविकसित है? ऐसा लगता है कि दुनिया में कुछ व्यक्ति जिसमें पुरुष व स्त्री दोनों शामिल हैं, पाश्चात्य संस्कृति की देखा-देखी ऐसा कर रहे हैं।

आज हर क्षेत्र में चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो, प्रशासनिक क्षेत्र हो, सामाजिक क्षेत्र या राजनैतिक क्षेत्र हो सब ओर स्त्री को आगे बढ़ाने की, आरक्षण देकर प्रोत्साहन देने की बातें की जाती हैं। जिसमें हर कोई व्यक्ति या तो सहमत नज़र आ रहा है, या किसी में भी समझपूर्वक अपना विचार रखने का साहस नज़र नहीं आ रहा है।

जिस पुरुष को जन्म देने वाली स्त्री है, जिस पुरुष को उठना, बैठना व चलना सिखाने वाली स्त्री है, जिस पुरुष को खाना व बोलना सिखाने वाली स्त्री है उस स्त्री को पराधीन या अविकसित कहना क्या हास्यास्पद नहीं लगता? कुछ स्वार्थी पुरुष, स्त्री से ही जन्म व विकास प्राप्त करके उसी स्त्री का शोषण करना चाहते हैं वे ही पुरुष उस स्त्री को अविकसित कह कर और उसके विकास का नारा देकर पूरे मनुष्य समाज को भ्रमित करने का कार्य कर रहे हैं।

भारतीय संस्कृति में प्रारम्भ से ही स्त्री को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। जैन धर्म/दर्शन स्त्री और पुरुष के लिए समान रूप से विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। जैन दर्शन में बिना लिंग भेद के सभी पुरुष व स्त्रियों को पुरुषार्थ करने का, कर्म काटने की साधना करने का, केवल ज्ञान प्राप्त करने का व मोक्ष प्राप्त करने का समान अधिकार देता है। इन सभी कार्यों में प्रत्येक स्त्री पूर्ण स्वतन्त्र है। वह स्वयं अपना विकास करके अपना गौरव व सम्मान प्राप्त करने में स्वतन्त्र है। स्त्री ही नहीं प्रत्येक जीव, प्रत्येक प्राणी अपना विकास करने में स्वतन्त्र है, आवश्यकता है उसको समझने की।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य एक बुद्धिमान प्राणी है। मनुष्य एक पूर्ण विकसित प्राणी है। मनुष्य का समाज पुरुष व स्त्री के योग से ही बनता है और इस अपेक्षा से दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों की अपनी-अपनी शारीरिक रचना है, दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। मनुष्य की सामाजिक व व्यावहारिक व्यवस्था बनाए रखने में दोनों का

अपना-अपना विशेष कार्य का बटवांरा है जो अनादिकाल से चला आ रहा है। दोनों के अपने-अपने कार्य करने के हैं, जिसमें किसी का भी कार्य बड़ा या छोटा, महत्त्वपूर्ण या कम महत्त्वपूर्ण नहीं समझना चाहिये। सिर्फ इसी कारण से तो पुरुष व स्त्री दोनों को एक-दूसरे का पूरक कहा गया है। अन्यथा पुरुष व स्त्री दोनों के जीव पृथक् पृथक् हैं, दोनों के कर्म पृथक्-पृथक् हैं। दोनों ही अपने-अपने कर्मों के कारण ही संसार में कभी स्त्री का तो कभी पुरुष का शरीर धारण करके परिभ्रमण करते रहते हैं। ऐसा कोई नियम सिद्ध नहीं है कि स्त्री सदा (जन्म-जन्मातर तक) स्त्री ही रहेगी व पुरुष सदा पुरुष ही रहेगा। जैन सिद्धान्त इस बात का स्पष्ट उल्लेख करता है कि प्रत्येक जीव नये-नये भव में लिंग परिवर्तन को प्राप्त हो सकता है। जैन आगमों में स्पष्ट वर्णन आता है कि स्त्री शरीर व स्वभाव से कोमल होती है जबकि पुरुष अपेक्षाकृत कठोर शरीर व कठोर स्वभाव वाला होता है। दोनों की शारीरिक रचना एक-दूसरे के पूरक के रूप में होती है न कि विरोधात्मक रूप में। इसमें किसी को भी ऊँचा या नीचा नहीं कहा जा सकता, किसी को भी बड़ा या छोटा नहीं कहा जा सकता है। पुरुष को ऊँचा व स्त्री को नीचा मानना भूल है। हाँ, पुरुष का शरीर व स्वभाव कठोर होने की वजह से सामाजिक व्यवस्था में जो कठिन और कठोर कार्य हैं वे पुरुष के करने के लिए हैं, जैसे आजीविका अर्जित करना, प्रशासन चलाना, शासन (राज कार्य) करना, युद्ध में लड़ने जाना आदि और स्त्री का शरीर व स्वभाव कोमल और सहनशील होने के कारण उनके योग्य कार्य बच्चों को जन्म देना, उनका लालन-पालन व रक्षण करना, गृहकार्य करके घर की व्यवस्था बनाए रखना आदि होते हैं। इस तरह के कार्य-विभाजन को ऊँचा या नीचा, कम महत्त्वूपर्ण या ज्यादा महत्त्वपूर्ण, स्वतन्त्रता या परतन्त्रता समझना निरी भूल ही समझ में आती है।

पुरुष की तरह स्त्री भी अक्षर ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम है, पुरुष की तरह स्त्री भी भाषा ज्ञान, गणित, भूगोल, इतिहास आदि सभी ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम है। कोई भी वैज्ञानिक पुरुष व स्त्री के मानसिक विकास या क्षमता में कोई अन्तर या भेद नहीं मानता है। पुरुष द्वारा स्त्री के कार्य करना व स्त्री के द्वारा पुरुष के कार्य करना, ये सामाजिक भटकाव की स्थितियाँ है, प्रकृति के विरुद्ध है, अनादिकालीन व्यवस्था के विपरीत है, मनुष्य जैसे सभ्य प्राणी की सभ्यता के विरुद्ध है, मनुष्य की सभ्यता में अवनति का कारण है।

अगर स्त्री अपने आप को अबला, अविकसित या परतन्त्र कहलाने से बचना चाहती है तो उसके लिए जैन धर्म/दर्शन सटीक व सुन्दर मार्ग प्रशस्त करता है। ऐसी नारियों को जैन धर्म के सिद्धान्तों की जानकारी करनी चाहिये, आत्मज्ञान प्राप्त करना चाहिये, जीवाजीव नवतत्त्व का ज्ञान करना चाहिए, षट्द्रव्यों का ज्ञान करना चाहिए जिससे वे स्वयं यह जान सकें कि क्या सही है व क्या गलत है। क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये।

उनको सही अहसास हो सके कि उनको अपना पुरुषार्थ किस कार्य में लगाना चाहिये या किसमें लगायेंगे तो उसका क्या परिणाम होगा। जैन धर्म/सिद्धान्तों की जानकारी करके ही वे अपना कर्मबन्धन रोक व तोड़ पायेंगी व अपना सर्वांगीण विकास कर पायेगी तथा अपने साथ-साथ अपने बच्चों को भी पूर्णरूपेण विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगी। इस कार्य को करने में स्त्री स्वतन्त्र ही है उसे किसी पुरुष या अन्य की अधीनता की आवश्यकता नहीं है। जैन आगमों में स्थान-स्थान पर ऐसी स्त्रियों के अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिन्होंने इस मार्ग के द्वारा अपना सर्वांगीण विकास किया। इनमें प्रमुख रूप से महासती मृगावती, महासती चन्दनबाला, महासती मदालसा आदि के उदाहरण हम सबके सामने हैं।

मात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करके, शासन और प्रशासन में उच्च पद प्राप्त करके या उच्च आर्थिक अर्जन करके स्त्री अपने आप को विकसित, स्वतन्त्र या पुरुष के समान समझने की भूल नहीं करें। इसे मापदण्ड का पैमाना न बनने दें। वह तो अन्यथा भी स्वतंत्र व समान ही है।

पुरुष व स्त्री दोनों को मात्र अपने करने योग्य कार्य करने चाहिये व साथ-साथ अपनी आत्मा का ज्ञान अवश्य करना चाहिये, अपने कर्म व कर्मबन्धन को समझना चाहिये और अपने कर्मबन्धन को रोकने व बद्ध कर्मों को काटकर सम्पूर्ण विकास का मार्ग समझना व समझाना चाहिये इसी में उसकी स्वतन्त्रता, विकास व समानता रही हुई है।

जब स्त्री को स्वतन्त्रता व समानता के नाम पर घर के बाहर के कार्यों में लगाया जाता है तब उस स्त्री को अपने पति को नहीं अपने बॉस को खुश रखना पड़ता है, उसे अपने परिवार को संभालने का समय ही नहीं रहता, क्योंकि उसे अब शोरूम में ग्राहकों को संभालना पड़ता है। उसे मर्यादापूर्ण नहीं भड़कीले वस्त्र धारण करने पड़ते हैं, उसे अपने शरीर को ढककर नहीं प्रदर्शित करके चलना पड़ता है। **स्त्री समानता की बात करने वाले सभी पुरुष व नारियों से प्रश्न है कि इन कार्यों में कहाँ है स्त्री का सम्मान? कहाँ है इसमें स्त्री की स्वतन्त्रता? उसे तो दूसरों की इच्छाओं व इशारों पर चलना पड़ता है। कहाँ है इसमें स्त्री के शरीर का गौरव? कहाँ है इसमें स्त्री के प्रति सद्भाव पूर्ण दृष्टि?**

[स्त्री को स्वयं समझना चाहिये कि ऐसे कार्य करके क्या सही मायने में वह अपने पिता की पुत्री बन सकती है? क्या वह अपने पति की सही मायने में पत्नी बन सकती है? क्या वह अपने बच्चों की सही मायने में ममतामयी माँ बन सकती है? क्या वह सही मायने में अपने परिवार को वात्सल्य के धागे में बांध कर रखने योग्य गृहिणी बन सकती है?][1]

-पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

-467-ए, सातवीं 'ए' रोड, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

1. आचार्य श्री विजयरत्न सुन्दरसूरिजी म.सा. की पुस्तक 'वाह! क्या बात हैं' से साभार

धारावाहिक

लगन की वेला (22)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

शिवसुन्दर ने सभी सन्तों का आगमन जाना। उसका अन्य मुनियों से परिचय नहीं था। वह दर्शन करने जाता था। सम्प्रति आचार्यदेव से वार्तालाप का अवसर उसे नहीं मिलता था, क्योंकि वे प्रायः साधना में लीन रहते थे। कभी-कभी मांगलिक सुनने का अवसर प्राप्त हो जाता था। परन्तु उसके हृदय में आचार्यदेव के द्वारा कहे गये वाक्य गूँजते रहते थे। वह कभी सोचता- 'अरुण कितना सौभाग्यशाली है? उसे बचपन से ही गुरुदेव का सत्संग प्राप्त हुआ। कितना ज्ञानार्जन किया होगा- उसने, गुरुदेव से? सही ज्ञान के स्रोत सबको सुलभ नहीं होते हैं। मैं गृहकार्य में उलझता जा रहा हूँ। कभी गुरु-दर्शन के लिये चला जाता हूँ। पर इतना सौभाग्य कहाँ है कि गुरुदेव के वचनामृत का पान करूँ? गुरुदेव ने फरमाया था- 'पापक्रिया का त्याग संवर' अर्थात् पापक्रिया को नहीं करने का संकल्प करके, उस ओर अपने मन, वचन और तन को प्रवृत्त नहीं होने देना- प्रवृत्त होने से रोकना। इससे क्या होता है? पापक्रिया का अभ्यास छूटता है। चिन्तन करते हुए वह आत्मालोचन करता जाता है, तब उसे लगता है कि ज्ञान के ताले खुल रहे हैं। गुरुदेव के सूत्रवाक्य चाबियाँ हैं। फिर उसका चिन्तन आगे चलता है और उसे लगता है कि वह ज्ञानाराम में विहार कर रहा है।

आज आपण पर विशेष कार्य नहीं था। उसके दोनों लघु सहोदर वहाँ थे। मध्यम उससे लगभग डेढ़-पौने दो वर्ष छोटा था परन्तु दिखता उससे बड़ा था। उसने स्थानीय कलायतन में ही अभ्यास किया था। अभी पढ़ अवश्य रहा है वह, लेकिन उसकी रुचि व्यापार में अधिक है। दोनों भाई आपण के कार्य में उससे अधिक कुशल हैं। आचार्यदेव के सम्पर्क में आने के बाद से उसकी अवस्था विचित्र होती जा रही है। वह अधिकतर कुछ न कुछ चिन्तन करता रहता है। घर के कार्य में रुचि कम होती जा रही है, अतः कुछ न कुछ गलती हो जाती है तो दोनों भाई हँस पड़ते हैं। तब वह अपनी त्रुटि समझकर लज्जित हो जाता। उस समय मध्यम भ्राता उसकी मनःस्थिति समझ जाता। वह उसके मन को सहलाने के लिये कहता- 'भाई! कोई बात नहीं। आपको अभी अभ्यास कम है, इसलिए ऐसा हो जाता है।' परन्तु वह तो यह समझता है कि वास्तविक स्थिति इससे भिन्न है। उसकी रुचि की न्यूनता और चिन्तन निरतता ही त्रुटि का कारण है। यह जानकर भी उसे अपनी त्रुटि सुधारने का मन

नहीं होता है। आज कुछ ऐसा ही कार्य पुनः हो गया। कनिष्ठ भ्राता हँस पड़ा। फिर उसका मन आपण पर नहीं लगा। इसलिये वह वहाँ से घर पर जल्दी ही आ गया।

शिवसुन्दर को पता था कि आज जननी-जनक उपाश्रय गये हैं। इसलिए भोजन देर से ही मिलेगा। वह घर आया। घर में शान्ति थी। उसने देखा कि ज्येष्ठ भगिनी भोजन-गृह में कार्य में लगी हुई है। उससे बड़ी दो बहिनें हैं। दोनों का श्वसुरगृह कुशस्थलपुर में ही है। मेरुसुन्दरी ने अपनी पुत्री को यहाँ आकर आज के लिये भोजन गृह सम्हालने की सूचना कर दी थी। वह सूचना के अनुसार जल्दी ही आ गयी थी। जब वह आयी, तब मेरुसुन्दरी स्थानक जाने को उद्यत थी। उसने पुत्री को कुछ सूचनाएँ दीं और स्थानक चली गयी। शिवसुन्दर ने बहिन को कार्य में व्यस्त देखकर, उससे कुछ भी बात न की और वह बाहर विश्राम शाला में आकर तकिये का सहारा लेकर गद्दी पर बैठ गया। बस, उसके नयन अर्ध-निमीलित हो गये। उसे गुरुदेव के वाक्य स्मरण में आने लगे- 'अब्रह्मचर्य भी पाप क्रिया है। हमारे कलाचार्य ने कहा उनके अनुसार तो अब्रह्मचर्य पाप नहीं है। उनके अनुसार वह प्रेम की ही एक अवस्था है- परिपक्व अवस्था है। पर गुरुदेव कहते हैं कि वह पाप है, क्योंकि जीव को उसका नशा छा जाता है। वह बेभान कर देता है। विवेक को छीन लेता है। व्याकुल बना देता है। बुद्धि और शरीर का भी विनाश करता है। अतः 'जो भाव जीव को आकुल बनाकर तड़पाता है, वह स्वाभाविक कैसे हो सकता है?' गुरुदेव की बातें-दिन के उजाले-सी स्पष्ट हैं।

मेरुसुन्दरी ने घर में प्रवेश किया। उसने जब गुरुदेव के संथारा की बात सुनी, तबसे उसका मन उदास हो गया। वह स्थानक जल्दी-जल्दी आयी थीं। उसने पुत्री को भोजनगृह में देखा तो वह प्रसन्नता से बोली-"अच्छा, वत्सला तू आ गयी? अरे! वाह भोजन बनने आ गया है।" वह पुत्रियों को प्रायः वत्सला ही कहती थी। पुत्री को माता की बात से आश्चर्य हुआ। वह बोली- 'जननि! मैं तो आपके जाने से पहले ही आ गयी थी!' मेरुसुन्दरी को अब ध्यान आया। वह उदासी को दूर करके बोली-'अरे, हाँ! यह तो मैं भूल ही गयी। फिर अपनी भूल पर स्वयं ही हँसी। परन्तु पुत्री हँसी में साथ न देकर पूछने लगी- 'जननि! आप कभी इस प्रकार स्मृति-हीन नहीं होती हैं! आज यह क्यों हो गया?'

माता और पुत्री के संवाद से शिवसुन्दर की चिन्तन-धारा नहीं टूटी। वह आचार्यदेव के वाक्यों को सोच क्या रहा था, मानो सुन रहा था- 'वत्स! समस्त विकार पाप हैं....समस्त विकारों को चेतना से दूर करने की प्रक्रिया का नाम ही आत्म-साधना है।' अब उसका चिन्तन चलने लगा- 'समस्त विकार पाप हैं तो समस्त पाप भी विकार ही हैं। मैंने गुरुदेव से

हुई चर्चा के बाद अठारह पापों के विषय में जाना है। वे पाप विकार ही हैं या विकार ही तो पाप हैं। राग और द्वेष को भी पापों में ही गिना गया है। राग का अर्थ है- रुचि रूप भाव-लगाव। प्रेम भी तो लगाव ही है। तब तो प्रेम और राग एक ही हैं। तो प्रेम पाप है? प्रेम पूज्यजनों के प्रति पूज्यभाव से मिश्रित होकर भक्ति बन जाता है। गुरुजनों का लघुजन के प्रति प्रेम हित-चिन्ता से मिश्रित होकर वात्सल्य बन जाता है। तो भक्ति और वात्सल्य पाप हैं? नहीं यह तो मिश्रण की महिमा है। भगिनी-बन्धुओं के प्रति प्रेम किसी मिश्रण के अभाव में प्रेम ही रहता है। परन्तु वही प्रेम जब युवक-युवती में होता है, तब शरीर को भोगने की भावना से मिश्रित होकर वासना हो जाता है और वासना से ही अब्रह्मचर्य का सेवन होता है। देव, गुरु, धर्म और माता-पिता के प्रति प्रेम और लघुजनों के प्रति प्रेम में उदात्त भाव है, परन्तु उसमें उदारता नहीं हो तो वह राग ही है। युवक-युवती के प्रेम में उदात्तता है ही नहीं। अतः वह पाप ही है। भोग की भावना विकार है और नर-नारी के आकर्षण में भोग की भावना ही प्रधानरूप से कार्य करती है। गुरुदेव ने कहा- अब्रह्मचर्य सभी जीवों में है, इसलिए वह विकार नहीं है- यह समझना भ्रम है अर्थात् विकारों की सर्वव्यापकता उन्हें स्वभाव का रूप नहीं दे सकती है। पाप विकार है- विकार पाप है और पाप ही दुःख है। यह निर्णय साधना का मूल-मंत्र हो सकता है। वस्तुतः निर्विकारता ही सुख है। 'ऐसे नित्य चिन्तन से उसके मन में यह निर्णय दृढ़ बनने लगा कि मुझे निर्विकार बनना है। क्या करना होगा मुझे- निर्विकार बनने के लिये। समस्त विकारों को चेतना से दूर करने की प्रक्रिया का नाम ही आत्म-साधना है। कितनी उत्तम बात है यह? पूर्णरूप से यह साधना घर में रहकर नहीं हो सकती। तो क्या करूँ? आचार्यदेव का शिष्य बन जाऊँ...।' यह विचार आते ही वह हँस पड़ा।

इधर मेरुसुन्दरी पुत्री को कह रही है-"क्या कहूँ, वत्स! आज आचार्यदेव ने नये आचार्य के नाम की घोषणा के बाद अपने संथारा करने के दिन की घोषणा कर दी- इसलिये मेरा चित्त किंचित् उद्विग्न हो गया, यही विस्मृति का कारण है।"

'हे अम्ब! यह क्या कह रही हो'- पुत्री कुछ अधिक जोर से बोली- 'आचार्यश्री संथारा करेंगे?'

उसकी जोर की आवाज से शिवसुन्दर का चिन्तन टूट गया और वह चौंक गया। वह भीतर आया। मेरुसुन्दरी कह रही है- "चैत्र शुक्ला त्रयोदशी आचार्यपद का उत्सव है और चतुर्दशी से आचार्यदेव संथारा प्रारम्भ करेंगे।" शिवसुन्दर पहली बात समझा, पर दूसरी नहीं।

उसने पूछा- 'अम्ब! नया आचार्य किसे बनाया।'

'मुनिराज धर्मप्रिय को। वे गुरुदेव के ज्येष्ठ शिष्य हैं।'

'जननि!' पुत्री बोली- 'वे ज्येष्ठ तो हैं ही, परन्तु वे इस पद के योग्य भी हैं। यों तो गुरुदेव के सभी शिष्य रत्नों की माला है। परन्तु मुनिराज धर्मप्रियजी में तो गुरुदेव के सभी गुण अवतरित हुए हैं।' शिवसुन्दर मुनिराज के दो बार ही दर्शन कर पाया। परन्तु उनके क्षणिक दर्शन और अत्यल्प वचनों ने उसे बहुत प्रभावित किया। वह गणी यशोराज मुनि के विशेष परिचय में आया था। उनकी विज्ञता और गुणों से वह प्रभावित था, परन्तु मुनिराज धर्मप्रिय के व्यक्तित्व की छाप हृदय में कुछ और ही रूप में अंकित हुई थी। प्रचण्ड मुनि के प्रसंग से उनके प्रति पहले से ही आकर्षण तो था ही। अतः वह बोला- 'अम्ब! उन्हें आचार्य पद देकर गुरुदेव ने बहुत अच्छा कार्य किया। पर गुरुदेव क्या करेंगे- यह मैं नहीं समझ पाया।'

सार्थवाह उस समय वहाँ आ गये थे। उन्होंने उत्तर दिया- 'वत्स! गुरुदेव संथारा करेंगे।'

'संथारा किसे कहते हैं?'

'संथारा शब्द का अर्थ बिछौना है। परन्तु यह शब्द जीवनभर के अनशन के लिये रूढ़ हो गया है।'

'जीवन भर का अनशन? आचार्यदेव आजीवन भोजन-पानी का त्याग कर देंगे? वे ऐसा क्यों करेंगे, तात! क्या उन्हें जीवन अप्रिय हो गया है?' बड़ा आश्चर्य हो रहा है, शिवसुन्दर को।

'आयुष्मन्! साधक-आत्मा को जीवन-मरण न प्रिय होते हैं न अप्रिय; क्योंकि ये कर्माश्रित हैं। आयुष्यकर्म का उदय है तो जीवन है और वह समाप्त हुआ तो मरण। साधक जीवन में साधना करता है और मरण में भी। मरण अगले भव का द्वार है तो मुक्ति का भी। अतः मुक्ति जिसका लक्ष्य है, वह अन्तिम क्षणों में भी साधना करता है, जिससे मरण मुक्ति में परिणत हो सके। अतः आचार्यदेव दिव्य संकेत के अनुसार अन्तिम समय की आराधना कर रहे हैं।'

'इसका आशय यह हुआ'- शिवसुन्दर चिन्तित स्वर में बोला-'कि अब आचार्यदेव के दर्शन कुछ ही समय तक हो सकेंगे।' तब मेरुसुन्दरी ने कहा-'इसीलिए तो मुझे खेद हुआ।' वह थाल परोस रही थी। 'खेद से क्या होना जाना है। जो निश्चित है, वह तो होता ही है।' गुणसुन्दर ने कहा- 'परन्तु तुम्हारी यह बात सही है कि भक्त को अपने आराध्य का वियोग कसकता है।' यह कहकर गुणसुन्दर हाथ-मुँह धोने चले गये।

शिवसुन्दर खड़ा ही रह गया। वह मौन था, परन्तु मन में उथल-पुथल मची हुई थी- 'बस पन्द्रह दिन बाद गुरुदेव अनशन ग्रहण कर लेंगे और सम्भव है कि वे संघ के कार्य भी त्याग दें। तब तो मेरी इच्छा कैसे पूरी हो? परन्तु दिन में ही मुझे जो करना है, वह कर लेना चाहिये। परन्तु इतनी जल्दी यह सब कैसे होगा? क्या पिताजी-माताजी मुझे अनुज्ञा देंगे?

उसने मुनि मार्ग ग्रहण करने का संकल्प दृढ़ कर लिया, पर यह कार्य सिद्ध कैसे हो, यह चिन्तन चल रहा था।

इतने में सार्थवाह आ गये। वे भोजन के लिये बैठ गये। शिवसुन्दर विचार में खोया हुआ था। पिता ने उसे कहा- 'क्या सोच रहे हो? आओ भोजन करें।'

'यह आया, तात!'- यह कहकर वह हाथ धोने चला गया। पर यह कहता गया- 'बात तो चिन्ता जैसी ही है।' फिर वह जल्दी ही आकर पिता के पास भोजन करने बैठ गया।

मेरुसुन्दरी ने थाल परोस दिये। वत्सला ने थाल उनके सम्मुख रखे। वे शान्ति से भोजन कर रहे थे। पर वे अपने-अपने विचारों में खोये थे। कोई भी बोल नहीं रहा था। उनके दोनों पुत्र भी आपण से आ गये। आते ही मध्यम बोला- 'आज तो ऐसा लग रहा है कि घर में कोई है ही नहीं। बिल्कुल शान्ति है। क्या बात है? सब गुमसुम क्यों हैं?' मेरुसुन्दरी ने उसकी बात का उत्तर न देते हुए कहा- 'आओ, तुम भी भोजन करने बैठो। चौके का काम जल्दी ही हो जाये तो ठीक! हमें भी काम है।'

कनिष्ठ बोला- 'आपको कब काम नहीं रहता है? जब देखो, तब यही सुना है कि जल्दी करो, हमें काम है।' मेरुसुन्दरी ने सीधा उत्तर न देते हुए कहा- 'जाओ, जल्दी हाथ-मुँह धो आओ। मैं थाल परोस रही हूँ।' वे चले गये। कुछ ही क्षण में आये और भोजन करने बैठ गये।

सार्थवाह और शिवसुन्दर भोजन कर चुके थे। सार्थवाह ने अपने दोनों पुत्रों से कहा- 'वत्स! तुम्हारी माँ ठीक कह रही है। अब हमारा काम बढ़ गया है। कल से पन्द्रवें दिन मुनिराज धर्मप्रिय जी को आचार्य-पद प्रदान किया जायेगा। और दूसरे दिन ही गुरुदेव संथारा लेंगे। अतः लोगों का आवागमन बढ़ेगा और हमारा काम भी बढ़ेगा। अब इन दिनों तुम तीनों भाई घर और आपण का कार्य सम्हालना।'

'जी, तात! ऐसा ही होगा।'- मध्यम बोला- 'अभी बहुत मुनि पधारे हैं। हम दर्शन करने जाते हैं। अभी बहुत लोग दर्शन करने आते हैं। धर्मप्रियजी मुनिराज से तो हम बोल ही नहीं सकते हैं। फिर भी मुनिराज की हम पर बड़ी कृपा है।'

'आयुष्मन्! तुम सौभाग्यशाली हो। अभी भीड़ रहेगी ही।' (क्रमशः)

Child-Section

JAINISM AND IT'S TEACHINGS

Sh. Lakshay Mandot

INTRODUCTION

The word 'Jain' derives from the Sanskrit word *jina* (conqueror). A human being who has conquered all inner passions like attachment, desire, anger, pride, greed, etc. is called *Jina*. Followers of the path practiced and preached by the jinas are known as Jains.

TEACHING

The principle of *ahimsa* (non-violence or non-injury) is the most fundamental and well-known aspect of Jainism. The everyday implementation of the principle of non-violence is more comprehensive than in other religions and is the hallmark for Jain identity. Jains believe in avoiding harm to others through thoughts (*mana*), speech (*vachana*) and actions (*kāya*). According to the Jain text, *Purushartha Siddhyupaya*, "killing any living being out of passions is *hiṃsā*(injury) and abstaining from such act is *ahimsā* (non-injury)".

Jains extend the practice of non-violence not only towards other humans but towards all living beings. For this reason, Vegetarianism is a hallmark of Jain identity, with the majority of Jains practicing lacto Vegetarism . If there is violence against animals during the production of dairy products, veganism is encouraged.

After humans and animals, insects are the next living being offered protection in Jain practice, with avoidance of intentional harm to insects emphasized. For example, insects in the home are often escorted out instead of killed. Jainism teaches that intentional harm and the absence of compassion make an action more violent.

After non-violence towards humans, animals and insects, Jains make efforts not to injure plants any more than necessary. Although they admit that plants must be destroyed for the sake of food, they accept such violence only as much as it is indispensable for human survival. Strict Jains, including monastics, do not eat root vegetables such as potatoes, onions and garlic because tiny organisms are injured when the plant is pulled up and because a bulb or tuber's ability to sprout is seen as characteristic of a living being.

Jains believe that the intent and emotions behind an act of violence are more important than the action itself. For example, if a person kills another living being out of carelessness and then later regrets the act, the bondage (*bandha*) of karma is less compared to when a person kills the same kind of living being with anger, revenge, etc. A soldier acting in self-defense is a different type of violence from someone killing another person out of hatred or revenge. Violence or war in self-defense may be justified, but this must only be used as a last resort after peaceful measures have been thoroughly exhausted.

According to the Jain text, *Sarvārthasiddhi*, "He who has passions causes injury to himself by himself. Whether injury is then caused to other living beings or not, it is immaterial. (Age 13 years)

-Chennai (T.N)

चिन्तन की मनोभूमि

संकलन : श्री सम्पतराज चौधरी

1. **गुरु–** विवेक ही वास्तव में गुरु तत्त्व है। मानव का अपना विवेक ही उसका अथवा सुधारक है, वही उसका गुरु है, वही उसका नेता है, वही उसका शासक है।

   -संतवाणी-5

2. **चिन्तन–** बल पूर्वक किये हुए सार्थक चिन्तन से व्यर्थ चिन्तन नष्ट नहीं होता, अपितु व्यर्थ चिन्तन के त्याग से सार्थक चिन्तन स्वतः जाग्रत होता है।

   -मानवता के मूल सिद्धान्त

3. **ज्ञान–** 'पर' के द्वारा 'स्व' का बोध न किसी को हुआ है और न होगा। *-मानव दर्शन*

4. असत् के ज्ञान में ही असत् के त्याग की सामर्थ्य निहित है। असत् का त्याग तथा सत् का संग युगपद् है। *-पाथेय*

5. **त्याग–** मृत्यु तो वस्तु का नाश करती है और त्याग वस्तु के सम्बन्ध का नाश करता है। मृत्यु का परिणाम जन्म है और त्याग का परिणाम अमरत्व है। *-चित्तशुद्धि*

6. **दान–** दान संग्रह करने का टेक्स है। *-संत सौरभ*

7. **परदोष दर्शन–** महापुरुषों के दोष नहीं देखने चाहिए। पहाड़ का गड्ढा भी जमीन से बहुत ऊँचा होता है। *- संत जीवन दर्शन*

-14, वरदान अपार्टमेंट, दिल्ली-110001

बाल-स्तम्भ

अन्तर क्या?

संग्राहक : श्री ज्ञानमुनिजी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 नवम्बर 2016 तक **जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.)** के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

जाओ और आओ का फर्क

एक गाँव में राधेलाल नाम का एक धनी किसान रहता था। उसके पास बहुत जमीन थी। उसके यहाँ बहुत-से आदमी काम करते थे। राधेलाल के दो पुत्र थे। दोनों पुत्र जब युवा हो गए तो उसने अपनी सारी जमीन और काम करने वाले आदमियों को दोनों में बराबर-बराबर बाँट दिया। राधेलाल का बड़ा बेटा बड़ा ही आलसी था। वह अपने आदमियों को आदेश देता- "जाओ, खेत में जाकर काम करो।"

आदमी खेतों में जाकर गप लड़ाते, मौज-मस्ती करते और वापस आ जाते। वे न तो समय पर खेत में बीज बोते, न सिंचाई करते। वह किसी भी दिन खेत पर नहीं जाता था। इस तरह फसल का उत्पादन धीरे-धीरे कम हो गया और वह गरीब हो गया।

इधर, राधेलाल का छोटा बेटा बहुत मेहनती था। वह अपने आदमियों को कहता- "आओ, खेत चलें और काम करें।" वह उन आदमियों के साथ बराबर की मेहनत करता था। समय से अधिक काम करने पर वह आदमियों को पुरस्कार भी देता था। इस कारण वे अपने मालिक से बहुत खुश थे। समय पर उसके खेत में बीज बोए जाते, सिंचाई की जाती और समय पर फसल पकने पर काट ली जाती। इसका परिणाम यह हुआ कि वह दिनोंदिन अमीर होता गया।

राधेलाल अपने पुत्रों की आदतों को जानता था। उसने एक दिन दोनों पुत्रों को बुलाया। उसने पहले अपने बड़े बेटे से कहा- "बताओ, तुम्हारे क्या हाल हैं?"

वह बोला- "पिताजी, मैं तो गरीब हो गया हूँ। तंगहाल जीवन जी रहा हूँ।"

इसके बाद राधेलाल ने छोटे पुत्र से कहा- "तुम सुनाओ, क्या हाल हैं?"

उसने जवाब दिया- "पिताजी, आपके आशीर्वाद से मुझे कोई कमी नहीं। दिन-दूनी, रात चौगुनी प्रगति हो रही है। मैं बहुत खुश हूँ।"

दोनों पुत्रों की बात सुनकर राधेलाल बोला- "मैंने तुम दोनों को बराबर का भाग दिया और यही तुम्हारा भाग्य था। तुम्हारे भाग्य में सिर्फ थोड़ा-सा अंतर रह गया। वह अन्तर है, 'जाओ और आओ' का। इसके कारण तुम दोनों के जीवन में बहुत बड़ा अंतर आ गया।"

बड़ा पुत्र बोला- "पिताजी, यह जाओ और आओ क्या है?"

राधेलाल बोला- "तुम अपने आदमियों से कहते हो, जाओ, काम करो। और तुम्हारा छोटा भाई कहता है, आओ, मिलकर काम करें।"

पिता की बात सुनकर बड़े पुत्र की आँखें खुल गई। उसने आलस्य त्याग कर दूसरे दिन से ही खेत में जाकर आदमियों के साथ काम करना शुरू कर दिया।

असली हीरा

रघुवीर नामक एक राजा बहुत ही ईमानदार, नेकदिल व कुशल शासक था। वह अपनी प्रजा की संतुष्टि के लिए हर संभव कोशिश करता था। वह वेश बदल कर अपनी प्रजा के दुःख-दर्द को समझता और उन्हें दूर करने का प्रयास करता।

एक दिन वह ऐसे ही वेश बदलकर घूम रहा था। घूमता-घूमता वह घने जंगल में पहुँच गया। जंगल में उसने देखा कि एक बूढ़ा लकड़हारा पसीने से लथपथ होकर लकड़ियाँ काट रहा है। तभी उसकी नज़र लकड़हारे के पास एक चट्टान से फूटती तेज रोशनी पर पड़ी। राजा की उत्सुकता जगी। वह रोशनी के करीब पहुँचा। वहाँ पहुँच कर वह दंग रह गया। उसने देखा कि जहाँ से रोशनी फूट रही थी, वहाँ बेशुमार हीरे दबे हुए थे, लेकिन लकड़हारे को उनसे कोई मतलब नहीं था। वह उनसे बेखबर अपने काम में लगा हुआ था। राजा लकड़हारे के पास जाकर बोला- "भाई! आपके नजदीक ही एक चट्टान में असंख्य हीरे धँसे पड़े हैं और उनकी रोशनी यहाँ तक पहुँच रही है। क्या आपको उन हीरों की जानकारी नहीं है? यदि आप इनमें से एक हीरा भी निकालकर बेच दें तो आप आजीवन बिना मेहनत किये अच्छे से अच्छा खा-पीकर अपना जीवन गुजार सकते हैं।"

राजा की बात पर लकड़हारे ने विनम्रतापूर्वक कहा- 'राजन्! ये हीरे मैं बरसों से यहाँ देख रहा हूँ। जब ईश्वर ने मुझे हाथ-पैर रूपी सजीव हीरे दिए हैं, तो बिना मेहनत किए

इन बेजान हीरों की मदद से अपना जीवनयापन क्यों करूँ? इन हीरों से मैं आलसी हो जाऊँगा और मेरे हाथ-पैर बेकार हो जाएँगे। मुझे कई बीमारियाँ घेर लेंगी। ऐसे में लाखों बेजान हीरे भी मेरी बीमारी को दूर नहीं कर पाएँगे।''

पुरुषार्थ ही मनुष्य को स्वास्थ्य, प्रसन्नता व लंबी आयु प्रदान करता है। वास्तव में पुरुषार्थ ही असली हीरा है। *-'ज्ञान रश्मियाँ' (भाग-4) से संकलित*

प्रश्नः-

1. राधेलाल का बड़ा पुत्र गरीब क्यों हो गया?
2. अमीर बनने का क्या सूत्र है?
3. 'आँखें खुलना' मुहावरे का वाक्य प्रयोग कीजिए।
4. असली हीरा क्या है?
5. लकड़हारे को हीरे की चाह क्यों नहीं थी?
6. 'पुरुषार्थ और स्वास्थ्य' विषय पर लघु निबन्ध लिखें। (8 पंक्तियों में)

बाल-स्तम्भ [अगस्त-2016] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2016 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'संस्कार-शाला' के प्रश्नों के उत्तर 37 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	कुसुम मुरड़िया-बल्लारी (कर्नाटक)	27.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	लक्की कांकरिया-बैंगलुरु (कर्नाटक)	27
तृतीय पुरस्कार- 200/-	आरोही एस. जैन-भुसावल (महा.)	26.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	नमन श्रेणिक छाजेड़-भुसावल (महा.)	26
	अभिषेक पालरेचा-जोधपुर(राज.)	26
	वैभव जैन-हिण्डौनसिटी (राज.)	26
	नमिता जैन-मसूदा-अजमेर (राज.)	25.5
	हर्षल छोरिया-नाशिक (महा.)	25

सामायिक उपकरण संघ कार्यालय में उपलब्ध

आपको सूचित करते हुए हर्ष है कि सामायिक उपकरण का सेट जिसमें दुपट्टी, चोलपट्टा, आसन, मुँहपत्ती, पूंजणी, माला तथा प्रतिक्रमण की पुस्तक सम्मिलित है, संघ कार्यालय में लागत मूल्य से भी कम **रियायती दर पर 200/- रुपये** में उपलब्ध है। *-पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ*

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

समकित छप्पनी का विवेचन (सम्यक्त्व स्थिरीकरण)- अज्ञातकर्तृक विवेचक- आचार्य उमेशमुनिजी 'अणु', ***प्रकाशक***- पूज्य श्री नन्दाचार्य साहित्य समिति, मेघनगर, जिला-झाबुआ-457779 (मध्यप्रदेश), फोनः 07390-284548, मोबाइलः 094254-86548, ***पृष्ठ***-14+434, ***मूल्य***- 30 रुपये, सन् 2014

नवतत्त्वों की यथातथ्य श्रद्धा करना समकित है। यह समकित जीव में उत्पन्न होने के बाद पुनः मलिन हो जाती है। अतः समकित की प्राप्ति और प्राप्त समकित की रक्षा व वृद्धि के दो तरह के उपाय होते हैं- प्रवृत्त्यात्मक और निवृत्त्यात्मक। इन दोनों उपायों का वर्णन प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है। जीव में समकित के क्या लक्षण होते हैं, उसका व्यवहार कैसा होता है आदि बातें 'सम्यक्त्व के सड़सठ बोल' में कही गई हैं। परन्तु समकित छप्पनी में विस्तार से समकित प्राप्ति के समस्त उपायों से लेकर समकित को मलिन करने वाले प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारणों को भी बतलाया गया है।

समकित छप्पनीकार ने आठ दर्शनाचारों का उल्लेख किया है। थांदला से प्रकाशित 'धर्म-धरा' नामक मासिक पत्रिका में समकित छप्पनी के विवेचन का धारावाहिक प्रकाशन किया गया था। उसी धारावाहिक का रूपान्तरण यह पुस्तक है। इसमें सत्रह द्वार के अन्तर्गत दुर्लभ चार अंग, आरम्भ-परिग्रह त्याग, चार वाद, ज्ञेय-हेय-उपादेय का स्वरूप, सम आदि लक्षण, श्रद्धा आदि त्रिक , दस संज्ञा, दस रुचि, समकित-भेद, आचार, अतिचार, सम्यक्त्व नाश के 28 हेतु, व्यवहार सम्यक्त्व के चार भेद, तीन आयतन, आगार, स्वभाव, बारह विरद विषयक विवेचन हुआ है।

इस छप्पनी के पद्य राजस्थानी भाषा में हैं। ये सभी पद्य सरल, सहज एवं गेय हैं। विवेचनकार ने प्रत्येक पद्य का विवेचन निम्न शीर्षकों में किया है- 1. अर्थ, 2. पारिभाषिक शब्दों के अर्थ, 3. विमर्श- (अ) शब्द विमर्श, (आ) शब्दार्थ विमर्श, (इ) वाक्यार्थ विमर्श, (ई) भावार्थ-विमर्श। 4. आर्ष वचन- आगमों के प्रमाण , 5. कवि की प्रेरणा और 6. भावना। अर्थ सहज गम्य है। पारिभाषिक शब्दों का गम्भीरता से विश्लेषण किया गया है।

शब्द विमर्श के अन्तर्गत एक-एक शब्द को लेकर धातु, प्रत्ययादि के साथ निष्पन्नता को बताया गया है। प्रत्येक पद्य में आए वाक्यों का विभाजन कर उसका गहराई से अर्थ समझाया गया है। सभी अपेक्षाओं से भावार्थ को अवगत कराने का प्रयास किया गया है, दशवैकालिक, ठाणांग, आचारांग, उत्तराध्ययन आदि जिन आगमों में इनकी प्रामाणिकता के कथन हैं, वे सभी प्रस्तुत करने का स्तुत्य प्रयास किया गया है। प्रेरणा के अन्तर्गत पाठक को पद्य का मर्म जानने का अवसर मिल जाता है। पूर्ण रूप से पद्य को पूर्व में प्रस्तुत विवेचन से समझकर कैसी भावनाएँ हमारे भीतर उत्पन्न हों, इसका लेखन भी विवेचनकार ने करके पाठकों के लिए भावनाओं को क्रियान्विति योग्य बना दिया है।

यह पुस्तक साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, स्वाध्यायियों के लिए बहुत उपयोगी है। विवेचक ने समकित छप्पनी के माध्यम से अज्ञातकर्तृक को ज्ञात करवा दिया है।

आत्म-उत्थान का मार्ग (भाग 2)- लेखक- श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य, ***हिन्दी सम्पादक***- आचार्य श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराज ***प्रकाशन*** - दिव्य सन्देश प्रकाशन, द्वारा- सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेम्बर्स, 507-509, जे.एस.एस. रोड़, चीरा बाजार, सोनापुर गली के सामने, मरीन लाईंस (पूर्व), मुम्बई-400002, फोनः 022-22034529, मोबाइलः 98920-69330, ***पृष्ठ***-26+276, ***मूल्य***- 175 रुपये मात्र, सन् 2016

'आत्म उत्थान नो पायो' गुजराती पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद है। मुनि प्रशान्तरत्नविजयजी ने इसका अनुवाद किया तथा सम्पादन श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराज द्वारा किया गया। 210 विषयों पर लघु निबन्धों के रूप में अपने अनुभवों के साथ लेखक ने प्रस्तुति दी है। उसमें से कतिपय विषय इस प्रकार हैं- भक्ति से अहं का नाश, नमस्कार में नवधा शक्ति, अनित्य का विचार, पूर्णता की दृष्टि ही प्रेम का लक्षण, प्रसन्नता का दान, कृतज्ञता गुण का अभ्यास, अहिंसा की अनुभूति, अनेकान्त, सद्वृत्ति की नींव, नयवाद की उपयोगिता, स्याद्वाद की सार्वभौमिकता, स्याद्वाद को जीवन में अपनाएँ, सामायिक रहस्य, सच्ची सामायिक, यथार्थ दर्शन आदि।

उपदेश प्रासाद- श्री विजयलक्ष्मीसूरीश्वरजी म.सा., ***सम्पादक***- आचार्य श्री जयानन्द सूरीश्वरजी म.सा., ***हिन्दी अनुवाद***- श्री रैवतचन्द्रविजयजी महाराज, ***प्रकाशन*** - गुरुश्री रामचन्द्र प्रकाशन समिति, भीनमाल, प्राप्ति स्थान- महाविदेह भीनमाल धाम, तलेटी हस्तगिरि लिंक रोड, पालिताणा-364270, फोनः 02848-243018, ***पृष्ठ***-438+12, ***मूल्य***- उल्लेख नहीं, सन् 2016

प्रस्तुत पुस्तक में 90 व्याख्यानों का संकलन है, जिन्हें छह स्तम्भों के अन्तर्गत

समाहित किया गया है। इसमें 34 अतिशयों का वर्णन, सम्यक्त्व, सम्यग्दर्शन, श्रद्धा, विनय, मन-शुद्धि, वचन-शुद्धि, काय-शुद्धि, सम्यक्त्व के दोष, प्रवचन-प्रभावक, वाद के योग्य पुरुष, निर्वेद, छह आगार, सम्यक्त्व की छः भावनाएँ, सम्यक्त्व के छः स्थान, श्रावक व साधु की जीव दया, हिंसा-असत्य-चोरी-ब्रह्मचर्य, इन व्रतों का स्वरूप, भेद-प्रभेद, अतिचार आदि का वर्णन किया गया है। उपर्युक्त विषयों के प्रतिपादन में कथाओं का आश्रय लिया गया है, जिससे यह ग्रन्थ सुग्राह्य हो गया है। विषयानुक्रमणिका नहीं होने से पाठक को अपने वांछित विषय को पढ़ने में कष्ट सम्भाव्य है।

मन के विचारों को, मैला न कीजिये

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

मन के विचारों को, मैला न कीजिये, मैला न कीजिये,
मन को अपने, सद्ज्ञान दीजिये, सद्ज्ञान दीजिये। मन के विचारों ।।टेर।।

पवित्र विचारों से, आत्मा सजेगी,
खुशियों की बंशी, निशदिन बजेगी।
विकारों के बादल, सभी हटा दीजिये, सभी हटा दीजिये।।1।।

भरोसा न करना, यह धोखेबाज है,
इसको समझना, बड़ा कठिन काज है।
दृष्टि को अपने, सही दिशा दीजिये, सही दिशा दीजिये।।2।।

चारों तरफ है, चकाचौंध भारी,
माया का मानव, बना है पुजारी।
विचारों में तूफां, मत आने दीजिये, मत आने दीजिये।।3।।

फैशन-व्यसन का, है बोल बाला,
मन यह भटकता है, गर इसे न संभाला।
धर्म की डोर से, इसे बांध दीजिये, इसे बांध दीजिये।।4।।

विचारों पर निर्भर है, जीवन विकास है,
भावना यदि निर्मल हो, मंज़िल भी पास है।
साधना की राहों पर, कदम बढ़ा लीजिये, कदम बढ़ा लीजिये।।5।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की थोकड़ा परीक्षा का परिणाम घोषित

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 24 जुलाई 2016 को आयोजित कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। परीक्षा परिणाम सम्बन्धी सूचना सभी परीक्षार्थियों को SMS द्वारा भिजवाई जा चुकी है। केन्द्राधीक्षकों को सम्बन्धित परीक्षार्थियों के प्राप्तांकों की सूची भी भेजी जा चुकी है। जिन परीक्षार्थियों ने वरीयता सूची में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित हैं-

अस्थायी वरीयता सूची

(प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
98608	आराधना मनीषजी गुलेच्छा	पाली (राज.)	99.75	प्रथम
98868	मीना गौतमचन्दजी तातेड़	अहमदाबाद (गुजरात)	99.50	द्वितीय
97648	दिव्या नमनकुमारजी जैन	अहमदाबाद (गुजरात)	99.25	तृतीय

(द्वितीय कक्षा)

94747	मीनल हितेशजी लोढ़ा	आलन्दी (पुणे)	99.50	प्रथम
95570	सपना प्रवीणजी संचेती	वैजापुर (महा.)	99.00	द्वितीय
94850	सुरेखा हसमुखजी जैन	विश्रांतवाडी (पुणे)	98.50	तृतीय

(तृतीय कक्षा)

95264	आरती श्रेणिककुमारजी भटेवरा	पोलूर (चेन्नई)	99.50	प्रथम
93664	मीना नरेन्द्रजी चौधरी	वैलूर (चेन्नई)	99.25	द्वितीय
91329	सरीता गौतमकुमारजी लुंकड़	फूलगाँव (महा.)	99.00	तृतीय

(चतुर्थ कक्षा)

90310	वन्दना अजयजी कांसवा	हिंगनघाट (महा.)	99.00	प्रथम
96547	शैला मनोजजी रैदासनी	लासलगांव (महा.)	98.50	द्वितीय
89957	रंजना शान्तिप्रकाशजी ओसवाल	गंज वासौदा (म.प्र.)	98.00	तृतीय

(पाँचवी कक्षा)

83275	सुभाष सागरमलजी जैन	केलिफोर्निया (अमेरिका)	99.00	प्रथम
86170	प्रियांशी सुरेशचन्दजी जैन	खेरली (राज.)	97.50	द्वितीय
84379	शान्तादेवी रणजीतसिंहजी पीपाड़ा	कालानी नगर (इन्दौर)	97.00	तृतीय

(छठी कक्षा)

81552	कोमल सौरभजी चौपड़ा	शक्तिनगर-जोधपुर	97.00	प्रथम
86022	वीना अनीलजी मेहता	इन्दौर (मध्यप्रदेश)	95.25	द्वितीय
81782	शिल्पा गौतमचन्दजी रांका	हिंगनघाट (महा.)	94.50	तृतीय

(सातवीं कक्षा)

76674	सरुचि रोहितजी जैन	दिल्ली	98.00	प्रथम
62847	सरिता शिवकुमारजी संकलेचा	अमरावती (महा.)	97.00	द्वितीय
59840	नीलम दिलीपजी लुंकड़	वेस्ट सैदापेट (चेन्नई)	96.00	तृतीय

(आठवीं कक्षा)

77935	सरोज मुकेशजी बोहरा	तिरुकोइलूर (चेन्नई)	98.25	प्रथम
79065	बबीता महेन्द्रकुमारजी बाफना	जलगांव (महा.)	97.50	द्वितीय
74893	दीपिका आशीषजी पगारिया	वीरगुमबाकम (चेन्नई)	95.50	तृतीय

(नवमीं कक्षा)

64615	खुशी नेमीचन्दजी कटारिया	पीपाड़सिटी (राज.)	98.00	प्रथम
57571	निधि रितेशजी सुराना	हिंगनघाट (महा.)	96.00	द्वितीय
60372	मोनिका अशोकचन्दजी तपरावत	सालाइयूर (चेन्नई)	95.00	तृतीय

(दसवीं कक्षा)

58915	दीपिका हरीशकुमार जैन	अलीगढ़ (राज.)	92.50	प्रथम
52594	प्रभा प्रमोदकुमारजी मारू	बारां (राज.)	91.50	द्वितीय
70243	सुरभि सुदेशकुमारजी लुंकड़	जालना (महा.)	90.00	तृतीय

(ग्यारहवीं कक्षा)

98287	संगीता महेन्द्रजी बोहरा	ए.जी.जैन स्कूल (चेन्नई)	97.50	प्रथम
57211	कल्पना कांतिलालजी चोरड़िया	भुसावल (महा.)	96.00	द्वितीय
63501	प्रमिला भागचन्दजी छाजेड़	पुणे (महा.)	94.00	तृतीय

(बारहवीं कक्षा)

80456	माधुरी जिनेन्द्रकमारजी जैन	आगरा (उत्तरप्रदेश)	97.50	प्रथम
62106	आशा प्रसन्नकुमार दुग्गड़	न्यू वाशरमैन पेठ (चेन्नई)	88.00	द्वितीय
72492	कान्ता उत्तमचन्दजी खिंवसरा	बडनेरा (महा.)	84.00	तृतीय

बोर्ड की आगामी परीक्षा जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़े) की कक्षा 1 से 8 के लिए **08 जनवरी 2017** को हिन्दी माध्यम में आयोजित होगी। बोर्ड की आगामी परीक्षा कक्षा 1 से 12 तक के लिए **16 जुलाई 2017** को 12.30 से 3.30 बजे तक हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती माध्यम में आयोजित होगी। परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर (राज.)- फोनः 0291-2630490, फैक्सः 2636763, Website : jainratnaboard. com, E-mail:shikshanboardjodhpur@gmail.com

आवेदक	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत	कुल केन्द्र
7346	4881	3401	69.68%	303

अशोक चोरडिया	**नवरतन गिड़िया**	**धर्मचन्द जैन**
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार
9414129162	9414100759	9351589694

पर्युषण-रिपोर्ट

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 450 स्वाध्यायियों द्वारा 157 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत 70 वर्षों से, जैन संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम/नगरों में विद्वान्, क्रियावान, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के लगभग 1200 स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए इस संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी हैं जो व्यावाहारिक जगत् में न्यायाधिपति, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, इंजीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, शिक्षक आदि प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होते हुए भी अपनी बहुमूल्य सेवाएँ संघ को प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड, एल.एल.बी., पी-एच.डी. एवं एल.एल.एम. जैसी विशिष्ट उपाधियों से अलंकृत हैं।

इस वर्ष पर्युषण पर्व दिनाँक 30 अगस्त से 06 सितम्बर, 2016 तक मनाए गए। पर्वाराधन में उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में मेवाड़-मारवाड़, पोरवाल-पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े, दूर व निकट के 157 क्षेत्रों में लगभग 450 स्वाध्यायियों ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की।

सभी स्थानों पर सामायिक, दया-संवर, उपवास-पौषध तथा छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ बहुतायत संख्या में सम्पन्न हुई। स्वाध्यायियों द्वारा सभी स्थानों पर ज्ञानवृद्धि हेतु शिविर तथा अन्य कार्यक्रमों के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गई।

महाराष्ट्र क्षेत्र

01	मुम्बई	-	श्री धर्मचंद जी जैन- जोधपुर
			श्री जम्बूकुमार जी जैन-जयपुर
			श्री अशोककुमार जी जैन-जयपुर
			विरक्त बन्धु श्री अंकित जी जैन -निमाज
			सौ. निर्मला जी बांठिया-पाचोरा
02	वाकोद	-	सौ. शकुंतला जी कटारिया-जलगांव
			सौ. कान्ता जी भंसाली-जलगांव
03	भराड़ी	-	श्री रमेश जी भंसाली-फत्तेपुर
			श्री विजय जी रांका-फत्तेपुर

04	रालेगांव	-	सौ. किरणबाई जी कोठारी-बोदवड़
			सौ. रत्नाबाई जी धोका- बोदवड़
05	धरणगांव	-	सौ. मीनल जी समदड़िया-जलगांव
			सौ. कांता जी जैन-जलगांव
			सुश्री रूपालीजी अलीझाड़- धुलिया
06	कासारे	-	श्रीमती सुशीला जी पगारिया-धरणगांव
			सौ. कल्पना जी पगारिया-जलगांव
07	जायखेड़ा	-	श्री रितेश जी सुराणा-जलगांव
			श्री नरेश जी कांकरिया-जलगांव
08	ताहाराबाद	-	श्री प्रकाश जी बांठिया-पाचोरा
			श्री सचिन जी देड़िया-वरणगांव
09	सौंदाणा	-	सौ. शोभा जी लुणावत-भड़गांव
			सौ. मंजुला जी लुणावत-भड़गांव
			सुश्री हर्षा जी लुणावत-भड़गांव
10	नागद	-	सौ. चंदा जी कांकलिया-जलगांव
			सौ. सरला जी दुधेड़िया-जलगांव
			सौ. सुनन्दा जी सांखला-जलगांव
11	कजगांव	-	सौ. सुरेखा जी चौरड़िया-पाचोरा
			सुश्री राखी जी कर्णावट- सौंदाणा
			सौ. अंजली जी डोसी-जलगांव
12	भड़गांव	-	श्रीमती ललिताजी कटारिया-जलगांव
			श्रीमती तारा जी जैन-जलगांव
			सुश्री रूचिता जी समदड़िया-जलगांव
13	सतारा	-	श्री दीपचंद जी बोथरा-पाचोरा
			श्रीमती चंद्रमाला जी गांधी-भण्डारा
			सौ. पुष्पा जी छाजेड़-करही
14	मुक्ताईनगर	-	श्री मुकेश जी चोरडिया-पारोला
			डॉ. निलेश जी चोरडिया-पारोला
			श्री कल्याणमल जी धाडीवाल-कजगांव
15	हीरापुर	-	सौ. निर्मला जी दुधेडिया-जलगांव
			सौ. लता जी मुथा-नाशिक
16	चिंचाला	-	श्री महावीर जी धोका-बीड़
			श्री राहुल जी बरड़िया-बोदवड़
17	वरणगांव	-	श्रीमती विजया जी मल्हारा-जलगांव

			सौ. छाया जी मल्हारा-जलगांव
			सौ. सुरेखा जी सांखला-जलगांव
18	वरखेडी	-	सौ. शकुंतला जी संचेती-जलगांव
			श्रीमती लीलाबाई जी आंचलिया-जलगांव
			सौ. उषा जी कटारिया-जलगांव
19	कासमपुरा	-	सौ. चन्द्रकला जी कांकरिया-जलगांव
			सौ. मोहिनी जी मुणोत-जलगांव
20	मांगलादेवी	-	श्रीमती बेबीबाई जी कोचर-वड़जी
			श्रीमती उषा जी चोरडिया-भड़गांव
21	रत्नागिरी	-	सौ. छाया जी भंडारी-जलगांव
			सुश्री अमृता जी भंडारी-जलगांव
			सौ. अंशुमा जी चोरडिया-जलगांव
22	तोंडापुर	-	सौ. सरला जी बम्ब- भड़गांव
			सुश्री प्रेरणा जी ललवाणी-सिल्लोड
			सुश्री वनश्री चोरडिया- भड़गांव
23	फत्तेपुर	-	श्री प्रकाशचंद जी जैन-जयपुर
			सुश्री जागृति जी भंडारी-घोटी
			सुश्री सोनम पोरवाल-जामनेर
			श्री सुशील जी धोका-जलगांव
			सुश्री आकांक्षाजी लोढ़ा-जलगांव
24	बड़नेरा	-	सौ. रसीला जी बरड़िया-जलगांव
			सौ. मीना जी रांका-जलगांव
			श्री रोशन जी चौपड़ा-जलगांव
			सुश्री मीनलजी रायसोनी-जलगांव
25	पलासखेड़ा	-	सौ. देवबाला जी जैन-ठाणे
			सौ. सुशीला जी धाडीवाल-जलगांव
26	उम्बरखेड़	-	श्रीमती उषा जी कोठारी-जलगांव
			सौ. प्रेमलता जी डाकलिया-जलगांव
			सौ. चन्द्रकला जी सुराणा-जलगांव
27	पिलखोड़	-	सौ. सरला जी कांकरिया-जलगांव
			सौ. मेघा जी सिंघवी-जलगांव
			श्रीमती विमला जी सुराणा-जलगांव
28	महाड़	-	श्री राजमल जी संचेती-अमलनेर
			श्री ललित जी चोरडिया- शिरपुर

29	नरडाणा	-	सौ. अनिता जी लुंकड़-जलगांव
			सौ. अनुपमा जी छाजेड़-अमलनेर
			सौ. मीना जी सिंघवी-जलगांव
30	इच्छापुर	-	सौ. लता जी बनवट-जलगांव
			सौ. मंदा जी बरडिया-जलगांव
			सौ. ललिता जी बोथरा-जलगांव
31	वाघली	-	सौ. विमला जी चोरडिया-जलगांव
			सौ. लता जी बोथरा-जलगांव
			सौ. सुरेखा जी कांकरिया-जलगांव
32	निफाड	-	श्री मनोज जी संचेती-जलगांव
			श्री राजेन्द्र जी कावड़िया-जलगांव
			श्री सुरेश जी विनायकिया-जलगांव
33	नसीराबाद	-	श्री माणकचंद सा गादिया- चालीसगांव
			सौ. प्रमिला जी गादिया-चालीसगांव
			सुश्री चंदना जी गादिया-चालीसगांव
34	मुकटी	-	सौ. तिलोतमा जी ओस्तवाल-भड़गांव
			सौ. मायाजी श्रीश्रीमाल-भड़गांव
			सौ. इन्द्रा जी बोहरा-चेन्नई
35	केलशी	-	श्री महावीर जी आंचलिया-मुम्बई
			श्री तुषार जी संकलेचा-पूना
36	नागपुर	-	श्री मोहनलाल जी पीपाड़ा-इंदौर
			श्री राजेन्द्र जी ओरा-इंदौर
37	कसबे सुकेना	-	श्रीमती कमलाबाई जी पगारिया-धरणगांव
			सुश्री दीपाली जी खिंवसरा-मुकटी
			सुश्री सोनाली जी मुथा-धरणगांव
38	चिखली	-	सौ. पुष्पा जी बनवट-जलगांव
			सौ. कंचन जी भंसाली-जलगांव
			सौ. सीमा जी पारख-जलगांव
39	लोहारा	-	सौ. बसंताबाई जी संकलेचा-जलगांव
			श्रीमती ताराबाई जी चोरडिया-नाशिक
40	विटनेर	-	मधुबाला जी मनन-जलगांव
			सौ. संतोषीबाई जी सिसोदिया-चिखली
41	वालुज	-	सौ. स्नेहा जी चोरडिया-जलगांव
			सौ. नम्रता जी चोरडिया-जलगांव

दक्षिण क्षेत्र

42	आलन्दुर	-	श्री सुभाष जी हुण्डीवाल-जोधपुर
			श्री मनोज जी सेठिया-चेनई
			श्रीमती मंजू जी टपरावत-चेनई
43	अम्बात्तुर	-	श्री सुमेरचंद सा बाघमार-चेन्नई
			श्री निर्मल जी बाघमार-चेन्नई
			श्री ज्ञानचंद जी बाघमार-चेन्नई
44	अंकुरवानी	-	श्री सुनील जी सांखला-चेन्नई
45	आरकाट	-	श्री लूणकरण जी सेठिया-चेन्नई
			श्री अशोक जी बाफना-चेन्नई
			श्रीमती आशा जी कोठारी-जलगांव
46	आवडी	-	श्रीमती उषा जी बोहरा-जोधपुर
			सुश्री पूजा जी तातेड़-चेन्नई
47	चित्तुर	-	श्रीमती विमला जी चोरडिया-किलपाक,चेन्नई
			सुश्री नेहा जी बोथरा-किलपाक, चेन्नई
48	चेटपेट	-	श्री पारसचन्द जी जैन-नैनवा
			श्री रामपाल जी गोयल-देई
49	चिंतादरीपेट	-	श्रीमती कंचन जी मुथा-भोपालगढ़
			श्रीमती चंदनबाला जी जैन-सेलम
			श्री मनीष जी जैन-चेन्नई
50	कोयम्बटूर	-	श्री शिखरचंद जी छाजेड़-करही
			श्री विमलचंद जी तातेड़-करही
			श्रीमती संगीता जी बोहरा-चेन्नई
			श्रीमती प्रेमलता जी बाघमार-चेन्नई
51	कडलूर	-	श्री जवाहरलाल जी कर्णावट-चेन्नई
			श्री महावीरचन्द जी लोढ़ा-चेन्नई
52	गुडियात्तम	-	श्रीमती मोहनीदेवी जी जैन-आलनपुर
			सुश्री खुशबुजी पारख-पीपाड़ शहर
53	गुम्मीडिपुंडी	-	श्रीमती मोहनीदेवी जी कच्छवाह-जोधपुर
			श्री दीपक जी श्रीश्रीमाल-चेन्नई
			श्री निखिल जी कांकरिया-चेन्नई
			सुश्री राखी जी पारख-पीपाड़ शहर
54	होसुर	-	श्री महावीरचन्द जी बाघमार-चेन्नई

			श्री राकेश जी खिंवसरा–चेन्नई
			श्री प्रेम जी बाफना–चेन्नई
55	कडम्बातुर	–	श्री सौभागमल जी जैन–बजरिया
			श्री विमलकुमार जी जैन–खोह
56	कालाडीपेट	–	श्रीमती प्रियदर्शनाजी जैन–आवासन मण्डल सवाईमाधोपुर
			सुश्री सलोनी जी छाजेड़–चेन्नई
			सुश्री यशवाणीजी डाकलिया–चेन्नई
57	कोलीडम	–	श्रीमती रूपादेवी जी जैन–बजरिया
			श्रीमती तारादेवी जी बाघमार–चेन्नई
58	मनली	–	श्रीमती कंचन जी रांका–जोधपुर
			श्रीमती शोभा जी कवाड़–आवड़ी, चेन्नई
59	मिरसाहिबपेठ	–	श्री फूलचंद जी मेहता–उदयपुर
			श्री रविन्द्र जी बोथरा–चेन्नई
60	मुगरपेट	–	श्रीमती मोहनकौर जी जैन–जोधपुर
			श्रीमती रेखा जी मेहता–जोधपुर
61	नुगमवाकम	–	श्री दिनेश जी नाहटा–नगरी
			श्री अनिल जी ढ़ेलड़िया–नगरी
62	पल्लीपेट	–	श्री धर्मचंद जी जैन–खेरली
			श्री रिखबचंद जी बाघमार–चेन्नई
63	पेरन्गलाथुर	–	श्री धर्मचंद जी जैन–कुश्तला
			श्री रवि जी मुथा–जोधपुर
64	पोल्लुर	–	श्री विमलचंद जी मुथा–पल्लीपेट
			श्री नीरज जी जैन–चौथ का बरवाड़ा
65	पल्लावरम	–	श्री सुरेश जी हिंगड़–चेन्नई
			श्री गौतमचंद जी लोढ़ा–चेन्नई
66	सैदापेट	–	श्री विरेन्द्र जी कांकरिया–चेन्नई
			श्री सुनील जी ललवाणी–चिंतादरीपेठ, चेन्नई
			श्री प्रसन्नचंद जी भण्डारी–वडपलनी, चेन्नई
67	शेनॉय नगर	–	श्री राजेन्द्र जी बाघमार–चेन्नई
68	श्री कालाहस्ती	–	श्री नवरतनमल जी चोरडिया–चेन्नई
			श्री महावीरचन्द जी तातेड़–चेन्नई
69	स्वाध्याय भवन, साहुकारपेट, चेन्नई	–	श्री विनोद जी जैन–चेन्नई
70	तिरूपति	–	श्री रमेश जी जांगड़ा–चेन्नई

			श्रीमती सज्जनबाई जी बोहरा-चेन्नई
71	तिरूवनमियूर	-	श्री नेमीचंद जी कर्णावट-भोपालगढ़
			श्री भंवरलाल जी लोढ़ा-चेन्नई
			श्री विनय जी जैन-चेन्नई
72	उलुन्दरपेट	-	श्री महावीरप्रसाद जी जैन-बजरिया
			श्री महेन्द्रकुमार जी जैन-खेरली
73	विरगम्बाक्कम	-	श्रीमती सुशीला जी गुलेच्छा-जोधपुर
			श्रीमती पुष्पा जी चतुर-क्रोमपेट, चेन्नई
74	विजयवाड़ा (एक माह)	-	श्री शान्तिलाल जी गांधी-सिंगोली
			श्री संजय जी देशलहरा-इंदौर
			श्रीमती पुष्पा जी मेहता-पीपाड़ शहर
			श्रीमती शकुंतला जी जैन-पीपाड़ शहर
			मधुबाला जी मनन-जलगांव

मध्यप्रदेश क्षेत्र

75	सिद्धिगंज मगरदा	-	श्री त्रिलोकचंद जी सुराणा-इंदौर
			श्री रमेश जी संचेती-इंदौर
76	आकोदिया मण्डी	-	श्री शुभम जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री अरविंद जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री अमन जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
77	कालुखेड़ा	-	श्री इंद्रचंद जी कोठारी-भीलवाड़ा
78	छिंदवाड़ा	-	श्री विलास जी कोचर-फत्तेपुर
		-	श्री निलेश जी वेदमुथा-नागद
79	बांगली	-	श्री अक्षत जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री रितिक जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री अजय जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
80	करही	-	श्री हस्तीमल जी डोसी- मेड़ता सिटी
			श्री हंसराज जी चौपड़ा-गोटन
			विरक्त बंधु श्री जिनेन्द्र जी जैन-निमाज
81	हातोद	-	श्री राकेश जी जैन-सुमेरगंज मण्डी
			श्री अंकित जी जैन-बजरिया, सवाईमाधोपुर
82	सिवनी मालवा	-	श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर
			श्रीमती सरला जी भण्डारी-जोधपुर
83	चांगोटोला	-	श्री सुभाष जी कोठारी-माजलगांव
			सुश्री पूनम जी पोरवाल-जामनेर

			सुश्री भावनाजी वेदमुथा-जामनेर
84	जबलपुर	-	डॉ. वर्धमान जी लोढ़ा-मालेगांव
			श्री अतुलकुमार जी मुणोत-जबलपुर
			सौ. उषा जी लोढ़ा-मालेगांव
85	बैतुल	-	श्री संजय जी देशहलहरा-इंदौर
			श्री मयंक जी जैन-इंदौर
86	गरोठ	-	श्री पारस जी भटेवरा-इंदौर
			श्री मुकुल जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री प्रदीप जी जैन-सिद्धांतशाला, जयपुर
87	वाशिम	-	श्री जिनेन्द्र जी जैन-मुम्बई
			श्री चन्द्रकांत जी हिरण-कंजगांव
			श्री धर्मेन्द्र जी मुणोत-अमरावती

मेवाड़ क्षेत्र

88	दरीबा माईन्स	-	श्री बाबूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री दिनेशकुमार जी जैन-सवाईमाधोपुर
89	अरनोदा	-	श्री बाबुलाल जी जैन-बजरिया
			श्री रामप्रसाद जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
90	आदित्यपुरम	-	श्री हरकचंद जी जैन-बजरिया
			श्री श्यामसुंदर जी जैन-आ.मण्डल,सवाईमाधोपुर
91	आजादनगर भीलवाड़ा	-	श्री पंकज जी चौधरी-भीलवाड़ा
92	चान्दरास	-	श्री कमलेशकुमार जी जैन-देई
			श्री नन्दलाल जी जैन-उनियारा
93	बाड़ी	-	श्रीमती आशा जी जैन-बजरिया
			सुश्री निकिता जी जैन-कुश्तला
			श्री महेन्द्रकुमार जी जैन-सवाईमाधोपुर
94	सांवरिया मण्डपिया	-	श्री पवनकुमार जी जैन-अलीगढ़
			सुश्री पूजा जी जैन-अलीगढ़
			सुश्री वृतिका जी जैन-सवाईमाधोपुर
95	धनोप	-	श्री मानमल जी लसोड़-प्रतापगढ़
			श्री अभयराज जी चण्डालिया-प्रतापगढ़
96	नीमच सिटी	-	श्री महावीर जी जैन-वाकोद
			श्री विवेक जी सुराणा-सिद्धांतशाला, जयपुर
			श्री आदेश जी भण्डारी-सिद्धांतशाला, जयपुर

(क्रमशः)

समाचार विविधा

आचार्य हीरा का वर्षावास, निमाज भूमि पर सिंहनाद। मासखमण नवरंगी सह तप, संयम का हुआ निनाद।।

महासती गरिमाश्रीजी सहित तीन मासखमण

श्राविकामण्डल, श्रावकसंघ एवं युवक् परिषद् के अधिवेशन सम्पन्न

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** प्रभृति संतवृन्द ठाणा 6 एवं **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.** आदि ठाणा 4 की चरण सन्निधि पाकर समूचा मारवाड़-मेरवाड़ा क्षेत्र प्रमुदित है, उल्लसित है। बड़े भाग्य से ही ऐसे महापुरुषों के पावन वर्षावास का सुयोग मिलता है।

30 अगस्त को पर्वाधिराज पर्युषण के प्रथम दिवस ज्ञान दिवस से सिद्ध पद की आराधना व नवकार मंत्र के आठ दिवसीय अखण्ड जाप का शुभारम्भ हुआ। पर्युषण पर्व में प्रातः प्रार्थना श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने करवायी। प्रवचन प्रातः 8.30 से 12.30 तक के मध्य चला। श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. अंतगडदसा सूत्र का वाचन प्रथम प्रहर तक तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा., तपस्विनी व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. या उनकी सहवर्ती सतियाँजी, महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की अमृतमयी वाणी का वर्षण हुआ। दोपहर 2 से 3 बजे तक कल्पसूत्र का वाचन श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा. एवं उववाई सूत्र का स्वाध्याय व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. द्वारा किया गया। उभयकाल प्रतिक्रमण व संवर-पौषधोपासना में प्रमोदजन्य उपस्थिति रही। भाई-बहिनों की पृथक्-पृथक् नवरंगी की आराधना वालों का उत्साह प्रमोदनीय रहा। निर्धारित संख्या से अधिक भाई-बहिनों ने नौ ही दिन आराधना का लक्ष्य रखा। प्रवचनामृत में फरमाया कि इन आठ दिनों में संसार के पदार्थों से उदासीन रह निर्मोही बनना है। पुरुषार्थ कर हम भी आराधक बन सकते हैं। अपना समय भाग्य कोसने में नहीं, भाग्य निर्माण में लगाकर भाग्य निर्माता बनें। **'उट्ठिए नो पमायए'** प्रमाद छोड़कर आराधना के पर्व पर आत्मा को आत्मा से देखें। यह पर्व सार्वभौमिक, सार्वदेशिक, सार्वकालिक,

सार्वजनीन है। पर्व क्या? 'पूरयति इति पर्व' जो गुणों से पूर्ण करता है, वह पर्व है। हम अपने गुणों से पूर्ण होने के लिये ज्ञान ग्रहण कर आराधना का अभ्यास कर साधना पथ पर चरण बढ़ायें।

पर्युषण के आठ दिनों में धर्माराधना का ठाट रहा। सन्तों के प्रवचन, दया-संवर एवं तपाराधन के साथ श्रावक-श्राविकाओं ने निमाज में रहकर आत्म-साधना की। श्रीमती राजकुमारीजी धर्मसहायिका श्री वसंतकुमारजी मुथा-पाली वालों ने पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पावन मुखारविन्द से 05 सितम्बर को 28 में 2 मिलाकर 30 दिवसीय मासक्षपण की तपस्या के प्रत्याख्यान लिये।

आचार्यप्रवर ने संवत्सरी पर्व पर प्रवचन फरमाने के अनन्तर क्षमायाचना करते हुए कहा- "प्रवचनादि में कठोर वचन कहने में आया हो तो मेरी ओर से एवं गौचरी आदि प्रसंग से संतों की ओर से या सतियाँजी की ओर से कहने सुनने में आया हो तो संवत्सरी सम्बन्धी मिच्छामि दुक्कडं।"

दोपहर 2 से 3 बजे तक आचार्य पट्टावली परम्परा में सुधर्मा स्वामी से लेकर वर्तमान में 82 वें पट्टधर तक श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा. ने सविस्तार कार्यकाल सहित विशेष महनीय शासन प्रभावना में रहे योगदान पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा. ने बृहदालोयणा सविधि सस्वर करवाकर शुद्धि करवाई।

संवत्सरी महापर्व पर प्रवचन-स्थल लगभग पूरा भरा हुआ था। आज अधिकांश भाई/बहिनों ने उपवास के साथ संवत्सरी प्रतिक्रमण कर पौषधोपासना का लक्ष्य रखा। सुशीला भवन का समूचा परिसर ऊपर एवं नीचे तथा प्रवचन-स्थल पौषध करने वालों से शोभित हो रहा था। पूज्य आचार्य भगवन्त के अतिशय विशेष से पर्वाधिराज पर्युषण पर समवसरण जैसा परिदृश्य बना रहा। परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में साधना आराधना का अर्घ्य अर्पित करने अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु गुरुभक्तों का पधारना हुआ। उनमें- चेन्नई, कुम्भकोणम, कोयम्बतूर, विल्लीपुरम्, कोलकाता, दिल्ली, बैंगलोर, बंगारपेट, के.जी.एफ., बीजापुर, सांगली, बेलगांव, बल्लारी, दोड्डबालापुर, माधवनगर, हैदराबाद, गजेन्द्रगढ़, मुम्बई, धुलिया, वाशीम, खामगांव, जलगांव, पिलखोड़, जामनेर, फत्तेपुर, नंदूरबार, भडगांव, सेलाना, नीमच, रतलाम, खण्डवा, थांवला, नवी मुम्बई, अहमदाबाद, पालनपुर, सवाईमाधोपुर शहर, मण्डी रोड, बजरिया, आदर्शनगर, कुश्तला, चोरू, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़-रामपुरा, कोटा, बूंदी, जबलपुर, ब्यावर, हिण्डौनसिटी, बेर, जयपुर, दूदू, मदनगंज, किशनगढ़, कादेड़ा, थांवला, पाली, बर, आनंदपुर कालू, पुष्कर, गढ़-सिवाना, जोधपुर, पीपाड़सिटी, गोटन आदि स्थानों से 250

से अधिक भाई/बहिनों ने 8-9 दिन रहकर अहर्निश तप-त्याग का सुन्दर स्वरूप प्रस्तुत किया।

07 सितम्बर को प्रातःकालीन प्रार्थना पश्चात् सामूहिक क्षमापना का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें श्री चम्पालालजी मकाणा-दोड्डबालापुर, श्री मदनलालजी बाघमार-जबलपुर, श्री उगमराजजी कांकरिया-चेन्नई, श्री गौतमचन्दजी संकलेचा-कुम्भकोणम, संघ कार्याध्यक्ष श्री सुभाषचन्दजी धोका, श्री सौभाग्यमलजी जैन-कुशतला, श्री कैलाशचन्दजी जैन 'हिण्डौन वाले'-जयपुर, श्री सरदारसिंह जी नाहर-दूदू, श्री यलप्पाजी-गजेन्द्रगढ़, श्री कन्हैयालाल जी हिरण-अहमदाबाद, श्री माणकचन्दजी कोठारी-दूदू, उपाध्यक्ष श्री रीखबचन्दजी बम्ब ने पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में निमाज में जो नवनीत ग्रहण किया, उसके प्रति आभार प्रकट किया एवं क्षमायाचना की।

संघाध्यक्ष श्री सूरजमल जी भण्डारी ने कहा- "निमाज गांव छोटा है पर गुरुदेव का जहाँ वरदहस्त है, वहाँ कोई कमी नहीं। गुरुभक्तों ने साधना-आराधना कर धर्मध्यान का ठाट लगाया है। गुरुभगवंत, समस्त चारित्रात्माओं सहित सभी से क्षमायाचना।"

संघ प्रमुख श्री तेजराज जी भण्डारी ने कहा कि भूत को भूलकर क्षमायाचना करलें तो किसी तरह की गांठ नहीं रहेगी। संघ द्वारा किसी भी तरह की असुविधा रही हो तो सभी गुरुभक्तों से क्षमयाचना। 25 वर्ष पूर्व गुरु हस्ती का अतिशय देखा, वर्तमान में आपश्री के अतिशय से धर्माराधना का ठाठ लगा।

संघमंत्री श्री निर्मलकुमारजी बम्ब ने कहा- "पूज्य आचार्य भगवन्त के विचरण-विहार के समय, चातुर्मास प्रवेश से आज तक किसी भी प्रकार की अविनय आशातना हुई हो तो बारम्बार क्षमायाचना। चतुर्विध संघ का चातुर्मास काल में सुयोग पाकर यह संघ प्रमुदित, उल्लसित व पुलकित है। 50 दिनों में अच्छी आराधना हुई, आगामी 70 दिनों में भी हम अच्छी धर्माराधना करने का ध्यान रखेंगे।"

पूज्य आचार्य भगवन्त ने सभी से क्षमापना कर मांगलिक फरमाने की कृपा की। पर्वाधिराज पर्युषण में पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से सुशीला भवन परिसर में वीतराग वाणी का वर्षण हुआ तो उधर प्रकृति ने भी उदार हृदय से जलवर्षा कर वातावरण को सरस, शीतल, समतामय बनाये रखा। इस अवधि में हजारों उपवास, दया व संवर, पौषधोपासना, 80 के लगभग तेले, 20 के ऊपर अठाईयाँ व अन्य छोटी, मध्य व बड़ी तपाराधना गतिमान रही। पर्वाधिराज में ब्यावर, जावला, गोटन, पीपाड आदि क्षेत्रों से तपस्वियों ने पधारकर तप के प्रत्याख्यान पूज्य आचार्यप्रवर के पावन श्रीमुख से अंगीकार कर धन्यता का अनुभव किया। बीच-बीच में क्रोध, झूठ, चोरी, कुव्यसन त्याग के प्रत्याख्यान किए गए। अजैन

भाई/बहिनों ने प्रवचन श्रवण के साथ तपाराधना कर अर्घ्य अर्पित किया।

08 सितम्बर 2016 को सूरत संघ चातुर्मास की विनति लेकर, 09 सितम्बर को विजयनगर संघ सदस्य तथा राजस्थान सरकार के पर्यावरण-सहकारिता राज्य मंत्री श्री सुरेशचन्द्र जी गोयल क्षमापना करने, 10 सितम्बर को आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर संघ तथा हरमाड़ा संघ चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ।

11 सितम्बर को **महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा.** के मासक्षपण तप सम्पूर्ति का प्रसंग रहा। **श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा.** ने फरमाया- ''उम्र छोटी है, पर तपस्या मोटी है। चारित्र की सुवास, शुभ भावना वास, प्रीति का निवास है तो तप की गरिमा वर्धापित होगी ही।'' **महासती मण्डल** ने काव्य रचना के साथ अनुमोदना की- ''गुरुणी मैना की बगिया में फूल घणा छः। तपस्या रो लाग्यो है मेलो, गुरुवर थाणे आंगण में।'' महासती श्री भावनाश्रीजी ने व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के यहाँ से प्राप्त तपाराधना की अनुमोदना पर भावाभिव्यक्ति को पढ़कर सुनाया- तप की खूब-खूब अनुमोदना। सपना हमारा था- सफल आपने बनाया।' **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.** ने फरमाया- इस सभा में 4-4 मासक्षपण की साधना वाले साधक विराजे हुए हैं। हमें गुरुदेव ने अपनी टीम में हिस्सा देकर आगे बढ़ाया। यह भूमि तपोभूमि है। इस संथारावाली धरा पर गरिमाजी का मासक्षपण आपश्री की चरण सन्निधि में हो रहा है। जैसे गरिमाजी को आगे बढ़ाया, वैसे ही हमें भी आगे बढ़ाना। वीर परिवार से श्री कैलाशचंदजी जैन, जयपुर ने कहा- ''गरिमाजी ने धारा है मासक्षपण, तपस्या से कटते सारे कर्म।'' महान् अध्यवसायी **श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.**ने फरमाया- ''धीर-वीर-गंभीर साधक आत्माओं की साधना- आराधना से यह शासन जयवंत है। अबला कहलाने वाली इन सन्नारियों व चारित्रात्माओं का इतिहास गौरवमय है। ब्राह्मी सुन्दरी ने भरत-बाहुबली जैसे साधकों को जागृत किया, राजीमती ने रथनेमि को स्थिर किया, मिथ्यामत में झूलते हुए राजा श्रेणिक को चेलना ने समकित में दृढ़ बनाया। रुद्रसोमा की प्रेरणा से आर्यरक्षित ने दस पूर्वों का ज्ञान पाया। आचार्य भगवन्त के शासन में इन साध्वियों ने संघ की गौरव-गरिमा को बढ़ाया है। गरिमाजी काया से कमजोर है। प्रभुदयालजी के परिवार से आई ये आत्माएँ शासन की दीप्ति बढ़ा रही हैं। भतीजी भी भुआ से पीछे नहीं है। निर्मलजी-रेखाजी सांसारिक पिता-माता वर्षीतप कर रहे हैं। चारित्र के सहकार से भावनाजी-प्रीतिजी की भावना प्रीति से गरिमाजी का मासक्षपण हुआ, वह अनुमोदनीय, प्रशंसनीय है।'' पीपाड़, मसूदा, प्रतापनगर-जयपुर, यादगिरि, अजमेर से भी तप की अनुमोदना पर

भावाभिव्यक्ति मिली है।

परमश्रद्धेय **पूज्य आचार्य भवगन्त** ने फरमाया- "मोक्षमार्ग के चार चरण- ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप का विश्लेषण पर्वाधिराज में हुआ है। ज्ञान मोक्षमार्ग का प्रकाशक है। तप से मैल व शरीर परिशुद्ध होता है। परिसुज्झई- चारों ओर से सब मलों (कषायों) को शुद्ध करने की दवा तप है। जो तप करता है, उसके गुण गाये जाते हैं। अश्विनी कुमार ने वैद्य वाग्भट से पूछा- "किसी ऐसी दवा का नाम बताओ, जो न जमीन पर पैदा होती हो, न आकाश में किन्तु जो पथ्य हो, स्वाद रहित हो, और सभी शास्त्र उस दवा का समर्थन करते हों।" वैद्यजी ने समाधान में बताया-

"अभूमिजमनाकाशं, पथ्यं रसविवर्जितम्।
पूर्वाचार्यैः समाख्यातं लंघनं परमौषधम्।।"

पूर्वाचार्यों द्वारा समर्थित लंघन ही वह श्रेष्ठ औषधि है जो न तो भूमि पर उत्पन्न होती है, न ही आकाश में, साथ ही वह पथ्य है, स्वादरहित भी है। लंघन ऐसी दवा है, आकाश से टपकी नहीं, घोटकर शरीर में उतारने की जरूरत भी नहीं है। हर दवा में परहेज है, रिएक्शन है, पर इसमें कुछ नहीं तथा यह बिना मूल्य की भी है। यह दवा तप है, सभी धर्मों द्वारा यह दवा सम्मत बताई गई है। **लंघनं परमौषधम्**- अनशन तप है। ललिताजी, बीनाजी में गुण पहले से विद्यमान हैं, पर आज ही गुणगान क्यों गाये जा रहे हैं। यहाँ जैन-अजैन जिसकी भी भावना हो, तप कर सकता है। संजीवनी पेट की सफाई कर जीवन देती है, लंघन भी पेट को ही क्या- समस्त रोगों का शमन कर देता है। रोगी प्रायः 50 तरह के डॉक्टरों को दिखाता है। 50 तरह की दवा लेता है, यदि वही रोगी अनशन तप की आराधना, इच्छा निरोध के साथ करे तो दवा लेने के झंझटों से छुटकारा मिल जायेगा।

तप से शुद्धि भी होती है और निर्जरा भी होती है। अन्य धर्मों में भी तप के रूप अलग-अलग हो सकते हैं पर मेरा यही कहना है- सभी यथाशक्ति तप अवश्य करें। तप की मर्यादा के अनुसार तप कर इसकी दीप्ति बनाये रखें। इच्छा के अनुसार सहजता से जितना तप कर सकते हो, संकल्प करें। जो आपसे बनता है- जैसे- कम खाकर, रस परित्याग कर, कडवा नहीं बोलकर, लड़ने की कषाय की प्रवृत्ति छोड़कर, मधुरभाषी बनकर, ये सब भी तप रूप हैं, जो आपको उचित लगे उनका अर्घ्य चढ़ाकर अनुमोदना करें।

महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा. के मासक्षपण के साथ आज ही तपस्विनी श्राविकारत्न श्रीमती ललितादेवीजी धोका धर्मसहायिका श्री सुभाषचन्दजी धोका के 32 दिवसीय (मासक्षपणोपरान्त) तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन मुखारविन्द से हुए। मेड़ता सिटी संघ चातुर्मास की विनति लेकर, वरिष्ठ प्रशासनिक

अधिकारी श्री महेन्द्रजी पारख, जयपुर एवं सिद्धांतशाला-जयपुर में पूर्व अध्ययनरत कुछ स्नातक डॉ. श्री धर्मचन्दजी जैन के संयोजकत्व में पूर्व छात्र परिवार पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि में सुभाषित वचन रूपी दिशाबोध लेने पधारे। आचार्य भगवन्त ने फरमाया कि परिवार में संस्कारों की महती आवश्यकता है। आप परिवार के बच्चों को समय देंगे तो उनके मन में आदर जगेगा एवं वे भी आपको समय देंगे।

12 सितम्बर को जलगांव संघ, 13 सितम्बर को तक्कोल संघ, मसूदा संघ, पाली युवक संघ, प्रतापनगर-जयपुर संघ, फाजिलाबाद संघ, सातारा संघ तथा ठिकाना निमाज के ठाकुर साहब ने परिवारजनों के साथ पूज्य आचार्यप्रवर के पावन दर्शन का लाभ लिया। 14 सितम्बर को अलीगढ़-रामपुरा संघ, भोपालगढ़ संघ, इन्दौर संघ ने चातुर्मास की विनति पूज्यश्री की सेवा में रखी, बिलाड़ा संघ ने शेखेकाल फरसने के लिये निवेदन किया। 15 सितम्बर को श्री मोहनलालजी जैन सुपुत्र स्वर्गीय श्री मोतीलालजी जैन, आलनपुर वाले', चौगानी कुआ, शहर सवाईमाधोपुर ने 31 दिवसीय उग्र तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के पावन श्रीमुख से लेकर मासक्षपण की शृंखला में पोरवाल क्षेत्र की महिमा को वर्धापित किया। इस प्रसंग पर पूज्य आचार्य भगवंत ने फरमाया कि आज अनंत चतुर्दशी है, एक परम्परा आज के दिन संवत्सरी मनाती है। हर क्षण, हर क्षेत्र इस जीव के लिए उपकारी है। हर समय हर काल आराधना करने का है। साधना करने के लिये कोई समय खराब नहीं है। विपरीत स्थिति में भी साधना की जा सकती है। अनंत की राह पकड़कर जीवनभर के पापों का अंत करें। एक साधक को 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं' याद करने में छः माह लग गये, पर वे लगे ही रहे तो छः माह में केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। इस दर्शनावरणीय ने जीव की गति ही ऐसी कर दी, जो भगवान भी आपको पराये नजर आ रहे हैं। घर में कुछ प्रसंग आने पर सामायिक तो छूट जाती है, पर खाना-पीना नहीं छूटता, अब तक आपका मोह माया का पर्दा हटा नहीं। मन जगने पर तप होता है। जिनकी हड्डी-पसली नजर आ रही है फिर भी आज 31 की तपस्या है। तिरने के रास्ते कम व डूबने के ज्यादा हैं। अनन्त चतुर्दशी पर पाप मार्गों का परित्याग कर अनन्तमार्ग के राही बनें।

16 सितम्बर को श्राविका मण्डल का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ, जिसमें लगभग 475 श्राविकाओं ने सहभागिता लेकर अधिवेशन की गरिमा को वर्धापित किया।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी सुराणा उपचाराधीन अवस्था में पैर की पीड़ा को गौण कर धर्म संघ के कार्यक्रमों में पधारे। "संघ है मेरा, मैं हूँ संघ का" समर्पणता के साथ संघनिष्ठा की अंतरंग भावना प्रमोदजन्य है। राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा भी समय पर पधार आये। श्राविका मण्डल के अधिवेशन समय दोनों

महानुभावों ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर श्राविका मण्डल के कार्यों की प्रशंसा की।

अहमदाबाद से पधारे तपस्वी रत्न श्री अरूणकुमारजी भण्डारी सुपुत्र श्री दशरथमलजी भण्डारी, जोधपुर वालों ने आज प्रवचन सभा में पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन मुखारविन्द से 69 में 3 मिलाकर कुल 72 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। आप आचार्य भगवन्त के अहमदाबाद चातुर्मास से हर वर्ष मासक्षपण व उससे ऊपर की तपस्या का अर्घ्य पूज्य श्री के चरणों में अर्पित करते आ रहे हैं। पूज्यप्रवर की सेवा में सवाईमाधोपुर शहर, गोटन व पीपाड़ वालों ने चातुर्मास की विनति रखी।

18 सितम्बर को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का राष्ट्रीय अधिवेशन था। आज ही श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता धर्म सहायिका श्री भागचन्दजी मेहता-जोधपुर वालों ने निमाज में सेवा सन्निधि का लाभ लेते हुए आचार्य भगवन्त में निहित 36 गुणों के समकक्ष 36 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से लिये। भोपालगढ़ संघ व नागौर संघ चातुर्मास की विनति लेकर पूज्य श्री की सेवा में उपस्थित हुआ।

20 सितम्बर को अयनावरम् संघ-चेन्नई एवं जोबनेर संघ ने चातुर्मास की विनति, 21 सितम्बर को गंगावती संघ ने, 22 सितम्बर को अमरावती संघ, यादगिरि संघ ने, 23 सितम्बर को जबलपुर संघ ने चातुर्मास फरमाने के लिये गुरु भगवन्त की सेवा में निवेदन किया। मैसूर संघ भी दर्शन लाभ की भावना से सेवा में उपस्थित हुआ। 24 को धुलिया संघ, बालोतरा संघ, बैंगलोर संघ ने चरण सन्निधि का लाभ लिया। शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना-जलगांव ने आचार्यप्रवर की सेवा में संघ उन्नयन विषयक चर्चावार्ता की। 25 सितम्बर को बजरिया, सवाईमाधोपुर संघ चातुर्मास की विनति एवं अरिहंत कॉलोनी अजमेर के श्रावक-श्राविकाएँ दर्शन लाभ की भावना से गुरु चरणों में पधारे। 26 सितम्बर को अखिल भारतीय श्री जैन युवक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। युवाशक्ति को संगठित होकर अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन करने एवं व्यसनमुक्त रहने, प्रतिक्रमण याद करने व बच्चों को संस्कारशील बनाने पर बल दिया। 27 सितम्बर को अलीगढ़-रामपुरा संघ तथा जोधपुर का सरस्वतीनगर संघ चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ। प्रवचन सभा में संचालन का दायित्व श्री निर्मलकुमारजी बम्ब संभाले हुए हैं। एकासन, बीयासन, आयम्बिल, दया, उपवास, तेले की लड़ी प्रवाहमान है।

दर्शनार्थ पधारने वालों का संघ रूप में, क्षेत्र स्तर पर, परिवार स्तर पर या अपनी-अपनी सुविधानुसार आने का क्रम अनवरत बना हुआ है। निमाज संघ की आवासीय व्यवस्था, भोजन व्यवस्था, प्रवचन स्थल, पूज्य गुरु भगवन्त के विराजने का स्थल आदि

सभी समीपस्थ हैं। निमाज संघ आतुरता से पधारने वाले श्रद्धालु गुरुभक्तों की सेवा सन्निधि में तत्पर है। संघ की स्वधर्मि-वात्सल्य भावना प्रमोदजन्य है। -*जगदीश जैन*

जोधपुर की भूमि में बही धर्मगंगा

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी **श्री गौतममुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में दिग्विजयनगर-गुलाबनगर में चातुर्मास ज्ञान-ध्यान एवं तपाराधना के साथ गतिमान है। राइय प्रतिक्रमण, प्रार्थना, प्रवचन, मध्याह्न में शास्त्रवाचन एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण तथा रात्रि में संवर-पौषध की साधना चल रही है। विभिन्न क्षेत्रों के संघों का एवं दर्शनार्थी बन्धुओं का आवागमन बना हुआ है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही धर्माराधन में उत्साह बना हुआ है। पर्युषण पर्व में विशेष तप एवं धर्माराधन हुआ। मासक्षपण, अठाई एवं कई बड़ी तपस्याएँ हुईं। उपवास, बेला, तेला आदि अनगिनत हुए। नियमित दया, संवर की साधना हुई। प्रवचन सभा-स्थल छोटा पड़ गया। सभी संतों के प्रवचन आकर्षक रहे। सायंकालीन प्रतिक्रमण में एवं संवत्सरी प्रतिक्रमण में अच्छी संख्या रही। पर्युषण के पश्चात् भी धर्माराधन का क्रम बना हुआ है। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा. ने मौन साधना के साथ तेला, श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ने मौन के साथ पचोला की तपस्या की। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने अष्टमी से दशवीं तक हर माह की तरह तीन दिन मौन साधना की। 24 सितम्बर को श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा दिग्विजयनगर में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 250 श्राविकाओं की उपस्थिति रही। श्राविका मण्डल ने सभी तपस्वी श्राविकाओं का अभिनन्दन किया। 25 सितम्बर को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का अधिवेशन जोधपुर में सम्पन्न हुआ, जिसमें प्रातःकाल श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने प्रभावी प्रेरणा की। प्रत्येक रविवार को सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम प्रातः 7 से 8 बजे दिग्विजयनगर में चल रहा है। इसी तरह प्रतिमाह सामूहिक सामायिक सभी स्थानों पर की जा रही है। गुलाबनगर एवं दिग्विजयनगर आगत श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं के आदर-सत्कार में तत्पर है। -*धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

चातुर्मास में फैली खुशहाली, छाई ऐसी छटा निराली

सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मास भी विभिन्न आयामों और कीर्तिमानों को स्थापित कर रहा है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप सभी क्षेत्रों में अच्छी उन्नति है। **ज्ञान के क्षेत्र में** कई जने सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, उववाई सूत्र की 22 गाथाएँ, मोक्ष-मार्ग की 38 गाथाएँ, नमिपवज्जा,

भक्तामर स्तोत्र आदि का ज्ञानार्जन कर रहे हैं। **दर्शन के क्षेत्र में** प्रतिदिन कम से कम एक व्यक्ति द्वारा 1008 वंदना की जा रही है, अब तक मात्र 70 दिवसों में 150 जनों ने 1008 वंदना कर ली है। युवारत्न श्री मुदित जी मेहता ने 6200 वंदना, श्री रितेशजी मुथा ने 6200 वंदना की थी, इसी कीर्तिमान को आगे बढ़ाते हुए श्री धर्मवीर जी कांकरिया ने एक दिवस में 7200 वंदना का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। **चारित्र के क्षेत्र में** कम से कम पाँच संवर प्रतिरात्रि संतों की सेवा में चातुर्मास काल के प्रारम्भ से हो रहे हैं। **तप के क्षेत्र में** तो मानो प्रत्येक व्यक्ति के मुख से ऐसे ही निकल रहा है कि ऐसी तप की झड़ी नहीं देखी, लड़ी नहीं देखी। उपवास, आयम्बिल, तेला, एकासन, बीयासन की लड़ी चल रही है। अब तक दीर्घ तपश्चर्याओं में निम्न तपस्याएँ हुई हैं- 21 वर्षीया सुश्री पूर्वा जी कटारिया के 34 उपवास, श्रीमती विनीताजी मुथा के 35 उपवास (51 की ओर गतिमान) श्री सोहनराजजी कांकरिया के 31 उपवास, श्रीमती नीतूजी भण्डारी के 31 उपवास, 18 वर्षीया सुश्री रुचिकाजी कटारिया के 30 उपवास, श्री मणिन्द्र जी चौधरी (28 वर्षीय) के सिद्धितप, राजा परदेशी तप श्रीमती आशा जी ओस्तवाल, श्री सुमतिचन्दजी मेहता (प्रगतिमान), श्रीमती चंचलदेवीजी मुथा (प्रगतिमान) है। एकासन व सिद्धितप 2 जनों ने पूर्ण किया है।

प्रतिदिन 12 से 01 बजे तक श्रावकों के द्वारा नवकार महामंत्र का जाप किया जा रहा है। प्रार्थना-प्रतिक्रमण-प्रवचन-वाचना आदि सभी कार्यक्रमों में उपस्थिति अच्छी बनी हुई है। रात्रि में जिज्ञासा-समाधान सत्र के रूप में 8 बजे से 09 बजे तक 'युवाशाला' कार्यक्रम चलता है, जिसमें युवावर्ग अच्छी संख्या में भाग लेता है। *-नमन मेहता*

बालोतरा चातुर्मास में युवा भी उत्साहित

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में ज्ञान की सरिता के साथ तप-त्याग की सौरभ फैल रही है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही प्रवचन, वाचनी, ज्ञान चर्चा में जहाँ प्रतिदिन श्रावक-श्राविका लाभान्वित हो रहे हैं, वहीं देश भर से नियमितरूप से श्रद्धालुजनों का धर्मभावना सहित आगमन एवं ज्ञानवर्धन का क्रम चल रहा है। अन्तगड सूत्र का वाचन विवेचन श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. द्वारा तथा वीतरागवाणी के नवनीत रूप में प्रवचन श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.द्वारा प्रदान किया गया। युवावर्ग में विशेष उत्साह देखने को मिला। लगभग दो अठाई तप सम्पन्न हुए, जिसमें अधिकांश युवा भाई-बहिनों ने भाग लिया। श्रावक एवं श्राविका वर्ग में विशेष प्रेरणा से ग्यारह रंगी, नवरंगी, पाँच पचरंगी, धर्मचक्र, 100 से अधिक तेले, दया-संवर के 8 मासक्षपण, क्रोध-कषाय त्याग, 33 उपवास (इन्दिरा चौपड़ा)। अठाई के अतिरिक्त 42 बड़ी तपस्याएँ, बेले, उपवास, आराधना के साथ पर्युषण पर्व के दिनों में दया, संवर,

सामायिक, पौषध, ज्ञानार्जन का उल्लास उल्लेखनीय रहा। श्रीमती एवं श्री सोहनलाल जी श्रीश्रीमाल तथा श्री मोहनलाल जी टॉवरी ने शीलव्रत के प्रत्याख्यान अंगीकार किए। श्री दुगड़जी ने 18 की तपस्या की। पचपदरा, जसोल, पाटौदी, कनाना क्षेत्र से भी श्रावक-श्राविकाओं ने बड़ी तपस्याओं के नियम लिए। श्री धर्मेशजी चौपड़ा के परिवार से सभी सदस्यों के एवं चेन्नई के सुराणा परिवार से 3 अठाई तप सम्पन्न हुए। प्रतिक्रमण सूत्र एवं आगम सीखने का क्रम गतिमान है। श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी संघ, अध्यक्ष श्री सुमेरमल जी सालेचा, मंत्री श्री गौतमजी तातेड़ के नेतृत्व में संघ के सभी सदस्य तथा महिला मण्डल अध्यक्ष श्रीमती मंजूदेवीजी कांकरिया के नेतृत्व में महिलाएँ सक्रियता से ज्ञान, तप, आराधना में उल्लेखनीय योगदान प्रदान कर रही है। श्री मीठालालजी मधुर परिवार वात्सल्य-सेवा का सहर्ष लाभ ले रहा है। *-ओमप्रकाश बांठिया*

महासती-मण्डल के चातुर्मासों में धर्माराधन

पावटा-जोधपुर- शासनप्रभाविका, साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में सुख-साता पूर्वक विराज रहे हैं। नित्य प्रवचन एवं धर्माराधना का कार्यक्रम चल रहा है। पर्युषण पर्व में विशेष धर्माराधन एवं तपाराधन हुआ। अनेक तेले एवं छोटी-बड़ी तपस्याएँ हुईं। संवत्सरी पर्व पर एवं अन्य दिवसों में नियमित दया-संवर की साधना हुई। महासती श्री शशिकलाजी म.सा. ने अठाई तप किया। तपस्याएँ एवं ज्ञानाराधन के कार्यक्रम भी चल रहे हैं। *-धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

नदबई- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में धर्माराधना अच्छी चल रही है। 11 दिवसीय दो, अठाई 7, नौ दिवसीय 1, चोला, तेला आदि तपस्याएँ सम्पन्न हुईं तथा आयम्बिल एकाशन की लड़ी चल रही है। पर्युषण के आठों दिन अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ। सात दम्पतियों ने एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन का नियम अंगीकार किया। रात्रिभोजन, जमीकंद आदि के त्याग हुए। आठ दिन सिद्धपद आराधना और आठ दिन आचार सम्पदा की आराधना हुई। रात्रि संवर बराबर चल रहे हैं।

शक्तिनगर (जोधपुर)- व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में पर्युषण पर्व में श्रावक-श्राविकाओं का खूब उत्साह बना रहा। पर्युषण में प्रवचन-श्रवण हेतु श्रोताओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ हुई। पर्युषण के पश्चात् लगभग 200 दम्पतियों ने सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम किया। *-धनपत सेठिया*

फुलियाँकला- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा., महासती श्री कौशल्याजी

म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में ज्ञानार्जन, तपाराधन एवं धर्माराधन की पावन गंगा बह रही है। ग्राम में मात्र 12-13 जैन घर होते हुए भी एकाशन, उपवास एवं आयंबिल की लड़ी निरन्तर चल रही है। 9 दिवसीय चार, 3 अठाई, 2 पचोले, 38 तेले सम्पन्न हुए हैं। एकाशन का मासक्षपण एवं एकान्तर तप की साधना भी सम्पन्न हुई है। एक बहिन ने मासक्षपण पूर्ण किया है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के आठों दिन अखण्ड नवकार मंत्र का जाप किया गया, जिसमें सभी ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। आठों दिन दया-संवर की आराधना हुई तथा एक दिन भिक्षु दया सम्पन्न हुई। संवत्सरी महापर्व पर उपवास एवं पौषध का रिकार्ड रहा। निकटवर्ती धनोप, अरवड़, पनोतिया, भिनाय, बांदनवाड़ा, कादेडा, केकडी, डोहरिया, केरोट, बच्छखेड़ा, शाहपुरा, कनेछन कला आदि ग्राम-नगरों से प्रवचन-श्रवण करने हेतु श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन बना रहा। अजैन बन्धु भी नियमित रूप से प्रवचन का लाभ उठा रहे हैं। दिन में बालक-बालिकाएँ सामायिक, प्रतिक्रमण आदि सीख रहे हैं।

-धर्मीचन्द चौधरी, संरक्षक-09928778690

प्रतानगर-जयपुर- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही एकाशन, आयंबिल, उपवास एवं तेले की लड़ी चल रही है। प्रत्येक रविवार को तीर्थंकर विषय पर प्रतियोगिताएँ आयोजित हो रही हैं। भाई-बहिनों में भिक्षु दया आयोजित हुई। लगभग 120 श्रावक-श्राविकाओं ने सप्त कुव्यसनों के त्याग किए। पर्युषण में एक पचरंगी, एक धर्म चक्र तथा रविवार को 200 दया-व्रत हुए। आठ दिन अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ। 60 तेले, 5 चोले, 3 पचोले, 6 दिवसीय तप, 20 अठाई, 5 नौ, 10 दिवसीय तप, 7 ग्यारह दिवसीय तप, तेरह दिवसीय, सोलह दिवसीय एवं 32 दिवसीय तप (श्रीमती सन्तोषजी धर्मसहायिका श्री धर्मचन्दजी जैन भेडोला वाले) भी सम्पन्न हुए। एकाशन के 5 मासक्षपण तथा एकाशन की 40 अठाइयाँ हुईं। श्री पारसजी एवं श्रीमती उषाजी जैन ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। आध्यात्मिक वन-डे मैच में 100 व्यक्तियों ने भाग लिया। *-सुशील जैन, मंत्री*

मसूदा (अजमेर)- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में धर्मध्यान का ठाट लगा हुआ है। तेले, उपवास, आयंबिल एवं एकाशन की लड़ी निरन्तर चल रही है। पर्युषण पर्व में नवकार मंत्र का 24 घण्टे अखण्ड जाप निरन्तर चला। भाइयों एवं बहनों ने अलग-अलग सतरंगी की आराधना की। दो बहनों ने पाँच की तपस्या तथा पर्युषण पर्व पर 51 तेले सम्पन्न हुए। भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को पूज्य श्री पन्नालाल जी म.सा. का 129 वां जन्मदिवस मनाया गया, जिसमें सामूहिक दया-व्रत तथा एकाशन की तपस्या हुई। पर्युषण पर्व में प्रार्थना,प्रवचन एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण में

उल्लेखनीय उपस्थिति रही। प्रतियोगिताएँ भी सम्पन्न हुईं। *-पारसमल गांग, महामंत्री-094606-13593*

यादगिरि (कर्नाटक)- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में जप-तप, ज्ञानाराधन का टाठ लगा हुआ है। प्रवचन से प्रतिक्रमण तक सभी का उत्साह सराहनीय है। प्रवचन सुनने के पश्चात् ही दुकानें खुलती हैं। तेले एवं आयंबिल की लड़ी चल रही है। दैनिक जाप चल रहा है। कई युवकों ने व्यसन त्याग किए हैं। 10 एकान्तर उपवास चल रहे हैं। प्रतिदिन एकाशन 42 जने कर रहे हैं। थोकड़े, शास्त्र, प्रतिक्रमण आदि का अध्ययन 40 जने कर रहे हैं। तीन बार सामूहिक दया हुई है। आठ दिन में 80 जनों ने पाँच से ग्यारह सामायिक की, 50 व्यक्तियों ने आठ दिन एकाशन तप किए हैं। दो दम्पतियों ने सजोड़ा शीलव्रत अंगीकार किया है। तेरापंथ, मूर्तिपूजक एवं स्थानकवासी संघ मिलजुलकर पहली बार उमंग से एकता का लाभ ले रहे हैं। अनगिनत उपवास, 80 तेले, चोले, छह उपवास, सात उपवास, 10 अठाई, नौ के 6 उपवास, चार 11 दिवसीय उपवास, 13,15 दिवसीय चार उपवास, 21 दिवसीय एक उपवास तथा 12 अक्षयनिधि तप सम्पन्न हुए हैं। तपस्वी बहिन श्रीमती सरसबाई जी धोका के 61 दिवसीय तप का पूर 14 सितम्बर को सम्पन्न हुआ। यादगिरि संघ आदर सत्कार में तत्पर है। जैन-जैनतर सभी प्रवचन आदि का लाभ ले रहे हैं। कइयों ने प्रवचन सुनकर व्यसन त्याग किया है और तप-जप में आगे बढ़ रहे हैं। *-गौतमचंद धोका, संघ प्रमुख*

बाड़मेर- व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी आदि ठाणा 3 की सन्निधि में पर्युषण पर्व तप-त्याग के साथ उत्साहपूर्वक मनाया गया। एकाशन एवं उपवास की लड़ी के साथ 8 श्राविकाओं ने एकाशन का सिद्धि तप सम्पन्न किया। 23, 17, 14, 12, 11, 9 दिवसीय तपस्याओं के साथ 9 दिवसीय दो, 8 अठाई, 7 दिवसीय पाँच, 6 दिवसीय तीन, 5 दिवसीय पाँच, चोला, 50 तेले एवं 10 बेले की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। भाइयों में 12 घण्टे एवं बहनों में 24 घण्टे अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ। सात दिन विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। दया, संवर का ठाट लगा रहा, प्रवचन में प्रतिदिन उल्लेखनीय उपस्थिति रही। भाइयों में प्रतिक्रमण एवं सामायिक सूत्र सीखने की होड़ लगी हुई है। महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा. के रत्नावली तप तथा महासती श्री शान्ताजी म.सा. के लघुसिंह निष्क्रीडित तप एकाशन के साथ चल रहा है। बाड़मेर में खरतरगच्छ, अचलगच्छ एवं तेरापंथ समाज में चातुर्मास होने के पश्चात् भी स्थानक में इतनी बड़ी तपस्याएँ एवं उपस्थिति देखने को मिली।

-जितेन्द्र बांठिया, मंत्री श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बाड़मेर

सूरत- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 की सन्निधि में चातुर्मास प्रारम्भ से संवत्सरी महापर्व के मध्य महासती श्री आराध्यश्री जी के 32 उपवास के अतिरिक्त 22, 21, 12,13 दिवसीय तप सम्पन्न हुए। 11 की दो, 9 की पन्द्रह, 28 अठाई, 4 पचोले, 2 चोले, अनेक तेले, 6 दिवसीय दो तथा एकाशन के 5 मासक्षपण सम्पन्न हुए। एकाशन की लगभग 25 अठाई हुई। संवत्सरी के दिन पौषध-संवर लगभग 180 हुए। अन्य सात दिनों में भी संवर-पौषध प्रतिदिन 45-50 की उपस्थिति रही। व्याख्यान में उपस्थिति प्रमोदकारी रही। आठ दिनों तक नवकार मंत्र का अखण्ड जाप किया गया। एक नवरंगी, एक धर्मचक्र की आराधना पर्युषण पर्व में हुई। अहमदाबाद के सुश्रावक श्री अरूणजी भण्डारी ने 56 से 61 उपवास तक के प्रत्याख्यान ग्रहण किए, जिसकी अनुमोदना में 11 की तपस्या दो, 9 की तपस्या पाँच, 9 अठाई, एक वर्ष में 60 उपवास के पाँच, एक वर्ष में 30 उपवास के ग्यारह, एक वर्ष में 12 उपवास के पन्द्रह, एक वर्ष में 48 उपवास के तीन, एक वर्ष में 60 एकाशन के नौ, एक वर्ष में 30 एकाशन के 21 व्यक्तियों ने प्रत्याख्यान ग्रहण किए। चातुर्मास प्रारम्भ से तेला, उपवास, आयंबिल, एकाशन, बियासन एवं संवर की लड़ी निरन्तर चल रही है। संवत्सरी के पश्चात् भी तपस्याओं का दौर जारी है। पर्युषण के पश्चात् भी दो मासक्षपण तप सम्पन्न हुए हैं। इस प्रकार यहाँ कुल आठ मासक्षपण सम्पन्न हुए। तपस्याएँ निरन्तर चल रही है। गुप्त एकाशन का कार्यक्रम चल रहा है। आध्यात्मिक किक्रेट मैच का आयोजन किया गया, जिसमें 48 प्रतियोगियों ने भाग लिया।-*सुनील नाहर, महामंत्री*

निमाज में गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में 'सम्मान-समारोह' एवं 'गुणी-अभिनन्दन' का कार्यक्रम 17 सितम्बर, 2016 को निमाज में आयोजित किया गया, जिसका शुभारम्भ दोपहर 01.30 बजे हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में **न्यायाधिपति माननीय श्री मुनीश्वरनाथ जी भंडारी**, विशिष्ट अतिथि के रूप में महाधिवक्ता **माननीय श्री नरपतमल जी लोढा** पधारे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री पी. शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई ने की। मंच पर संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आनंद जी चौपडा-जयपुर, डॉ. अशोक जी कवाड-चेन्नई, संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी-जोधपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पारसचन्द जी हीरावत-मुम्बई, श्राविका मण्डल की अध्यक्ष

श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेछा-पाली, निमाज संघ के संघ प्रमुख श्री तेजराज जी भंडारी, अध्यक्ष श्री सूरजमल जी भंडारी आसीन थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमान हस्तीमल जी गोलेच्छा-ब्यावर के मंगलाचरण से हुआ। निमाज बालिका मण्डल द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। मंचस्थ अतिथियों को माला एवं शॉल से सम्मानित किया गया। निमाज संघ की ओर से मंचस्थ संयोजक-संरक्षक मण्डल श्री मोफतराज जी मुणोत तथा संघाध्यक्ष महोदय का माला एवं शॉल से स्वागत किया गया।

संघ के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई** ने समारोह में पधारे सभी अतिथियों एवं संघ सदस्यों का हृदय से स्वागत किया एवं गुणी-अभिनन्दन समारोह की जानकारी देते हुए कहा कि जिस संघ-समाज में गुणियों का सम्मान होता है वही संघ-समाज आगे बढ़ता है। जो दान-शील-तप आदि में आगे बढते हैं, वे ही गुणीजन है। जिस संघ में ऐसे गुणीजन हैं, वही धर्म संघ कहलाता है। रत्नसंघ की परम्परा है कि संघ-सेवियों एवं गुणीजनों का चयन कर उनको सम्मानित किया जाता है। जिन गुणीजनों का चयन किया गया है, आज हम उनका सम्मान करेंगे। मैं आज सम्मानित होने वाले सभी अभिनन्दनीय महानुभावों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि इसी प्रकार आपकी सेवाएँ भविष्य में संघ व समाज को प्राप्त होती रहें। आज इस समारोह के मुख्य अतिथि न्यायाधिपति श्री मुनीश्वरनाथ जी भंडारी है, जिन्होंने वर्ष 2015 में सबसे ज्यादा केस निपटाये हैं। इनमें कई विशिष्ट गुण हैं। आज के हमारे विशिष्ट अतिथि श्री नरपतमल जी लोढा संघ समर्पित हैं,लोढा परिवार पीढियों से रत्नसंघ से जुडा हुआ है। आदरणीय लोढा साहब अपने कार्य के प्रति सदैव सजग रहते हैं। दोनों अतिथियों का पुरुषार्थ प्रशंसनीय है।

सम्मान समारोह में निम्नानुसार सम्मान प्रदान किए गए-

1. **संघ रत्न सम्मान-** संघ-सेवी, वरिष्ठ सुश्रावक **श्री सरदारसिंह जी कर्णावट-मुम्बई** का संघ के उन्नयन एवं विकास हेतु, संघ एवं संघ की संस्थाओं की वित्तीय व्यवस्था को सुदृढ करने एवं सफलतापूर्वक संचालित करने हेतु उल्लेखनीय सेवा प्रदान करने के लिए माल्यार्पण तथा शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया गया एवं मुख्य अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।
2. **आचार्य हस्ती स्मृति-सम्मान-** सुश्राविका **डॉ. हेमलता जी जैन-जोधपुर** को जैन धर्म दर्शन के प्रचार-प्रसार एवं साहित्य सृजन के क्षेत्र में "लोकप्रकाश : एक समीक्षात्मक अध्ययन" पुस्तक के लेखन हेतु माला एवं चुन्दड़ी द्वारा बहुमान किया गया एवं 51 हजार की राशि के साथ प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

3. **युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा सम्मान-** प्रतिभासम्पन्न **सुश्री प्रीति रमेशचन्द जी जैन (लहसोडा)-सवाईमाधोपुर** को भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण करनेके लिए माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। इनका सम्मान पोरवाल क्षेत्र क्षेत्रीय प्रधान श्री कुशल जी गोटेवाला ने स्वीकार किया।

4. **विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान-** वरिष्ठ स्वाध्यायी, **सुश्रावक श्री मदनलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर** का सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ मुख्य अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

5. **विशिष्ट महिला स्वाध्यायी सम्मान-** सरलमना, श्राविकारत्न **श्रीमती सुशीला जी जैन-नदबई** का सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ मुख्य अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

06. **विशिष्ट युवा स्वाध्यायी सम्मान-** संघ समर्पित, युवारत्न **श्री कमलेश जी मेहता-जोधपुर** को सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ मुख्य अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

गुणी अभिनन्दन के अन्तर्गत अनन्य गुरुभक्त, संघनिष्ठ, सुश्रावक **श्री हरीश जी कवाड़-चेन्नई** का संघ-सेवा में विशिष्ट सेवाओं के लिए माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्मठ कार्यकर्ता सुश्रावक **श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर** का संघ-सेवा में विशिष्ट सेवाओं के लिए माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। संघ समर्पित तपस्वीरत्ना **श्रीमती पानाबाई जी रूणवाल-बीजापुर** का उत्कृष्ट तपाराधना के लिए द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। इनका सम्मान इनके सुपुत्र श्री सतीश जी रूणवाल ने ग्रहण किया। श्रद्धानिष्ठ, सुश्रावक **श्री शीतलप्रसाद जी जैन-हिण्डौन सिटी एवं हिण्डौन संघ** का चातुर्मास सेवा में उल्लेखनीय योगदान हेतु माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। चातुर्मास सेवा हेतु **दिल्ली संघ एवं श्री अशोक जी सुराणा-दिल्ली** को भी चयनित

किया गया था, परन्तु कोई उपस्थित नहीं हो सका। धर्मनिष्ठ, सुश्रावक **श्री हस्तीमल जी खटोड़-माखूपुरा-नसीराबाद** का विहार सेवा में विशिष्ट योगदान हेतु माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ संयोजक-संरक्षक मण्डल द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। समाजसेवी **डॉ. राम गोयल-जोधपुर** संत-सतीवृन्द के श्रमणोचित औषधोपचार के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। जब भी इनको सूचना प्राप्त होती है वे शीघ्र पहुँच जाते है। गोयल साहब का माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ संयोजक-संरक्षक मण्डल द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। समाजसेवी सुश्रावक **डॉ. एम.एल.धारीवाल-जोधपुर** का संत-सतीवृन्द के श्रमणोचित औषधोपचार के लिए माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ संयोजक-संरक्षक मण्डल द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। **दूदू संघ** को दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ संयोजक-संरक्षक मण्डल द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। **अजमेर संघ** को अक्षय तृतीया महोत्सव तथा आचार्य पद रजत साधना वर्ष सम्पूर्ति दिवस कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ संयोजक-संरक्षक मण्डल द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, वरिष्ठ सुश्रावक **श्री सौभागमल जी जैन-अलीगढ रामपुरा** का संघ-सेवा में विशिष्ट सेवाओं के लिए माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा एक लाख की राशि का चैक एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा स्मृति युवा-शिक्षा-प्रतिभा-सम्मान प्रतिभाशाली **सुश्री नेहा टीकमचन्द जी जैन-कुश्तला** का आर.ए.एस. एलाइड की परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा बहुमान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। सम्मान-समारोह में लोढा परिवार से न्यायमूर्ति श्री लोढा साहब की सुपुत्री श्रीमती उमाजी सूरजराजजी मेहता पधारे।

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान- सम्मान समारोह के अन्तर्गत इस वर्ष अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर के सहयोग से डॉ. बिमलाजी भण्डारी की पावन स्मृति में संचालित 'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान' के अन्तर्गत उत्कृष्ट शोध कार्य करने के लिए निम्नांकित 4 शोधकर्त्ताओं को चयनित कर सम्मानित किया गया- **1. डॉ. सुन्दरलाल जी जैन-जोधपुर, 2. डॉ. सुलेखा जी मोगरा-उदयपुर, 3. डॉ. सीमा जी जैन-**

उदयपुर, 4. डॉ. प्रेमलता जी जैन-दिल्ली। कार्यक्रम में डॉ. सुन्दरलाल जी जैन को जैन धर्म-दर्शन पर शोध कार्य के लिए सम्मानित करते हुए माल्यार्पण एवं शॉल के साथ बहुमान किया गया। भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से डॉ. एल. एम. भण्डारी-जयपुर द्वारा 11,000/- की राशि का चैक एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

सम्मान कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित तथा श्री सम्पतराज जी चौधरी-दिल्ली द्वारा सम्पादित पुस्तक **"वीर प्रभु की अन्तिम वाणी"** पुस्तक का मंचासीन अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। संघाध्यक्ष महोदय ने श्री सम्पतराज जी चौधरी का उनके द्वारा किए जा रहे कार्य हेतु आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर आचार्य हस्ती स्मृति-सम्मान से सम्मानित डॉ. हेमलता जी जैन ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए आचार्य श्री हस्ती एवं आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के स्वाध्याय संदेश को आगे बढाने पर जोर देते हुए लोकप्रकाश पुस्तक की जानकारी प्रदान कर आभार व्यक्त किया। गुणी अभिनन्दन में सम्मानित श्री प्रकाश जी सालेचा ने अपने उद्गार में माता-पिता को धन्यवाद देते हुए आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्य हीरा, उपाध्याय मान के उपकारों को याद किया। उन्होंने संयोजक-संरक्षक मण्डल श्री मोफतराज जी मुणोत, पूर्व महामंत्री श्री मोहनलाल जी कटारिया-नागपुर सहित सभी पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने संघ के प्रति पूर्ण समर्पित रहने की प्रतिबद्धता दर्शायी।

कार्यक्रम में संयोजक-संरक्षक मण्डल **श्री मोफतराज जी मुणोत** ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जिस संघ में गुणीजनों का सम्मान होता है, वह जागृत संघ कहलाता है। आज निन्दा करना आसान है, प्रतिदिन अखबार में नकारात्मक खबर छपती है, अच्छी खबरें बहुत कम देखने को मिलती हैं। हम सभी प्रमोद भाव से रहें, गुणीजनों का आदर करें, किसी की भी निन्दा नहीं करें। सामायिक तथा प्रतिक्रमण के पाठों में इस हेतु शब्द आते हैं- निन्दामि, गरिहामि। हम प्रतिक्रमण करें, परन्तु शब्दों के अर्थों को भी समझें।

समारोह के विशिष्ट अतिथि **माननीय श्री नरपतमल जी लोढा** ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए बताया हमें गुणीजनों से प्रेरणा लेनी चाहिए। हमारे साथ आज मुख्य अतिथि के रूप में न्यायाधिपति श्री मुनीश्वरनाथ जी भंडारी हैं जो कई बार कोर्ट समयावधि के पश्चात् भी केस सुलझाते हैं। युवा बन्धुओं को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के मैंने दर्शन किए, वे हर गृहस्थ को सामायिक करने की प्रेरणा करते थे। मैं स्वयं हस्ती चालीसा पढता हूँ। हम सभी को गुरु भगवन्तों के आशीर्वचनों का मान रखकर उनके द्वारा प्रदत्त प्रेरणाओं को आचरण में लाना चाहिए। जो भी आज यहां

सम्मानित हुए हैं, सभी कुछ न कुछ विशेषता लिए हुए हैं, आप सभी उत्तरोत्तर और आगे बढते रहें, इसी आशा के साथ संघ का आभार।

मुख्य अतिथि न्यायाधिपति माननीय श्री मुनीश्वरनाथ जी भंडारी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आज का दिन जिन-जिन महानुभावों ने विशेष कार्य किए हैं, उन गुणीजनों को सम्मानित करने का दिन है। कई ऐसे विषय हैं, जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए। क्षमा मांगने की परम्परा हम हर साल करते हैं। कई परम्पराओं से दूर होते जा रहे हैं, जैसे- रात्रि भोजन त्याग। चिन्तन करें तो सुधार किया जा सकता है। काफी चीजें तो वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित हैं। जमीकन्द नहीं खाना, इसका विश्लेषण कर कारण बताया जा सकता है। धर्म की हर बात को गहनता से अपनाना चाहिए। पानी का उपयोग आवश्यकतानुसार ही किया जाना चाहिए। आज भीलवाडा जैसे शहर में 4-5 दिनों में पानी की सप्लाई हो रही है, आज इतनी समस्या है तो कल क्या होगा, इसका चिन्तन करना चाहिए। मुझे यहां आमंत्रित किया, एतदर्थ आप सभी का आभार एवं धन्यवाद।

मुख्यातिथि एवं विशिष्ट अतिथि को संघ की ओर से स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

राष्ट्रीय महामंत्री **श्री पूरणराज जी अबानी** ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि सहित सम्मान समारोह में पधारने वाले सभी महानुभावों का, गुणीजनों का हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा गुणी अभिनन्दन समारोह के सुन्दर आयोजन के लिए निमाज श्रीसंघ को धन्यवाद ज्ञापित किया। संघ के राष्ट्रीय मंत्री श्री राजेन्द्र जी जैन 'राजा'-जयपुर को कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा सानन्द सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न बहू बालिका मण्डल, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा रविवार 18 सितम्बर, 2016 को मध्याह्न 01.30 बजे निमाज में संघाध्यक्ष श्री पी.शिखरमल जी सुराणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। आमसभा में संघ-सदस्यों द्वारा सुझाव प्राप्त हुए। आमसभा में अग्रांकित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए- 1. संघ के कार्यक्रम सादगीपूर्ण होने चाहिए, कम

से कम जीव विराधना हो, इसका खयाल रखा जाना चाहिए। सामान्य प्रसंगों पर आयोजित भोजन में एक मिठाई रखी जाए तथा विशेष प्रसंगों पर दो मिठाई रखी जा सकती है। 2. जहां भी रत्नसंघ के 20 परिवार हैं अथवा संघ की शाखा है वहां आवश्यकतानुसार सामायिक-स्वाध्याय भवन निर्माण हेतु समिति गठित की जाए। 3. रत्नसंघ विजन को संशोधन के साथ पारित किया गया। संघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री बसंत जी जैन-मुम्बई ने "**संघ-सेवा सोपान**" योजना की जानकारी देते हुए सभी संघ-सदस्यों को इससे जुडने की प्रेरणा की। संस्कार केन्द्र के संयोजक श्री हर्षवर्द्धन जी ललवाणी ने संस्कार केन्द्रों की जानकारी प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रदर्शित की। *-पूरणराज अबानी, महामंत्री*

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन 16 सितम्बर, 2016 को सुशीला भवन, निमाज (जिला-पाली) में सोत्साह सम्पन्न हुआ।

वार्षिक अधिवेशन कार्यक्रम में संघ संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत, संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई, संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी-जोधपुर, श्राविका मण्डल परामर्शदाता श्रीमती मधुजी सुराना-चेन्नई, अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली, निमाज सकल जैन संघ के अध्यक्ष श्री सूरजमलजी भण्डारी, मंत्री श्री निर्मलकुमारजी बम्ब तथा श्री सुभाषचंदजी धोका व श्राविका मण्डल निमाज शाखाध्यक्ष श्रीमती बीनाजी जैन ने मंच को सुशोभित किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्राविका मण्डल की महासचिव एवं तपस्विनी श्रीमती बीना जी मेहता के मंगलाचरण व निमाज बालिका मण्डल के स्वागत गीत से हुआ। भरतपुर श्राविका मण्डल ने 'नारी तेरी महिमा भारी, आओ आगे आओ, जागो' भजन प्रस्तुत किया। श्राविका मण्डल कार्याध्यक्ष श्रीमती मीनाजी गोलेच्छा-जयपुर ने श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि पूर्व में 59 शाखाएं व सम्पर्क सूत्र थे, जो अध्यक्ष, महासचिव सहित पदाधिकारियों के प्रवास कार्यक्रम करने तथा सम्पर्क करने पर 74 शाखाएं एवं सम्पर्क सूत्र हो गए हैं। पल्लीवाल क्षेत्र में धर्म के प्रति श्राविकाओं में चातुर्मास के पश्चात् जागृति बनी रहे इसी उद्देश्य से हिण्डौनशहर में अध्यात्म चेतना आयाम क्षेत्रीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 200 श्राविकाओं व बालिकाओं ने

भाग लिया। आचार्य पदारोहण रजत वर्ष के उपलक्ष्य में पंच-दिवसीय आस्था-अनुशास्ता शिविर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा राजस्थान में प्रथम बार 21 से 25 मई, 2016 तक आराधना भवन, पुष्कर रोड़, अजमेर में आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न 25 क्षेत्रों से 189 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

श्राविका मण्डल कार्याध्यक्ष श्रीमती प्रमिलाजी दुगड़-चेन्नई ने 'बनें आगम अध्येता' योजना का परिचय देते हुए कहा कि इसके अन्तर्गत दशवैकालिकसूत्र, उपासकदशांगसूत्र, अन्तगडदसासूत्र, नन्दीसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र पर परीक्षा आयोजित की गई है। आगामी आगम के अन्तर्गत आवश्यकसूत्र को लिया गया है। जो देश के विभिन्न ग्राम-नगरों के 180 केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी।

श्राविका मण्डल सचिव श्रीमती अरुणाजी कर्नावट-जयपुर ने श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित गतिविधियों की जानकारी देने के साथ प्रचार-प्रसार में सहयोग प्रदान करने वाली श्राविकाओं व सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

अहमदाबाद श्राविका मण्डल की सदस्यों द्वारा व्यसन मुक्ति अभियान के अन्तर्गत कव्वाली की सुन्दर प्रस्तुति दी गई। निमाज श्राविका मण्डल शाखाध्यक्ष द्वारा अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा का माल्यार्पण से स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। निमाज श्राविका मण्डल की श्रीमती अंजनाजी जैन, श्रीमती विमलाजी भण्डारी, श्रीमती प्रकाशदेवीजी फूलफगर द्वारा श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता का माल्यार्पण से स्वागत व अभिनन्दन किया गया। जोधपुर श्राविका मण्डल ने मॉडर्न सास-बहू की नाटिका प्रस्तुत की। भरतपुर श्राविका मण्डल ने 'संयम सुखकारी' विषय पर नाटिका की प्रस्तुति दी। श्रीमती अनिताजी लुंकड़ ने आगम की परीक्षाओं में भाग लेने हेतु प्रेरणा की।

श्रीमती प्रमिलाजी दुगड़-चेन्नई ने सब शाखाओं में जागृति लाने हेतु कार्यशालाओं के आयोजन हेतु प्रेरणा की तथा प्रत्येक घर में 365 दिन धोवन पानी का उपयोग करने एवं निर्व्यसनी सामायिक घर-घर करने हेतु विशेष प्रेरणा की। हैदराबाद श्राविका मण्डल एवं वीर परिवार की श्रीमती पदमाजी गुगलिया ने पारिवारिक सम्मेलन के आयोजन तथा शाखा की विभिन्न गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। जलगांव श्राविका मण्डल शाखा द्वारा रात्रि-भोजन त्याग पर विशेष जोर देते हुए 'आत्मा का दवाखाना' नाटिका प्रस्तुत की गई।

कार्यक्रम संचालिका ने संघ संरक्षक श्री मोफतराजजी मुणोत के कार्यक्रम में पधारने पर स्वागत-गीत प्रस्तुत किया। निमाज संघ के संघप्रमुख श्री तेजराजजी भण्डारी ने श्री मोफतराजजी मुणोत का माल्यार्पण एवं शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया।

अजमेर श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया ने अजमेर में सम्पन्न गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने अपने उद्बोधन में कहा- गृहस्थ जीवन का आधार आप हैं, संस्कार निर्मात्री भी आप हैं। आप जितने-जितने संस्कार देंगी समाज उतना ऊपर बढ़ेगा। आप स्वयं को अबला न समझें। नारी शक्ति का परिचय दें। आप परिवार व समाज में जो संस्कार देंगी उससे बालकों का निर्माण होगा। जिस आयु में संस्कार देने की जरूरत है उस समय दें। पूर्णिमाजी, बीनाजी श्राविका मण्डल का अच्छा संचालन कर रही हैं, आप आगे बढ़ें।

निमाज के संघ प्रमुख श्री तेजराजजी भण्डारी ने अपने उद्बोधन में बताया कि आचार्य भगवन्त की पुण्य स्थली में आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन। 25 साल के पश्चात् आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का चातुर्मास प्राप्त हुआ है। श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता ने महिला मण्डल का विस्तार किया, जो प्रशंसनीय है। नाटिका द्वारा जो संदेश दिया गया वह भी प्रशंसनीय है, माँ का बच्चों को पूर्ण समय व पिता का लाड प्यार नहीं मिलता तो बच्चे गलत रास्ते पर चले जाते हैं। अतः बच्चों को धर्म से जोड़ें। आप सभी निमाज पधारे, उसके लिए आप सभी का धन्यवाद। निमाज में श्री सुभाषजी धोका, श्री निर्मलजी बम्ब, श्री पदमचन्दजी बम्ब सभी जुड़े हैं, सभी ने कार्य भार संभाला है, मैं उनका भी आभार व्यक्त करता हूँ।

राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा ने अपने उद्बोधन में कहा- मुझे बहुत प्रसन्नता है कि मैं आप सबके दर्शन कर सका। सर्वप्रथम मैं बहुत-बहुत बधाई देना चाहूँगा श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता को, जिन्होंने आज 34 उपवास के पच्चक्खाण किये और 36 की भावना है। इनके पतिदेव श्री भागचन्दजी मेहता जो सेवा करते हैं। दोनों को धन्यवाद देता हूँ। जब मंच पर बैठा तो उपस्थिति अच्छी थी, इतनी संख्या देखकर अच्छा लगा। सबको धोवन पानी दिया गया। श्रावक संघ, युवक परिषद् को भी कहना चाहूँगा कि वे भी प्रेरणा लें, वे भी धोवन पानी का प्रयोग करें। श्राविका मण्डल ने शिविर लगाए, शाखाएं खोली, बधाई देता हूँ। जलगांव को भी विशेष बधाई। स्वाध्यायी सेवा में श्राविकाएं बढ़ायेंगे तो महिला मण्डल की शोभा बढ़ेगी। आपने 24 तीर्थंकर आराधना का कार्यक्रम किया, कव्वाली अच्छी थी, बधाई। जलगांव की नाटिका से धर्म जागृति आई है। जलगांव के बाहर भी विजयाजी मलारा की आवश्यकता है। आपने जो भी जलगांव में किया उसे भारत में सभी स्थानों पर कीजिये। अलकाजी दुधेड़िया को धन्यवाद। संघ में माला/शॉल बन्द हो जाना चाहिये। मैं सबसे अनुरोध करता हूँ। संघ व संघ की

सहयोगी संस्थाओं में माला-शॉल की प्रथा को बंद करें। समय व्यर्थ जाता है।

जलगांव द्वारा जैन धर्म का मौलिक इतिहास की प्रतियोगिता चल रही है। मेरी पूरी अनुमोदना है। मैं संघ की ओर से अनुमोदना करता हूँ। आप जो भी अच्छा काम करें दिल खोल कर करें। आप पूरे हिन्दुस्तान में व्यसन-मुक्ति कार्यक्रम का डंका बजा दें। श्राविका मण्डल-युवक परिषद् दोनों देश-विदेश में निर्व्यसनी सामायिक और व्यसन मुक्ति का प्रचार-प्रसार करें।

चेन्नई शाखा द्वारा 'जैन धर्म के मौलिक इतिहास को जानें' सम्बन्धी प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी चलाया गया, जिसमें सही प्रत्युत्तर प्राप्त होने पर पारितोषिक का वितरण किया गया। श्राविका मण्डल चेन्नई शाखा की रिपोर्ट का वैजयन्तीजी मेहता ने पठन किया।

अन्त में श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा ने कार्यक्रम में पधारे सभी मंचासीन महानुभावों, अनेक ग्राम-नगरों से पधारी श्राविका मण्डल की सदस्याओं एवं निमाज सकल संघ का सुन्दर व्यवस्था के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित 'बनें आगम अध्येता' के अन्तर्गत सभी श्रावक-श्राविकाओं को भाग लेकर ज्ञानार्जन करने हेतु प्रेरणा की गई।

कार्यक्रम का सफल संचालन मदनगंज की शाखाध्यक्ष श्रीमती मोनिकाजी डांगी एवं शाखा सचिव श्रीमती विजेताजी सोनी ने किया। कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु अध्यक्ष महोदया ने हार्दिक आभार व्यक्त किया।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर के बढ़ते चरण

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के जोधपुर शहर में 41 रविवारीय संस्कार शिविर तथा जोधपुर से बाहर आगोलाई, गोटन, निमाज में कुल मिलाकर 950 छात्र/छात्राएँ शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

कुरुक्कपेट (चेन्नई) शिविर का संचालन करना श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। अतः इसका प्रबंध उक्त संघ को हस्तान्तरित कर दिया गया है।

जोधपुर शहर के 37 संस्कार केन्द्रों व जोधपुर से बाहर के पल्लीवाल, पोरवाल, मारवाड़, मेवाड़ आदि क्षेत्रों में 37 संस्कार केन्द्रों में 1850 छात्र/छात्राएँ शिक्षण प्राप्त कर रहे है।

18 सितम्बर, 2016 को निमाज में आयोजित संघ के वार्षिक सम्मेलन में संस्कार

केन्द्र कार्यालय, जोधपुर की गतिविधियों, क्रियाकलापों, संस्कार-केन्द्र व संस्कार शिविरों के छात्र/छात्राओं की संख्या, उनकी अध्ययन प्रगति और भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा आदि को प्रोजेक्टर द्वारा विस्तार से प्रदर्शित किया गया, जिसे देखकर सभी ने संतोष व्यक्त किया।

-राजेश भण्डारी, सचिव

निःशुल्क शल्य चिकित्सा का आयोजन

श्री वर्द्धमान चिकित्सालय स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा में विगत 40 वर्षों से निरन्तर वृद्धि की ओर गतिमान है। उदारमना, सेवाभावी श्रावकरत्न श्री पदमचन्दजी मेहता-जोधपुर ने अपनी धर्मसहायिका स्व. श्रीमती रतनदेवीजी मेहता की स्मृति में अस्पताल के लिए नये भवन की आवश्यकता पूर्ति हेतु सहयोग प्रदान किया है।

श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी जोधपुर द्वारा रविवार, 16 अक्टूबर, 2016 को निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित किया जायेगा। शिविर में अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त सर्जन डॉ. राम गोयल (कमला नगर अस्पताल) द्वारा हर्निया, मस्सा, भगन्दर, एपेडिंक्स, फिस्टुला आदि के ऑपरेशन किये जायेंगे। मरीजों को अस्पताल में तीन दिवस तक रखा जायेगा तथा उन्हें पाँच दिवसीय दवाई भी उपलब्ध कराई जायेगी। मरीजों की रक्तजाँच एवं डिजिटल एक्स-रे लागत दर पर किए जायेंगे।

इसी दिन परामर्श जाँच शिविर में अहमदाबाद हॉस्पिटल के चिकित्सक डॉ. सौरभ गोयल (जोइन्ट रिप्लेसमेन्ट सर्जन-अहमदाबाद) डॉ. हितेश शाह (हृदय रोग विशेषज्ञ) डॉ. प्रकाश चौधरी, (यूरोलोजिस्ट) द्वारा मरीजों की जाँच कर परामर्श दिया जायेगा। सम्पर्क सूत्र-2627283/94139-59881

-पूरणराज अबानी, अध्यक्ष

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के पूर्व छात्रों का मिलन

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान (आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान), जयपुर के पूर्व छात्रों ने 11 सितम्बर, 2016 को पूज्य उपाध्यायप्रवर एवं संतप्रवरों के दर्शन, वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. का प्रेरक उद्बोधन प्राप्त हुआ। यहाँ से वार्षिक मिटिंग के पश्चात् निमाज के लिए प्रस्थान किया, जहाँ पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. से पारिवारिक संस्कारों के सम्बन्ध में प्रेरणा प्राप्त की। पूर्व छात्र परिषद् के अध्यक्ष श्री पारसमल जैन, मुम्बई के नेतृत्व में श्री श्रीपाल देशलहरा-हैदराबाद, श्री गौतमचन्द जैन 'डीएसओ'-जयपुर, डॉ. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, श्री जम्बूकुमार जैन-जयपुर आदि 18 सदस्यों ने साधारण सभा में उपयोगी निर्णय

किए।

जैनविद्या संस्थान, जयपुर द्वार प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

जैनविद्या संस्थान, जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति महावीर पुरस्कार (2016) राशि 51001/-, स्वयंभू पुरस्कार (2016) राशि 31001/-, ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाडिया पुरस्कार (2016) राशि 5001/- के पुरस्कार हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। पुरस्कारों हेतु पुस्तकें 31 अक्टूबर, 2016 तक आमन्त्रित हैं। पुरस्कारों की नियमावली, आवेदनपत्र व विस्तृत जानकारी के लिए जयपुर कार्यालय से सम्पर्क करें। सम्पर्क सूत्रः- डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302004(राज.), फोनः 0141-2385247

बधाई

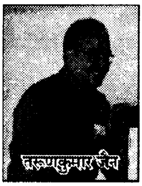
तरूणकुमार जैन

शैफाली कोठारी

कविता भण्डारी

आदित्य कटारिया

अर्पना जैन

अजमेर- वरिष्ठ पत्रकार श्री तरूणकुमार जैन को विज्ञान पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अजमेर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में प्रशस्ति-पत्र भेंट कर सम्मानित किया। श्री तरूण जी जैन पिछले डेढ दशक से एक विज्ञान समाचार-पत्र 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' का सम्पादन कर रहे हैं।

रतलाम- सुश्री शैफाली कोठारी सुपुत्री श्रीमती रीनाजी-श्री संजयजी कोठारी ने सी.ए. की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

झालावाड़- सुश्री कविता भण्डारी सुपुत्री श्री महेन्द्रजी भण्डारी ने सी.ए. की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

कोलकाता- श्री आदित्य जी कटारिया सुपुत्र श्रीमती संध्याजी-श्री संजयजी एवं सुपौत्र श्री रामेश्वरलालजी-लीलाजी कटारिया ने सी.एस. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की है।

जोधपुर- सुश्री अर्पना जैन सुपुत्री श्रीमती सुधा-सिंहराजजी जैन एवं सुपौत्री श्रीमती मुन्नी देवीजी-श्री सम्पतराजजी ललवानी (मसूदा, जिला-अजमेर निवासी) ने सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप श्री जीतमलजी छाजेड़, जेठाना(अजमेर) की दौहित्री हैं।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती ज्ञानकंवरजी सुराणा धर्मपत्नी श्री उमरांवचन्दजी

सुराणा का 15 सितम्बर, 2016 को परलोकगमन हो गया। आपने अठाई, दस, पन्द्रह की तपस्या की। आप नियमित पाँच सामायिक, प्रतिक्रमण, रात्रिभोजन का त्याग एवं शीलव्रत का पालन करती थीं तथा दो-तीन विगय का त्याग करती थीं। संस्कारी जीवन जीते हुए आपने परिवार को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था, जिसके फलस्वरूप सुराणा परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा। आपके सुपुत्र शेखरजी सुराणा, युवक परिषद्-जोधपुर के सचिव पद पर रहे।

बालोतरा- सुश्राविका श्रीमती चुकीदेवी धर्मपत्नी श्री छोगालालजी का 15 अगस्त 2016

को अहमदाबाद में स्वर्गगमन हो गया। आपका पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से युक्त है। श्री छोगालालजी श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-अहमदाबाद में अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं। आपका धर्मनिष्ठ परिवार संघ हित में सदैव अग्रणी रहता है एवं बालोतरा संघ को भी समय-समय पर सेवा प्रदान करता रहता है। *-सोहनलाल श्रीश्रीमाल*

चेन्नई- तपसाधिका श्रीमती लाडकँवरजी भण्डारी धर्मसहायिका स्व. श्री मोतीचन्दजी

भण्डारी (पुत्रवधू स्व. श्री माँगीचन्दजी भण्डारी) का 87 वर्ष की वय में 14 सितम्बर, 2016 को देवलोकगमन हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय, व्रत-प्रत्याख्यान करने के साथ त्याग एवं तप में रमण करती थीं। आपके उपवास, तेले, अठाइयाँ और आयम्बिल की तपस्या चलती रहती थीं। आपने चेन्नई महिला मण्डल की तकरीबन चालीस वर्षों तक सेवा की। मण्डल के सदस्यों को गुरु-दर्शन के लिए ले जाना एवं धर्म से जोड़ना, इन कार्यों में उनकी विशेष रुचि रहती थी। सभी संत-सतियों के प्रति आपकी गहरी श्रद्धा-भक्ति थी। संयुक्त परिवार को साथ लेकर चलने का आपमें विशेष गुण था।

जलगांव- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती चम्पाबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री मोतीलाल

जी सांड का 98 वर्ष की आयु में 05 अगस्त, 2016 को चौविहार संथारे के साथ महाप्रयाण हो गया। 04 अगस्त को रात्रि में करीब 11.30 बजे चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान लिया जो 24 घण्टे तक चला। आप प्रतिदिन 6 से 8 सामायिक करती थीं एवं रात्रि तिविहार त्याग रखती थीं।

जोधपुर- शिक्षाविद् उदारमना श्रावकरत्न प्रो. कामेश्वरनाथजी मोदी सुपुत्र स्व. सुश्रावक

श्री पारसनाथजी मोदी का 76 वर्ष की वय में 13 सितम्बर, 2016 को देवलोकगमन हो गया। मिलनसार, मृदुभाषी, सकारात्मक सोच के धनी सुश्रावक का जीवन धर्म के प्रति समर्पित एवं उदात्त था। आप अपने पीछे संस्कारनिष्ठ श्री विवेकजी, डॉ. विकासजी एवं श्री विशालजी पुत्र-पौत्रादि परिवार छोड़कर गए हैं।

उनियारा (टोंक)- सुश्राविका श्रीमती प्रसन्नबाईजी धर्मपत्नी श्री रतनलालजी जैन

'सेवानिवृत्त अध्यापक' का 31 जुलाई, 2016 को देहावसान हो गया। आप धार्मिक क्रियाओं में व्यस्त रहती थीं। प्रतिदिन सामायिक करती थीं एवं संत-सतियों की सेवा में रुचि लेती थी। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं। *-रतनलाल जैन*

सिकन्द्राबाद- सुश्रावक श्री गोकुलचन्दजी भुरट सुपुत्र स्व. श्री बालचन्दजी भुरट 'कुचेरा

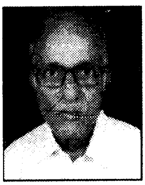

निवासी' का 71 वर्ष की उम्र में 30 जुलाई 2016 को परलोकगमन हो गया। आप कुचेरा चीखला संघ हैदराबाद के महामंत्री थे। आप धर्मध्यान, सामायिक एवं सप्ताह में दो-दो आयंबिल नियमित करते थे। आपने गत वर्ष मासक्षपण तप भी किया। *-डी.बी. भुरट*

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2016 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत **'पीने योग्य शक्तिवर्धक पानी कैसा हो?'** के प्रश्नों के उत्तर 32 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि-	नाम	
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्रीमती शैली अजयजी मेहता-जोधपुर (राज.)	(69.5/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्री विरेन्द्रजी कुम्भट-जोधपुर (राज.)	(69/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्रीमती विद्या अशोकजी संघवी-बदनावर (म.प्र.)	(68/70)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो श्री चंचलमल जी चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व फोन मय पूर्ण पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल सत्साहित्य की 20 वर्षीय सदस्यता हेतु प्रत्येक

785 श्री धनपतराज वी. भंसाली, विले पारले (ई), मुम्बई (महा.)

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15669 से 15722 तक 54 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री गौतमचन्दजी धोका (जैन) द्वारा श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, यादगिरी की ओर से सप्रेम भेंट।

7200/- श्रीमती कांताबाईजी, अजयकुमारजी, संजयकुमारजी भंडारी (जोधपुर वाले), अहमदाबाद, श्री अरूण कुमारजी सुपुत्र स्व. श्रीमती राजकँवरजी श्री दशरथराजजी भंडारी द्वारा निमाज चातुर्मास में 72 दिवसीय तपस्या का अर्घ्य अर्पित करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री सप्त कोचेटा बन्धु एवं परिवारजन, मदनगंज-किशनगढ़, पूजनीया दादीजी व स्व. श्रीमती कंचनदेवीजी धर्मपत्नी श्री बंशीलालजी कोचेटा की पुण्य स्मृति में भेंट।

5100/- श्री चम्पालालजी मकाणा, दौड़बालापुर, निमाज में पर्युषण पर्वाराधन सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में एवं श्रीमती ललिताबाईजी धर्मपत्नी श्री सुभाषचन्दजी धोका, मैसूर द्वारा मासखमण करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री विजयराजजी, आनन्द कुमारजी बाघमार (कुचेरा वाले), बैंगलोर, निमाज में पर्युषण पर्वाराधन सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री मदनलालजी श्रीमती मैनाबाईजी बोहरा, आवड़ी-चेन्नई, निमाज एवं जोधपुर में पर्युषण पर्वाराधन सम्पन्न होने एवं श्री मदनलालजी बोहरा द्वारा नवरंगी की आराधना के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री प्रवीणजी, नितिनजी, दीपकजी, प्रफुल्लजी रूणवाल परिवार, बीजापुर-माधवनगर, निमाज में पर्युषण पर्वाराधन सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री राजमलजी जैन, मुम्बई। अपने पौत्र कानव जैन के जन्मदिन के उपलक्ष में।

3100/- श्री सागरमलजी, महावीरजी, राजेशजी छाजेड़, चेन्नई, सपरिवार निमाज आने का शुभ अवसर प्राप्त होने की खुशी में।

3100/- श्री हुक्मीचन्दजी, संतोष कुमारजी, विपुल कुमारजी डोसी (चावण्डिया वाले), बैंगलोर, श्रीमती मदनकँवरजी एवं श्री हुक्मीचन्दजी डोसी द्वारा जन्मस्थली निमाज में चातुर्मास होने पर एवं पूर्व संकल्पानुसार मासखमण की तपस्या करने के उपलक्ष्य में।

3000/- श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शान्तिनगर-बेंगलोर की ओर से भेंट।

2500/- सौ. कलाबाईजी धर्मपत्नी नेमीचंदजी चौरडिया एवं नीलमचंदजी चौरडिया, जलगांव, अपनी पुत्रवधू सौ. मोना विनोदजी चौरडिया के आठ उपवास करने के उपलक्ष्य में।

2500/- श्री आयुष बोहरा, दिल्ली, अपने पड़दादाजी स्व. श्री बस्तीमलजी बोहरा की 25वीं एवं

पड़दादी स्व. श्रीमती बदनकंवर जी की 7वीं पुण्यस्मृति में।

2202/- श्री लाभचन्दजी एवं श्रीमती किरणजी कोठारी, जयपुर, सुपुत्री सौ. शालिनी धर्मपत्नी डॉ. शमिकजी बाफणा द्वारा क्वीनलैण्ड-अमेरिका में अठाई की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में तथा अपनी दौहित्री कुमारी शिवानीजी द्वारा क्वीनलैण्ड-अमेरिका में प्रथम अठाई की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2121/- श्री नेमकुमारजी, अभिषेकजी महनोत, नवसारी, कुमारी अदितिजी के 16 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2121/- श्री किस्तूरचन्दजी, संजयकुमारजी डोसी, ब्यावर, कुमारी ऐश्वर्याजी सुपौत्री श्री किस्तूरचन्दजी श्रीमती सुशीलाजी डोसी द्वारा आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में अठाई की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2101/- श्री लाभचन्दजी एवं श्रीमती किरणजी कोठारी, जयपुर, सुपुत्री सौ.श्राविकाजी धर्मपत्नी श्री अजयजी मुणोत एवं पुत्रवधू श्रीमती चन्द्राजी मुणोत, मुम्बई के 21 उपवास की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, वीरेन्द्र कुमारजी मेहता (दांतरी वाले), जयपुर, पूजनीय मातुश्री की पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री शीतल प्रसादजी ओसवाल, चाकसू-जयपुर, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री भागचन्दजी ओसवाल, चाकसू-जयपुर, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री त्रिलोकचन्दजी, जितेन्द्र कुमारजी जैन, गंगापुरसिटी, निमाज में महासतीजी के द्वारा मासखमण की तपस्या स्वास्थ्य समाधि के साथ होने पर सप्रेम भेंट।

2100/- श्री नवरतनमलजी, ललितकुमारजी, हेमंतकुमारजी, विमलकुमारजी, वंशराजजी बाफणा (पीपाड़ सिटी वाले), चेन्नई, द्वारा सप्रेम भेंट।

2100/- श्री कुशलचन्दजी खींवसरा, जयपुर अपने प्रपौत्र, श्री महेन्द्रजी के सुपौत्र एवं श्री मोहितजी खीवसरा के पुत्ररत्न प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम।

2100/- श्री मदनलालजी एवं श्रीमती शकुनदेवीजी बाघमार (कोसाणा वाले), जबलपुर, निमाज में पर्युषण पर्वाराधन सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती अनोपकंवरजी भण्डारी, चेन्नई, अपने धर्मसहायक (पति) श्री देवरूपचन्दजी भण्डारी (वीर भ्राता- साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.) के स्वर्गगमन पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री प्रकाशमल जी ओस्तवाल, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री सुनीलजी एवं पुत्रवधू श्रीमती खुशबूजी के अठाई की तपस्या पूर्ण होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री पारसमलजी बोहरा सुपुत्र श्री मगराजजी बोहरा, गाँव मंडली, जिला-बाड़मेर (राज.) जिनवाणी सहयोगार्थ।

2100/- श्री प्रकाशचन्दजी, शांतिलालजी, महावीरचन्दजी लोढ़ा-नाड़सर वाले, श्री प्रकाशचन्दजी लोढ़ा के 8 की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1500/- श्री पुखराजजी अजीतमलजी निकुंजजी कोठारी, बेंगलुरू। अपनी सुपुत्री सौ. मोना विनोदजी चौरडिया के आठ उपवास करने के उपलक्ष्य में।

1111/- श्री जगदीशजी, लड्डूलालजी, फूलचन्दजी, हनुमानजी, आनन्दजी जैन (चकेरी वाले), सवाईमाधोपुर, श्री रविन्द्रजी जैन की शिक्षा सेवा में राजपत्रित अधिकारी पद पर पदोन्नति होने के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री ओमप्रकाशजी सतीशजी कृष्णमोहनजी जैन, वर्धमाननगर, हिण्डौन सिटी, श्रीमती दुलारीदेवी धर्मपत्नी श्री बृजमोहनजी जैन का 01 मई, 2016 को 83 वर्ष की आयु में स्वर्गवास होने पर।

1101/- श्री विजयजी मेहता, जोधपुर, स्व. श्रीमती सिरेकंवरजी मेहता धर्मपत्नी श्री भभूतराजजी मेहता की द्वितीय पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती मिथिलेशदेवीजी धर्मपत्नी श्री नवलकिशोरजी जैन (अलीगढ़-रामपुरा वाले), नवसारी, 31 की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती विमलाजी श्री शरदजी सिंघवी, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्री माणकचन्दजी, विजय कुमारजी सांड, जलगाँव, सुश्राविका श्रीमती चंपाबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री मोतीलालजी सांड का 05 अगस्त 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री हेमंत कुमारजी, खींवराजजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले), बैंगलोर, श्री पारसमलजी की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री हीराचन्दजी डागा, जयपुर, पुत्रवधू श्रीमती दीपिकाजी धर्मपत्नी श्री नीरजजी डागा के अठाई की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री रतनलालजी जैन (सेवानिवृत्त अध्यापक), उनियारा-टोंक, सुश्राविका श्रीमती प्रसन्नबाईजी धर्मपत्नी श्री रतनलालजी जैन का 31 जुलाई 2016 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री बृजेन्द्र कुमारजी ओसवाल, चाकसू-जयपुर, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री विनोद कुमारजी जैन पल्लीवाल (बरगमा वाले), चाकसू-जयपुर, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, हीरालालजी ओसवाल, चाकसू-जयपुर, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सतीशचंदजी ओसवाल, चाकसू-जयपुर, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री विनोद कुमारजी जैन पल्लीवाल (बरगमा वाले), चाकसू-जयपुर, सौ.कां. अंजूजी संग चि. सुमितजी जैन कोटा का 07 जुलाई, 2016 को विवाह सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री सुरेशचन्दजी एवं धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमजी जैन, कजानीपुरा-भौजपुर में सरपंच पद पर अपनी सुपुत्री श्रीमती रिंकूजी धर्मपत्नी श्री रामेश्वर प्रसादजी जैन (पूर्व सरपंच) के निर्वाचित होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री विजय कुमारजी जैन, जयपुर, रक्षाजी जैन के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री निर्मल कुमारजी एवं श्रीमती ललितप्रभाजी डागा, बूंदी, निमाज में पुर्यषण पर्वाराधन सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री नरेन्द्रमोहनजी, जिनेन्द्रकुमारजी जैन (श्यामपुरा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, श्रीमती

चमेलीदेवीजी एवं श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन, निमाज में पर्युषण पर्वाराधन सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री रिखबचन्दजी, उदयराजजी धोका (निमाज वाले), मैसूर, हमारी जन्मभूमि निमाज को विक्रम सम्वत् 2073 का चातुर्मास प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री बाबूलालजी जैन (लहसोडा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, अपनी धर्मपत्नी एवं श्री कमलजी 'नवकार', राजेन्द्रजी (सी.ए.), अनिलजी जैन, की मातुश्री स्व. श्रीमती प्रेमदेवीजी जैन की प्रथम पुण्य तिथि पर पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री रामप्रसादजी, प्रदीपकुमारजी, अरविन्दकुमारजी, नरेन्द्रकुमारजी, देवेन्द्रकुमारजी (भडोला वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, स्व. श्रीमती जमनादेवीजी की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री मगनचन्दजी जैन, जयपुर (फाजिलाबाद वाले), अपनी पुत्रवधू श्रीमती शोभाजी जैन धर्मपत्नी श्री मुकेशकुमारजी जैन के अठाई तप के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री पारसमलजी महावीरचंदजी धोका, मैसूर, अपने सुपौत्र श्री गौतमचंदजी धोका के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री प्रकाशचंदजी मीठालालजी बाघमार, मैसूर। पर्युषण पर्व सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती कमलाबाईजी अजीतराजजी सिंघवी, पनरूटी, सहयोग हेतु।

1100/- श्री शांतिलालजी, कमलचंदजी चौधरी, चिंतादरीपेट, सहयोग हेतु।

1100/- श्रीमती लीला जी कटारिया धर्मपत्नी श्री रामेश्वरलालजी कटारिया, कोलकाता, अपने सुपौत्र श्री आदित्य सुपुत्र श्रीमती स्नेहा-संजयजी कटारिया के सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर।

1100/- श्री पारसचंदजी जैन, बगावदा वाले, सवाईमाधोपुर, अपने पुत्र श्री जिनेन्द्रजी जैन के नौ की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री प्रकाशचंदजी, चन्द्रेशजी, दीपकजी, धीरजजी भण्डारी, बारणी, हाल मुकाम चेन्नई, सहयोग हेतु।

1100/- श्री उमरावचंदजी, शेखरजी, अभिषेकजी सुराणा, जोधपुर, श्रीमती ज्ञानकंवर सुराणा धर्मपत्नी श्री उमरावमलजी सुराणा के 15 सितम्बर 2016 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री रामलक्ष्मण जी एवं श्रीमती उषाजी कुम्भट, जोधपुर, पिताश्री मगराजजी कुम्भट की 19 वीं एवं भ्राता श्री महावीरराजजी की 14 वीं पुण्यतिथि पर स्मरणांजलि स्वरूप।

1100/- श्रीमती रजनीबालाजी, श्री विवेकजी-कुसुमजी, डॉ. विकासजी-मोनाजी, श्री विशालजी-प्रीतिजी मोदी, जोधपुर, प्रो. कामेश्वरनाथजी मोदी का 13 सितम्बर, 2016 को स्वर्गगमन के प्रसंग पर भावांजलिस्वरूप।

1100/- श्रीमती चेनकंवरजी ललवानी, जोधपुर, अपनी पुत्रवधू डॉ. (श्रीमती) हेमलताजी धर्मपत्नी श्री विकासजी ललवानी को आचार्य हस्ती शोध सम्मान प्राप्त होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री विक्रमराज, श्रेणिकराज, अभयराजजी कटारिया, पीपाड़, सुश्री आस्थाजी कटारिया के 11 की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री विक्रमराज, श्रेणिकराज, अभयराजजी कटारिया, पीपाड़, सुश्री पूर्वाजी कटारिया के 34 उपवास (मासक्षपण) के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री विक्रमराज, श्रेणिकराज, अभयराजजी कटारिया, पीपाड़, चि. प्रीतजी कटारिया के 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री सोहनलालजी, सतीशकुमारजी, दिलीपकुमारजी कोठारी- इचलकरंजी, सुश्री आस्थाजी कटारिया के 11 की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री सोहनलालजी, सतीशकुमारजी, दिलीपकुमारजी कोठारी- इचलकरंजी, सुश्री पूर्वाजी कटारिया के 34 एवं चि. प्रीतजी कटारिया के 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती भंवरीदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री नथमलजी चौधरी-पीपाड़, अपने सुपौत्र श्री मणिन्द्रजी (सुपुत्र श्रीमती सुमित्रा-धनेन्द्रजी चौधरी) और पौत्रवधू श्रीमती अन्तिमाजी के अठाई तप के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री प्रकाशचन्दजी, प्रेमराजजी, सुरेशचन्दजी भण्डारी, पीपाड़ शहर, सौ. कां. कुलवधू श्रीमती नीतूजी भण्डारी के मासक्षपण तप की सम्पूर्ति पर।

1100/- श्री महावीरचन्दजी, गणपतराजजी, दिलीपजी, हर्षकुमारजी भण्डारी- पीपाड शहर, सुश्री शालिनीजी भण्डारी के 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री सुमतिचन्दजी, नमनकुमारजी, संयमकुमारजी मेहता-पीपाड़ शहर, श्री नमन मेहता के 9 की तपस्या एवं श्री सुमतिचन्दजी के परदेशी राजा तप की आराधना के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री धर्मचन्दजी, निर्मलकुमारजी कटारिया-पीपाड़ शहर, श्रीमती लीलाजी कटारिया (मैडम) के 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री पदमचन्दजी, मनोजकुमारजी कटारिया, पीपाड़-चेन्नई, सुश्री पूर्वा श्रेणिक जी कटारिया के मासक्षपण की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री सुभाषचन्दजी, अभिषेकजी कटारिया-पीपाड़ शहर, सुश्री पूर्वा जी कटारिया के मासक्षपण की तपस्या के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

112100/- श्रीमती सुमनजी डागा, जोधपुर, 'वीर प्रभु की अंतिम वाणी' के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

40000/- श्रीमती रूपदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री भागचन्दजी चौरड़िया, जयपुर, 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र' के पुनः मुद्रण हेतु।

25000/- श्री बसंतीलालजी रंगलालजी डांगी, जामनेर, 'हीरा प्रवचन पीयूष' के पुनः मुद्रण हेतु भेंट।

21000/- श्री ज्ञानचन्दजी बाघमार, श्रीकालाहस्ती-चित्तूर, साहित्य निधि पोषक हेतु सप्रेम भेंट।

5300/- श्री धनबुद्धसिंहजी मेहता, किशनगढ़।

5300/- श्री अनिल कुमारजी जामड़, किशनगढ़।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

11000/- श्री राजेन्द्रकुमारजी प्रनीतकुमारजी मकाणा, होसुर।

10200/- श्री विनोद चम्पालालजी कर्णावट, लासुर स्टेशन।

7000/- श्री महावीरचंदजी ज्ञानचंदजी डागा, जोधपुर।

5100/- श्री प्रेमचंदजी डोसी, जोधपुर।

5000/- श्री राजेन्द्रकुमारजी बोहरा, होसुर।

2750/- श्री टी. प्रकाशचंदजी छाजेड़, पोलुर।

2750/- श्री टी. मदनलालजी छाजेड़, पोलुर।
2750/- श्री टी. महावीरचंदजी छाजेड़, पोलुर।
2750/- श्री महावीरचंद जी रांका, पोलुर।
2500/- श्री रतनजी सुराणा, जोधपुर।
2500/- श्री पदमचंदजी गांधी, जोधपुर।
2100/- श्री हस्तीमलजी डोसी, मेडता सिटी।
2100/- श्री शांतिमलजी जवाहरमलजी मेहता,
2100/- श्री जबरचंदजी नवरतनमलजी कुणालजी दुगड़, होसुर।
1101/- श्री गोविंदसहाय जी जैन, सवाईमाधोपुर। अपनी सुपुत्री सुश्री सोनाली जैन के प्रथम बार पर्युषण में स्वाध्यायी सेवा देने के उपलक्ष में।
1100/- श्रीमती कमलाबाई अजीतराजजी सिंघवी, पल्लीपेट।
1100/- श्री मंगलचंद जी विनोदजी कोठारी, चेन्नई।
1100/- श्री कमलचंदजी जिनेश राजेन्द्रजी कोठारी, चेन्नई।
1100/- श्री निहालचंदजी विमलचंदजी राजेशजी कोठारी, अदम्बाकम।
1100/- श्री विमलचंदजी विनोदजी अशोकजी चौपड़ा, चेन्नई।
1100/- श्री प्रकाशचंद जी पवनजी मुथा, चेन्नई।
1100/- श्री किशनलालजी सुरेशकुमार जी सांखला, चेन्नई।
1000/- श्री सुरेन्द्रजी मेहता, जोधपुर, हाल मुकाम शिवाकाशी।

पर्युषण सहयोग-2016

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
15000	पल्लीपेट	15000	विजयवाड़ा	15000	कोलकाता
10000	कानपुर	8100	सैदापेठ	7501	आरकाट
7100	तिरूवन्नमेयुर	5100	चिन्तादरीपेठ	5100	मिर्साहिबपेठ
5100	मोगेपर	5100	श्रीकालाहस्ती	5100	तिरुपति
5100	आलन्दुर	5100	अम्बट्टूर	5100	गोटन
5100	जमशेदपुर	5100	बैतुल	5100	बड़नेरा
5000	सिवनी माल्वा	5000	गुडियातम	5000	कुडलूर
4200	बागली	4100	जोबनेर	4100	करही
3501	मण्डपिया	3100	हनुमानगढ़	3100	सतारा
3100	सवाई माधोपुर शहर	3100	छिंदवाड़ा	3100	बनारस
3100	आवडी	3100	पल्लावरम	3100	विरूगम्बाकम
3000	कुडलूर	2500	सुकलिया	2500	मण्डावर
2500	बुहारी	2500	चेटपेठ	2100	आ.मण्डल, स.मा.
2100	नारनोल	2100	जालोर	2100	जबलपुर
2100	देई	2100	बजरिया संस्थान	2100	बागली

2100	घोड़ासर	2100	कालाडीपेठ	2100	कोलाडम
2100	नगमबाकम	2100	पेरन्गाल्टूर	2000	कुडलुर
1711	बौंण	1500	गरोठ	1100	आगोलाई
1100	आकोदिया मण्डी	1100	सुमेरगंज मण्डी	1100	कोलाईडम
1100	उलन्दूरपेठ	1100	चित्तूर		

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

31000/-श्री कस्तूरचन्दजी, राकेशकुमारजी, हितेशकुमारजी, मुकेशकुमारजी, नरेशकुमारजी जैन, खेरली, जिला-अलवर (राज.), संघ सहायतार्थ।

5100/- श्री प्रकाशमलजी ओस्तवाल, जोधपुर, स्वधर्मी वात्सल्य।

5000/- श्री हिम्मतसिंहजी पुनवानचन्दजी भण्डारी, जोधपुर, स्वधर्मी वात्सल्य।

3000/- श्री काव्यजी मेहता, जोधपुर, स्वधर्मी वात्सल्य।

2100/- श्री शांतिचन्दजी जवाहरमलजी मेहता, जोधपुर, स्वधर्मी वात्सल्य।

2100/- श्री अखिलेशजी जैन, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

2000/- श्री गौतमजी चौपड़ा, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

2000/- श्री प्रवीणचन्दजी सिंघवी, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

1100/- श्रीमती चन्द्रकलाजी जैन, जोधपुर, स्व. श्री इन्द्रसिंहजी जैन का जन्माष्टमी तिथि पर जन्म जयंती एवं पुत्र श्री निलेशजी एवं सुपौत्री सौ. कां. मीमांसाजी के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री पारसमलजी, मगराजजी बोहरा, मण्डली, जिला-बाड़मेर (राज.), जीवदया हेतु।

1100/- श्री कैलाशजी छोटमलजी लोढ़ा, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्रीमती कमलाजी बुरड़, आदर्शनगर, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री नरेन्द्रजी जैन, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्री पन्नालालजी जैन, जोधपुर, जीवदया हेतु।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

15000/- श्री उगमचन्दजी मन्नुलालजी मुणोत, चेन्नई।

5000/- श्री संजयजी हरकचन्दजी बोरा, धुलिया।

1100/- श्री दिलखुशराजजी मेहता, मुम्बई।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

108000/- श्री मोहनलालजी, सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नेमलई (तमिलनाडु)

50000/- श्री हरीशजी कवाड़, पुन्नमल्लई (तमिलनाडु)

36000/- श्री इन्दरचन्दजी कोठारी, कोयम्बटूर (तमिलनाडु)

24000/- श्री उमरावमलजी, श्रीपालजी सुराना, चेन्नई (तमिलनाडु)

12000/- श्री सम्पतराज जी मुथा, जयपुर (राज.)

12000/- श्री महावीरजी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

आश्विन शुक्ला 10, मंगलवार	**11.10.2016**	आचार्य श्री भूधरजी म.सा. की पुण्यतिथि
आश्विन शुक्ला 14, शनिवार	**15.10.2016**	चतुर्दशी, पक्खी
आश्विन शुक्ला 15, रविवार	**16.10.2016**	आयंबिल ओली पूर्ण
कार्तिक कृष्णा 1, रविवार	**16.10.2016**	आचार्य हमीरमल जी म.सा. की 163 वीं पुण्यतिथि
कार्तिक कृष्णा 8, रविवार	**23.10.2016**	अष्टमी, आचार्य गुमानचन्द्र जी म.सा. की 215 वीं पुण्यतिथि
कार्तिक कृष्णा, 14 शनिवार	**29.10.2016**	चतुर्दशी
कार्तिक कृष्णा, 30 रविवार	**30.10.2016**	पक्खी, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक
कार्तिक शुक्ला 5, शनिवार	**05.11.2016**	ज्ञानपंचमी
कार्तिक शुक्ला 6, रविवार	**06.11.2016**	आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 54 वां दीक्षा-दिवस
कार्तिक शुक्ला 8, मंगलवार	**08.11.2016**	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 14, रविवार	**13.11.2016**	चतुर्दशी
कार्तिक शुक्ला 15, सोमवार	**14.11.2016**	पक्खी, चातुर्मास समापन, वीर लोंकाशाह जयन्ती
मार्गशीर्ष कृष्णा 8, सोमवार	**21.11.2016**	अष्टमी
मार्गशीर्ष कृष्णा 12, शनिवार	**26.11.2016**	आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. की 101 वीं पुण्यतिथि

युवक परिषद् का अधिवेशन सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का अधिवेशन जोधपुर में 25 सितम्बर को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा द्वारा संघ की वेबसाइट www.ratnasangh.com का लोकार्पण किया गया। 26 सितम्बर को युवकों ने निमाज में आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन-प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। विस्तृत रिपोर्ट आगामी अंक में प्रकाशित होगी।

जय गुरु हस्ती ||GURUDEV|| जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश

UDAY GROUP

UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL | LOGISTICS | MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:
G R SURANA & RAJESH SURANA
No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.
Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675
Website: www.udaygroup.net
Mail Id: industries@udaygroup.net

भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

Since 1986

(आपके स्वास्थ्य के साथ हमेशा)

राजस्थान व पड़ौसी राज्यों में लेजर, लैप्रोस्कोपी एवं लिथोट्रिप्सी

का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय सेन्टर

~ अस्पताल की विशेषताएं ~

दूरबीन पद्धति से पेट, अपेन्डिक्स, हर्निया, प्रोस्टेट, पाइल्स आदि की शल्य चिकित्सा की सुविधा।

शरीर में किसी भी स्थान पर होने वाली पथरी के ईलाज का सर्वश्रेष्ठ संस्थान।

स्त्री रोग, नॉर्मल, सिजेरियन व हाई रिस्क डिलेवरी का अग्रणीय संस्थान।

विशेषज्ञों की सेवायें

- मूत्र व पथरी रोग
- पेट, लीवर व आंत रोग
- जनरल व मोटापा निवारण सर्जरी
- स्त्री रोग
- जनरल फिजिशियन
- प्लास्टिक व कॉस्मेटिक सर्जरी
- बाल रोग एवं बाल शल्य चिकित्सा
- न्यूरो सर्जरी
- दन्त रोग
- नाक, कान व गला रोग
- चर्म रोग

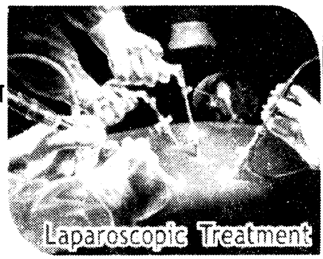

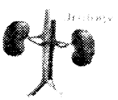

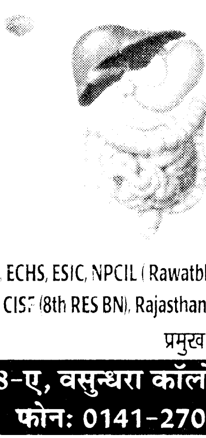

सुविधायें

- 30 वर्ष का अनुभव
- 4 लाख से अधिक रोगियों का सफल ईलाज
- 2 लाख से अधिक रोगियों का शल्य क्रिया द्वारा उपचार।
- 50,000 से अधिक पथरी रोगियों का उपचार।
- NABH & NABL से मान्यता प्राप्त।
- MLC (Medico Legal Case) की सुविधा
- 24x7 ICU, Emergency Facilty

CGHS, ECHS, ESIC, NPCIL (Rawatbhata), BSNL, BHEL, GAIL, IOCL, CWC, FCI, NFL, MNIT, CIPET, CSWRI, HCL, AAI, Coal India, CISF (8th RES BN), Rajasthan University, केन्द्र व राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी व पेंशनर्स एवं सभी प्रमुख TPA व इंश्योरेंस कंपनीयों से ईलाज हेतु अधिकृत

138-ए, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़, जयपुर - 302018

फोन: 0141-2703851-52 (मो.) 9660006228, 9829770055

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचिये

काउन्टर पलसेशन थैरेपी
(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को पर्याप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए – 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड़, जोधपुर (राज.)
Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525
सम्पर्क : धीरेन्द्र कुम्भट
93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है, जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

- आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA TMT RE-BARS

yes, the best

DRI Plant

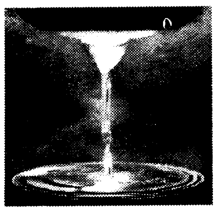

Electric Arc Furnace

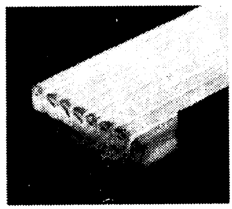

Billets

Rolling Mill

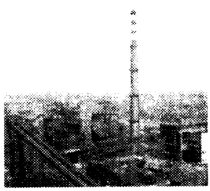

Captive Power Plant

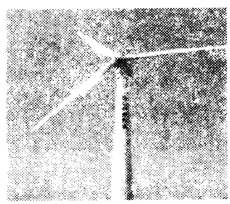

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam..........

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

- **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन	श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई।
	श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।
	गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई (Mob. +91 95430 68382)

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),
Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),
E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse,
Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,
Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
N.H. Studios ***Launches*** ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,
Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – **समस्त जैन समाज**

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अक्टूबर, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अक्टूबर, 2016★ आश्विन, 2073

waterfront
at KALPATARU
riverside
PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences

022 3064 3065

Promoters: **M/S Kalpataru + Sharyans**

Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. I **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 I Fax: + 91 22 3064 3131 I Email: sales@kalpataru.com I visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited.
The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन